04 - शंकराचार्य जी भारी मन से चले गए

05 - अशक्त प्रतिपक्ष, सशक्त लोकतंत्र की राह में बाधक

A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 31 जनवरी, 2026

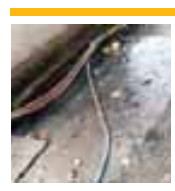

06 - नगर पंचायत सोहागपुर का दावा खोखला?

07 - गांधी: अथक, अटूट उज्ज्वल जिसका अक्स था

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 23, अंक 151, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

टैरिफ के दौर में आत्मनिर्भरता काफी नहीं, भारत को सुधार की जरूरत

आशुतोष वार्ष्णेय

भारत को बदलती हुई विश्व व्यवस्था का जवाब कैसे देना चाहिए? इस मुद्दे के लिए सबसे पहले एक बड़े सवाल का जवाब देना ज़रूरी है। आज की दुनिया में भू-राजनीति और अर्थव्यवस्था का आपस में क्या रिश्ता है?

वैश्वीकरण के हालिया दौर में, जिसकी शुरुआत 1980 के दशक में हुई और 1991 में सोवियत संघ के टूटने के बाद जिसे मजबूती मिली, आम तौर पर भू-राजनीति अर्थव्यवस्था के पीछे चलती थी और अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से बाजार आधारित थी। मध्य पूर्व को आंशिक अपवाद मानें (जो असल में अफगानिस्तान और पाकिस्तान तक फैला हुआ है), तो अंतरराष्ट्रीय संबंध ज्यादातर आर्थिक हितों के आसपास बने थे। दुनिया के मंच पर चीन का उभरना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। 2002 में, अमेरिका और पश्चिम के समर्थन से, चीन–जो राजनीतिक रूप से कम्युनिस्ट था, लेकिन आर्थिक रूप से अब कम्युनिस्ट नहीं रहा था–को विश्व व्यापार संगठन (WTO) में शामिल किया गया।

यह याद रखना ज़रूरी है कि 1972 में चीन-अमेरिका के बीच हुआ शुरुआती मेल-मिलाप पूरी तरह रणनीतिक था, आर्थिक नहीं। उस समय चीन पूरी तरह से आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ था और दुनिया को देने के लिए उसके पास कोई खास उत्पाद नहीं थे। उसका व्यापार/जीडीपी अनुपात सिर्फ 5 प्रतिशत था। न ही चीन विदेशी निवेश का स्वागत कर रहा था। शीत युद्ध के दौरान अमेरिका ने सोवियत संघ को कमज़ोर करने के लिए चीन को साझेदार के रूप में देखा था, लेकिन 1991 में सोवियत संघ के टूटने के बाद, अमेरिका ने चीन से दूरी नहीं बनाई, जबकि रणनीतिक लक्ष्य पूरा हो चुका था। इसके बजाय, जैसे-जैसे चीन ने अपने बाजार दुनिया के लिए खोले, अर्थव्यवस्था चीन-अमेरिका रिश्ते की बुनियाद बन गई। बड़े आर्थिक अवसरों ने चीन के अमेरिका और पश्चिम के साथ रिश्तों को आगे बढ़ाया. देश और कंपनियां तेजी से चीन की ओर दौड़ीं।

आज स्थिति यह है कि अर्थव्यवस्था भू-राजनीति के पीछे चलने लगी है। हालांकि, अभी पूरी तरह से उसके अधीन नहीं हुई है। अब अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा टैरिफ को भू-राजनीति के हथियार के रूप में इस्तेमाल करना नए दौर का सबसे बड़ा संकेत है। कभी टैरिफ एक आर्थिक औज़ार हुआ करता था और वैश्वीकरण के दौर में ज्यादातर देश इन्हें न्यूनतम स्तर तक कम करना चाहते थे, लेकिन पिछले एक साल में अमेरिका ने अपने पुराने सहयोगियों पर भी टैरिफ लगाए हैं, क्योंकि अब वह उन्हें ज्यादा काम का नहीं मानता।

1949 में अमेरिका के संरक्षण में पश्चिमी यूरोप को सोवियत संघ/रूस से बचाने के लिए बना नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन (NATO) के साथ व्यवहार नई भू-राजनीति का अहम उदाहरण है। ग्रीनलैंड से जुड़ी अपनी योजनाओं के लिए राष्ट्रपति ट्रंप उन NATO देशों को दंडित करने के लिए टैरिफ का इस्तेमाल करने को तैयार थे, जिन्होंने उनका विरोध किया। हालांकि बाद में उन्होंने कदम पीछे खींच लिए, लेकिन यह साफ नहीं है कि यह बदलाव कितने समय तक टिकेगा।

बदलते हालात को देखते हुए भारत के आर्थिक विकल्पों को समझना चाहिए। भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है (हालांकि, वियतनाम की रफ्तार ज़्यादा है, लेकिन उसका आकार छोटा है)। अगर मौजूदा रुझान ऐसे ही रहे, तो 2028 से 2030 के बीच भारत जर्मनी को पीछे छोड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, लेकिन क्या यह रफ्तार आगे भी बनी रह पाएगी?

अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत के अमेरिका जाने वाले निर्यात पर बहुत ऊंचे टैरिफ लगाना इस समस्या का बड़ा हिस्सा है। वहीं दूसरी ओर, अमेरिका ने पाकिस्तान को अपनाया है और चीन पर उतने कड़े टैरिफ नहीं लगाए, जबकि चीन भी भारत का एक भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी है। ऐसे माहौल में आत्मनिर्भरता की बात करना आकर्षक लगता है, जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी अक्सर करते हैं, लेकिन यह व्यावहारिक विचार नहीं है। भारत का व्यापार/जीडीपी अनुपात अब बहुत छोटा नहीं है, जैसा कि 1970 के दशक तक था। अब यह 40 प्रतिशत से ज़्यादा है, यानी भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया से गहराई से जुड़ी हुई है। भारत अचानक अपने अंदर ही सिमट नहीं सकता, क्योंकि इससे उसे भारी आर्थिक नुकसान होगा।

भारत की आर्थिक रणनीति दो हिस्सों वाली होनी चाहिए: बाहर की ओर संतुलन और अंदरूनी नियामक ढांचे को सरल बनाना। हेजिंग का मतलब है बाहरी आर्थिक विविधता। भले ही अमेरिका ने तीन दशकों पुराने खास रिश्ते से कुछ दूरी बना ली हो, फिर भी भारत को उसके साथ कारोबार करने का रास्ता ढूंढना होगा। आईएमएफ-वर्ल्ड बैंक के आंकड़ों के अनुसार, 2024 के अंत में दुनिया की कुल जीडीपी 111.25 ट्रिलियन डॉलर थी, जिसमें अकेले अमेरिका की हिस्सेदारी 29.18 ट्रिलियन डॉलर थी–यानी कुल का 26 प्रतिशत से भी ज़्यादा। इसके अलावा, भारत के लगभग 20 प्रतिशत निर्यात पहले अमेरिका जाते थे। इतना बड़ा बाज़ार होने के कारण अमेरिका के साथ व्यापार समझौता भारत के अपने हित में है, भले ही सम्मान के नज़रिये से यह अच्छा न लगे।

भारत को अमेरिका पर निर्भरता भी कम करनी चाहिए और दूसरे बड़े बाज़ारों की तलाश करनी चाहिए। ईयू के साथ व्यापार समझौता सही दिशा में कदम है और व्यावहारिक कारणों से, रणनीतिक उलझनों के बावजूद, चीन को भी पूरी तरह छोड़ा नहीं जा सकता। चीन के साथ रिश्ते सुधारने की कोशिश भी सही कदम है।

अमेरिका, ईयू और चीन के अलावा, हेजिंग का मतलब उन देशों पर भी खास ध्यान देना है जिनकी जीडीपी एक ट्रिलियन डॉलर से ज़्यादा है, क्योंकि उनका बाज़ार बड़ा है।

नई रणनीति का दूसरा हिस्सा, यानी अंदरूनी नियामक ढांचे को सरल बनाना, मुख्य रूप से कर प्रणाली, ज़मीन और श्रम बाज़ार से जुड़ा है। हाल के हफ्तों में जीएसटी सुधार किए गए हैं और कुछ साल पहले संसद से मंजूर हुए श्रम कानून सुधार भी लागू किए गए हैं। ये दोनों ही बहुत ज़रूरी थे। सानों को नुकसान पहुंचाए बिना कृषि भूमि का बेहतर आर्थिक उपयोग कैसे किया जाए, यह हमेशा से विकास की बड़ी चुनौती रही है। भारत अभी तक इस चुनौती का पूरा समाधान नहीं कर पाया है।.

मोदी सरकार के दौर में सार्वजनिक निवेश बढ़ा है, जिससे सड़कें, बंदरगाह जैसी भौतिक संरचनाएं और डिजिटल ढांचा बेहतर हुआ है, लेकिन कुल मिलाकर निजी निवेश हाल के वर्षों में काफी कम रहा है। 2007 में निवेश/जीडीपी अनुपात 42 प्रतिशत तक पहुंच गया था, जबकि 2024 में यह 33 प्रतिशत रहा। नियामक ढांचे को सरल बनाना निजी निवेश–चाहे वह विदेशी हो या घरेलू–बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका होगा।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

शरद की सुबह

क्यों तुम्हें मानूं खुदा
इंसान मैं इंसान तुम
एक ही करतार की संतान
मैं संतान तुम।
सिन्धुजा के लाड़ले या
इंद्र के प्रिय मित्र हों
चार दिन के ही मगर मेहमान
मैं मेहमान तुम।
तुम विकारों से रहित न,
मैं भी हूँ निर्मल कहाँ
एक पशु दोनों में,
कुछ हैवान मैं हैवान तुम।
पुंज तुम आलोक के न,
मुझको भी घेरे तिमिर
निष्फलित अब तक जो वह,
वरदान मैं वरदान तुम।
चाहते तुम जग बदल जाए,
यही मैं चाहता हूँ
पर असंभव चाह यह ,
नादान मैं नादान तुम।
हर तरफ रंगीनियां हैं ,
हर जगह मेला भरा
हैं मगर यह स्वप्न ही,
अनजान मैं अनजान तुम।

दिनेश मालवीय 'अश्क'

मुख्यमंत्री ने राज्य स्तरीय पुष्प महोत्सव का किया शुभारंभ

मप्र के फूलों की सुगंध पहुंच रही है पेरिस और लंदन : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पुष्प केवल प्रकृति की नहीं हमारे भावों की भी सुंदर और सशक्त अभिव्यक्ति हैं। जन्म से लेकर जीवन के हर मंगल अवसर तक पुष्प हमारे भावों को अभिव्यक्त करते हैं। वर्तमान में यही पुष्प किसानों की आय बढ़ाने, ग्रामीण उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और निर्यात क्षमता को मजबूत बनाने का माध्यम बन रहे हैं। गर्व का विषय है कि मध्यप्रदेश, देश में पुष्प उत्पादन में अग्रणी राज्य है। मध्यप्रदेश के फूलों की सुगंध पेरिस और लंदन तक पहुंच रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल के गुलाब उद्यान में आयोजित एक दिवसीय राज्य स्तरीय पुष्प महोत्सव की अवधि तीन दिन करने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को शासकीय गुलाब उद्यान, लिंक रोड क्रमांक-1 में कृषक कल्याण वर्ष-2026 के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय पुष्प प्रदर्शनी का शुभारंभ कर संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और किसानों, नर्सरी संचालकों तथा पुष्प प्रेमियों से चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुष्प प्रदर्शनी में विभिन्न वर्गों के लिए हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा विभाग के ब्रोशर का विमोचन भी किया गया।

- पुष्प केवल प्रकृति की नहीं हमारे भावों की भी है सुंदर और सशक्त अभिव्यक्ति
- राज्य सरकार किसानों को दे रही है फूलों की खेती के लिए तकनीकी प्रशिक्षण और अनुदान

पुष्प उत्पादन से किसानों की बढ़ रही है नकद आय

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि राज्य स्तरीय पुष्प महोत्सव के माध्यम से किसानों को व्यवसायिक स्तर पर फूलों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। राज्य के किसान पुष्प उत्पादन से अपनी आय बढ़ा रहे हैं। इस आयोजन में पुष्प उत्पादक किसान, नर्सरी संचालक और खरीदार तीनों एक स्थान पर जुटे हैं। किसानों को बाजार की संभावनाओं और फूलों की खेती की जानकारी प्रदान की जा रही है। फूलों के माध्यम से किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। प्रदेश में फूलों की

खेती का रकबा निरंतर बढ़ रहा है। प्रदेश के किसान, फूल नहीं अपने मन का भाव दूसरे स्थानों पर भेजते हैं। प्रदेश के 40 हजार किसान पुष्प उत्पादन से जुड़े हैं और 45 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में फूलों का उत्पादन हो रहा है। हर साल लाखों टन फूल गुजरात, महाराष्ट्र सहित विदेशों में भी भेजे जा रहें है। राज्य सरकार किसानों को पुष्प उत्पादन के लिए तकनीकी प्रशिक्षण और अनुदान में सहायता प्रदान कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश, देश का दूसरा सर्वाधिक पुष्प उत्पादक राज्य है। वर्ष 2021-22 तक राज्य में फूलों की खेती का रकबा 37 हजार हैक्टेयर था, जो अब बढ़कर 44 हजार हैक्टेयर हो चुका है। प्रदेश का पुष्प उत्पादन 86 लाख टन हो गया है।

अब लीज, पॉवर ऑफ अटार्नी करेंगे साइबर रजिस्ट्रार

संपदा 2.0 साफ्टवेयर के बाद फेसलेस सर्विसेस में एक और कदम आगे बढ़ेगा

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में साइबर तहसील की सफलता के बाद अब राज्य सरकार साइबर रजिस्ट्रार की व्यवस्था शुरू करने जा रही है। इस व्यवस्था के लागू होने के बाद जमीन की खरीदी-बिक्री को छोड़कर रजिस्ट्रार पंजीयन के तहत आने वाली 75 से अधिक सेवाएं साइबर रजिस्ट्रार के माध्यम से उपलब्ध होंगी।

शुरुआती चरण में ये सेवाएं आईजी पंजीयन कार्यालय से शुरू की जाएंगी, जिन्हें बाद में जिला स्तर पर लागू किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जल्द ही इस सेवा का शुभारंभ करेंगे। पंजीयन अधिकारियों के अनुसार, संपदा-2.0 सॉफ्टवेयर की शुरुआत के बाद यह सुविधा शुरू की जा रही है। पूरी व्यवस्था वर्चुअल होगी, जिसमें स्लॉट बुकिंग से लेकर दस्तावेज पंजीयन तक की प्रक्रिया ऑनलाइन रहेगी।

इस सुविधा के तहत मध्यप्रदेश, अन्य राज्यों या विदेश में रहने वाले लोग भी साइबर रजिस्ट्री के माध्यम से अपने दस्तावेजों का पंजीयन करा सकेंगे। इसके लिए सरकार अलग से पंजीयन शुल्क भी ले सकेगी।

आईजी पंजीयन बोले-

फेसलेस सिस्टम से आएगी तेजी- आईजी पंजीयन अमित तोमर ने बताया कि इसके लिए आईजी कार्यालय में पूरा सेटअप तैयार कर लिया गया है और छह सब-रजिस्ट्रार की पदस्थापना भी की जा चुकी है। साइबर सब-रजिस्ट्रार किन दस्तावेजों का पंजीयन कर सकेंगे, इसका नोटिफिकेशन जारी किया जा चुका है। इसमें 75 से अधिक प्रकार के दस्तावेज शामिल हैं, हालांकि अभी जमीन की रजिस्ट्री इस दायरे में नहीं आएगी। उन्होंने बताया कि शुरुआती दौर में लीज, हलफनामा, पावर ऑफ अटॉर्नी सहित अन्य दस्तावेजों का पंजीयन फेसलेस प्रक्रिया से किया जा सकेगा। पूरी प्रक्रिया वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और वर्चुअल माध्यम से होगी।

ट्रक की टक्कर से कार के परखच्चे उड़े...चार की मौत

बुरी तरह फंसे शव, क्रेन की मदद से निकाला

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में शुक्रवार सुबह घने कोहरे के बीच सड़क हादसा हो गया। भिंड रोड हाईवे पर बंटू ढाबा के सामने तेज रफ्तार ट्रक ने वैगनआर कार को जोरदार टक्कर मार दी।

हादसा इतना भीषण था कि कार सवार चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों में दो महिलाएं और दो पुरुष शामिल हैं।

सभी भिंड जिले के हैं। सुबह करीब 8 बजे जैसे ही इनकी कार बंटू ढाबा के पास पहुंची, पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने कार को रौंद दिया।

पुलिस के मुताबिक, मृतकों की पहचान सौरभ शर्मा निवासी मेहगांव (भिंड), ज्योति यादव (भिंड), भूरे प्रजापति (गोरमी) भिंड और उमा राठौर पत्नी पति राम राठौर, निवासी मोरोली भिंड के रूप में हुई है।

पेपर देने जा रहा था सौरभ, रास्ते में मिली सवारी–सौरभ बीएससी एग्रीकल्चर का पेपर देने आगरा जा रहा था। कार उसके भाई की है। रास्ते में उसे ग्वालियर के लिए सवारी मिल गई, जिनकी हादसे में मौत हो गई।

ज्योति की बहन नीलम यादव ने बताया कि हमें सुबह सूचना मिली थी कि मालनपुर में एक्सीडेंट हुआ है। कार में मेरी बहन भी आ रही थी। उसे मथुरा जाना था, इसलिए वह गोरमी से निकली थी। ज्योति के 2 बच्चे हैं। वह अकेली घर से निकली थी।

सौरभ के भाई अंकित ने बताया कि सुबह करीब 6 बजे सौरभ घर से निकला था। उसकी उम्र 24 साल थी। परिवार में 2 भाई और एक बहन है। बता दें आज सुबह ग्वालियर में विजिबिलिटी 200 से 500 मीटर तक थी।

क्रैश हुई चांदी,67,000 गिरकर 3.32 लाख पर आई

- सोना 15 हजार रुपए सस्ता, 1.54 लाख रुपए पर आया

नई दिल्ली (एजेंसी)। गोल्ड और सिल्वर मार्केट में शुक्रवार यानी 30 जनवरी को भारी गिरावट आई। सुबह के कारोबार के दौरान प्रॉफिट बुकिंग के कारण एमसीएक्स पर चांदी 67 हजार रुपए (17 फीसदी) गिर गई थी। 1 किलो चांदी का भाव 3.32 लाख रुपए पर आ गया था। हालांकि अभी इसमें थोड़ी रिकवरी है और ये 12 फीसदी की गिरावट के साथ 3.51 लाख पर आ गई है।

एमसीएक्स पर सोने में भी सुबह के कारोबार के दौरान 15 हजार रुपए (9 फीसदी) की गिरावट थी। 10 ग्राम सोना 1.54 लाख रुपए पर आ गया था। वहीं सोना अब थोड़ा रिकवर हुआ है और ये 3 फीसदी की गिरावट के साथ 1.64 लाख रुपए पर ट्रेड कर रहा है। सोने और चांदी के ईटीएफ में भी आज 23 फीसदी तक की गिरावट दर्ज की गई है। वहीं सर्राफा बाजार में चांदी 40,638 रुपए और सोना 9,545 रुपए सस्ता हुआ है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार एक किलो चांदी की कीमत 3,39,350 रुपए किलो पर आ गई है। वहीं 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का भाव 1,65,795 रुपए पर आ गया है। इस साल जनवरी के 29 दिन में सोना 35,280 रुपए महंगा हो चुका है। 31 दिसंबर 2025 को 10 ग्राम 24 कैरेट सोना 1,33,195 रुपए का था, जो अब 1,68,475 रुपए हो गया है।

असम को तोहफा

डिब्रूगढ़ में बनेगी दूसरी विधानसभा

गुवाहाटी (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को असम के दौरे में कांग्रेस को निशाने पर लिया। शाह ने असम की दूसरी राजधानी डिब्रूगढ़ में नई विधानसभा की आधारशिला रखी। इसके बाद उन्होंने कहा कि चाय की राजधानी को अब नई आर्थिक ताकत मिलेगी। उन्होंने हिमंता बिस्वा सरमा की तारीफ करते हुए पूछा कि फिर से बीजेपी की सरकार बनाओगे कि नहीं। उन्होंने कहा कि बीजेपी सरकार असम के विकास के लिए काम कर रही है।

शाह ने कहा कि हिमंता बिस्वा सरमा ने डिब्रूगढ़ में नई विधानसभा बनाने का ऐलान किया था। आज आधारशिला रख दी गई। पहले भी कांग्रेस के समय में घोषणाएं होती थीं लेकिन वे घोषणाएं ही रह जाती हैं। शाह ने डिब्रूगढ़ को असम की पहचान बताया। उन्होंने कहा कि यहीं से पूरे देश और दुनिया में असम की चाय की खुशबू फैली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने डिब्रूगढ़ में नई असम विधान सभा भवन की नींव रखी। असम के डिब्रूगढ़ को सीएम हिमंता बिस्वा सरमा ने ही इस राज्य की दूसरी राजधानी घोषित किया था।

असम की मौजूदा विधानसभा राजधानी गुवाहाटी में के दिसपुर में स्थित है। इसके नए भवन का उद्घाटन 30 जुलाई, 2023 को लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने किया था। असम की विधानसभा में कुल सीटों की संख्या 126 है। असम की दूसरी नई विधानसभा भवन का निर्माण 284 करोड़ रुपये से किया जाएगा। उन्होंने एक्स पर लिखा कि यह असम के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। उन्होंने कहा कि जब यह कॉम्प्लेक्स तैयार हो जाएगा, तो इससे ऊपरी असम क्षेत्र के लोगों को सुशासन के फायदे उठाने में आसानी होगी। गृह मंत्री शाह ने कुछ परियोजनाओं का शुभारंभ भी किया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 31 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अजित पवार की पत्नी को डिप्टी सीएम बनाने की मांग

- सीएम फडणवीस से मिले एनसीपी के नेता,विभाग भी मांगे

मुंबई/पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार के निधन के बाद उनका पद पत्नी को दिए जाने, एनसीपी के दोनों गुट के विलय और विभागों के बंटवारे को लेकर चर्चा तेज हो गई है। इन्हीं मांगों को लेकर शुक्रवार को एनसीपी के नेता सीएम देवेंद्र फडणवीस से मिलने उनके घर वर्षा बंगले पहुंचे। इसमें प्रफुल्ल पटेल, छगन भुजबल, सुनील तटकरे शामिल हैं। मीटिंग आधे घंटे तक चली। महाराष्ट्र सरकार में अजित पवार के

पास वित्त, आबकारी और खेल विभाग के साथ-साथ डिप्टी चीफ मिनिस्टर का पद भी था। एनसीपी नेताओं में इस बात पर चर्चा चल रही है कि ये विभाग और पार्टी की नेशनल लीडरशिप किसे दी जाए। यह दावा भी किया जा रहा है कि अजित पवार एनसीपी के दोनों गुट के जिस मर्जर पर बातचीत कर रहे थे, उस पर आखिरी फैसला शरद पवार लेंगे। अजित पवार का 28 जनवरी को बारामती में एक प्लेन क्रैश में निधन हो गया था। वे जिला परिषद चुनाव के लिए रैली को संबोधित करने जा रहे थे। सीएम देवेंद्र फडणवीस से मुलाकात के बाद एनसीपी के नेता प्रफुल्ल पटेल ने मीडिया से बातचीत करते हुए एक महत्वपूर्ण बयान दिया। उन्होंने कहा कि हमने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को साफतौर पर बता दिया है कि जनभावना को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द फैसला लेना जरूरी है।

'आपले वाचनालय' की पुणे में वाचन पहल

इंदौर । पुस्तकें मानव को शिक्षित और ज्ञानी बनाकर न सिर्फ समाज को विकसित , मानव जीवन को सफल बनाती है वरन उन्नत और सभ्य समाज की पहचान ही है पुस्तकें और समृद्ध वाचन संस्कृति ।

यह विचार वरिष्ठ लेखक , चिंतक और हिन्दी आंदोलन परिवार के संस्थापक ,अध्यक्ष संजय भारद्वाज ने आपले वाचनालय द्वारा वाकड पुणे के अटलांटा -II परिसर में स्थापित वाचनालय केंद्र के उद्घाटन अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त

किए। इसके साथ ही इंदौर के प्रतिष्ठित साहित्य , कला , संस्कृति केंद्र आपले वाचनालय ने वाचन संस्कृति के संवर्धन की अपनी पुणे पहल का शुभारंभ किया । इस अवसर पर डॉ . कृष्ण कुलश्रेष्ठ ने जहांवाचनालय सरोकार केंद्रित प्रभावी कविता का वाचन किया वहीं दीपक सराफ ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में समाज में रचनात्मक सहभागिता के श्रेष्ठत्व को प्रतिपादित किया । अतिथि स्वागत नन्हे शौर्य राशिनकर ने किया ।

सरस्वती पूजन व श्याम गुंडावर द्वारा गाई सरस्वती वंदना के पश्चात अतिथि द्वारा वाचनालय केंद्र का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का सुचारू संचालन श्रीति राशिनकर ने किया और आभार माना संदीप ने ।

इस अवसर पर सर्वश्री वाबले ,आर.सी.सिंग , देशमुख , कालिदास जोशी , चौधरी , रवींद्र , कोडगिरे , अशोक भंडारी , अमोल गाढ़ेकर , गौरव श्रीवास्तव, धसे ,भरत खटावकर , दीपक शर्मा , आकाश भोंडवे एवं डॉ . निशा कुलश्रेष्ठ , मेघना , श्रेयस राशिनकर आदि प्रबुद्ध जन उपस्थित थे ।

भारत रंग महोत्सव

'जश्न-ए-बचपन' में आया 'नन्हा साइंटिस्ट'!

(शकील अख़्तर)

'जश्न-ए-बचपन' में 'नन्हा साइंटिस्ट' एडिसन इलेक्ट्रिक बल्ब के साथ बच्चों के दिमाग़ की बत्ती भी जला गया! मोहित जैन लिखित-निर्देशित इस मज़ेदार नाटक के साथ 25 वें भारत रंग महोत्सव (भारंगम) में पहली बार 'जश्न-ए-बचपन' शुरू हुआ। थियेटर इन एजुकेशन (टीआईई) के इस पूरे आयोजन में बच्चों का जोश देखने काबिल रहा। नन्हे दर्शकों के बीच फिल्म प्रोड्यूसर कृषिका लुल्ला भी पहुंची। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) के निदेशक चितरंजन त्रिपाठी और रजिस्ट्रार प्रदीप. के मोहंती ने उनके साथ मंच साझा किया। टीआईई के प्रभारी रिकेन गोमले ने ज़ूम से वर्चुअली जुड़कर अपनी बात कही।

बच्चों के खिले चेहरे ताज़गी का अहसास–श्रीमती कृषिका ने अपने सम्बोधन में कहा- ' बच्चों के लिये थियेटर में बेहतर काम की संभावना है। इससे पहले एनएसडी निदेशक चितरंजन त्रिपाठी ने नाट्य विद्यालय की तरफ़ से उनका स्वागत किया।

चितरंजन त्रिपाठी ने कहा - 'जश्न-ए-बचपन सच में जश्न है। नन्हे कलाकारों को और बड़ा कलाकार बनाने का प्रेरक मंच है। 2018 में मोहंती जी के प्रयासों से इसकी शुरूआत हुई थी। अब यह भारत रंग महोत्सव में हो रहा है। एक ऐसा वृहद महोत्सव जो देश के कुल 52 और विदेश के 16 शहरों में जारी है।

' **भारंगम' में बच्चों के लिये बड़ी शुरूआत**– रजिस्ट्रार प्रदीप. के. मोहंती ने कहा - 'जश्ने बचपन का 7 साल बाद फिर से शुरू हो पाना चितरंजन जी की इच्छा शक्ति के बिना संभव नहीं था। इस काम का पूरे देश में विस्तार होना चाहिये।

महोत्सव में अब सिर्फ बड़ों के नाटक नहीं– ज़ूम से स्क्रीन पर अवतरित टीआईई के प्रभारी रिकेन गोमले ने कहा- 'भारत रंग महोत्सव की पहचान बड़ों के लिये होने वाले नाटकों की रही है, मगर अब बड़ों और बच्चों के नाटकों का अंतर ही मिट गया है। बच्चों के काम का कई स्तरों पर विस्तार हुआ है।

नन्हा साइंटिस्ट' की प्रस्तुति के लिये अभिनंदन: कार्यक्रम के अंत में निर्देशक मोहित जैन के लिये समन्वयक जंयता राभा का गुलदस्ता और प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। टीआईई की स्थापना से जुड़े रहे वरिष्ठ निर्देशक हफीज़ ख़ान और एनएसडी में बच्चों के लिये नाटकों के लेखक शकील अख़्तर ने यह औपचारिकता निभाई। कार्यक्रम संचालन टीआईई के आशीष आत्रे ने किया। आशीष ने बताया- 'भारंगम' में बच्चों के 24 नाटक हो रहे हैं। महाराष्ट्र, अरुणाचल और कर्नाटक की टीमें भी परफॉर्म करने आ रही हैं। महोत्सव में टीआईई संडे क्लब के 16 नाटक भी होंगे। ज़्यादातर नाटक संगीत नाटक अकादमी के परिसर में मौजूद मेघदूत प्रेक्षागृह में होंगे।

नाटक से सीखी बच्चों ने दो बातें: 'नन्हा साइंटिस्ट' नाटक इलेक्ट्रिक बल्ब का आविष्कार करने वाले महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन के बचपन पर आधारित है। इसकी मज़ेदार प्रस्तुति से नन्हे दर्शकों ने दो ख़ास बातें सीखी। पहला - 'सवाल करते रहना चाहिये'। दूसरा - 'जब तक सफलता न मिले, कोशिश करते रहना चाहिये'। नाटक में बच्चे और बड़े एडिसन की भूमिकाओं के दोनों ही कलाकारों ने प्रभावशाली अभिनय किया। नाटक में 'डिले दि ढीली' और एडिसन की मां की भूमिकाओं में भी कलाकारों ने सशक्त अभिनय किया। इसके अलावा सहयोगी कलाकारों की भूमिकाएं भी बढ़िया रही।

स्कूलों में लड़कियों को दी जाए फ्री सैनेटरी पैड

- सुप्रीम कोर्ट बोला-लड़के और लड़कियों के अलग टॉयलेट हों

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को देश के सभी प्राइवेट और सरकारी स्कूलों को निर्देश दिया कि हर स्कूल में लड़कियों को फ्री में सैनेटरी पैड बांटना अनिवार्य होगा। लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग वॉशरूम बनाने होंगे। जो स्कूल ऐसा नहीं कर पाएंगे

उनकी मान्यता रद्द की जाएगी। इसके साथ ही कोर्ट ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया है कि हर स्कूल में दिव्यांग-अनुकूल (डिसेबल-फ्रेंडली) टॉयलेट बनाए जाएं। सुप्रीम कोर्ट ने 2024 में लगाई एक जनहित याचिका पर सुनवाई के बाद यह फैसला सुनाया है। याचिका जया ठाकुर ने लगाई थी। उनकी मांग थी कि केंद्र सरकार की मासिक धर्म स्वच्छता नीति को पूरे देश में लागू किया जाए। अगर स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग टॉयलेट नहीं हैं तो यह संविधान के अनुच्छेद 14 (बराबरी का अधिकार) का उल्लंघन है। अगर लड़कियों को सैनिटरी पैड नहीं मिलते। तो वे लड़कों की तरह बराबरी से पढ़ाई और गतिविधियों में हिस्सा नहीं ले पातीं।

सबसे बड़ी हिंसा संस्थागत हिंसाः अनुराधा शंकर

इंदौर। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 78 वीं पुण्यतिथि पर नेशनल पीस मूवमेंट (एनपीएम) रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3040 के सहयोग से शांति सम्मेलन का आयोजन जनविकास सोसायटी हॉल, पालदा में किया गया। राष्ट्रीय शांति आंदोलन (एनपीएम) की मीडिया प्रभारी डॉ. नीहार गीते ने बताया कि 260 लोगों ने सम्मेलन में भाग लिया। आरंभ में राष्ट्रीय शांति आंदोलन के संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय वर्गीस आलेंगाडन को पुष्पांजलि अर्पित करने के उपरांत उपाध्यक्ष ऐनी पवार ने फादर वर्गीस के योगदान पर प्रकाश डाला। प्रमख वक्ता पूर्व अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक अनुराधा शंकर ने 'वर्तमान वैश्विक और भारतीय परिपेक्ष्य में संघर्ष समाधान और रोकथाम का गांधीवादी दृष्टिकोण' विषय पर बोलते हुए कहा कि सेवा कार्य जब तक सार्थक नहीं जब तक उसमें निरन्तरता नहीं। शांति सम्मेलन की निरन्तरता ही उसकी सार्थकता है। उन्होंने आगे कहा कि हम मार-काट को ही हिंसा समझते हैं। यह तो दृश्य हिंसा है। परन्तु अदृश्य हिंसा उससे भी खतरनाक होती है। सबसे बड़ी हिंसा संस्थागत हिंसा है जो विश्व में रचबस गई है। हमें उसपर गंभीरता से विचार करना होगा। गांधी की अहिंसा सक्रिय अहिंसा थी। इसे समझने के लिए गांधी को पढ़ें, समझें, उन्हें सिर्फ इतिहास न बन जाने दें, उन्हें जीवन में अपनाएं, जीवन में जीवित रखें। यदि यह सब आप और हम कर पाएं तो वैश्विक समस्याएं हल होंगी।

इसी सत्र में रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3040 की गवर्नर रोटेरियन सुशील मल्होत्रा ने समग्र शांति को बढ़ावा देने में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के योगदान' पर प्रकाश डाला। कैथोलिक धर्मप्रांत के धर्माध्यक्ष डॉ. थॉमस मैथ्यू मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि संघर्षों और शांति की स्थापना हेत गांधीजी का रास्ता आपसी सम्मान और संवाद का था। जनविकास सोसायटी के निदेशक शिनोज जोसफ ने आभार प्रदर्शन किया। द्वितीय सत्र का प्रारंभ पूर्व मंडलाध्यक्ष एडवोकेट सत्यनारायण के उद्बोधन के साथ हुआ। सम्मेलन में इंदौर के विभिन्न स्कूलों से 225 हाईस्कूल विद्यार्थी शामिल हुए। आठ विद्यार्थियों ने शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए अपने रचनात्मक विचार साझा किए गए। इसके साथ ही एकता, समरसता, शांति और देशभक्ति पर आधारित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। सरोज मोदानी ने आभार व्यक्त किया।

स्वागत भाषण एनपीएम की अध्यक्ष डॉ. संगीता जैन ने दिया। संचालन नीतू जोशी ने किया। इस आयोजन के समन्वयक जेकब पीनीकापरम्बिल थे।

एमसीयू में मौन, प्रशिक्षण और पुष्पांजलि

भोपाल। आज विश्वविद्यालय की संबद्ध अध्ययन संस्थाओं के संचालकों के लिए उच्च शिक्षा विभाग म. प्र. शासन और विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम शासन द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार आज शहीद दिवस(महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि) पर स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान देने वाले बलिदानियों की स्मृति में दो मिनट का मौन रखा गया। आज ही पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी की पुण्यतिथि भी है इसलिए विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित दद्दाजी की प्रतिमा पर माननीय मंत्रीजी के साथ विश्वविद्यालय के कुलगुरु एवं अधिकारियों ने पुष्पांजलि अर्पित की।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र हेतु उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार स्वयं उपस्थित थे। इस अवसर पर मंचस्थ विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी, कुलसचिव डॉ पी शशिकला, निदेशक एएसआई डॉ आशीष जोशी एवं परीक्षा नियंत्रक डॉ राजेश पाठक क्र के साथ बड़ी संख्या में संस्थाओं के संचालक मध्यप्रदेश के लगभग सभी जिलों से उपस्थित थे।

उदघाटन सत्र में विश्वविद्यालय के एआईएसएचई नोडल अधिकारी के रूप में संस्थाओं के प्रतिनिधियों से एआईएसएचई की संकल्पना, विश्वविद्यालय की भूमिका, संबद्ध अध्ययन संस्थाओं से अपेक्षा आदि विषय पर संवाद करने का अवसर मिला।

प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी सत्र उच्च शिक्षा विभाग के स्टेट नोडल कार्यालय से डॉ ममता श्रीवास्तव एवं डॉ संजय गुलाटी ने लिए।

बाद के सत्रों में विश्वविद्यालय के एएसआई विभाग द्वारा संस्थाओं के सुचारू संचालन हेतु किए जा रहे नवाचारों, युगानुकुल आरंभ किए जाने वाले नवीन पाठ्यक्रमों, परीक्षा प्रक्रिया की चुनौतियों के समाधानों आदि के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम के बाद मा. उच्च शिक्षा मंत्री ने विश्वविद्यालय परिसर में स्वामी विवेकानंद के चित्र का अवलोकन कर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

साध्वी को संदिग्ध परिस्थिति में मौत के बाद दी गई समाधि

- पिता बोले-गलत इंजेक्शन से गई जान

बाड़मेर (एजेंसी)। राजस्थान की कथावाचक साध्वी प्रेम बाईसा (23) की विवादित मौत के बाद उन्हें समाधि दी गई। बाईसा को बुधवार को जोधपुर के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया था। कुछ मिनटों बाद ही उन्होंने दम तोड़ दिया था। प्रेम बाईसा के पिता वीरमनाथ का दावा है कि उन्हें

केवल मामूली जुकाम था। जोधपुर के ही आश्रम में उन्हें एक इंजेक्शन लगाया गया था, इसके बाद उनकी तबीयत बिगड़ गई थी। हॉस्पिटल में मौत के बाद उनका एक कथित सुसाइड नोट सामने आया था। इसके बाद साध्वी से जुड़ा पुराना ब्लैकमेलिंग केस फिर चर्चा में आ गया है। वहीं, कई भक्तों ने उनके पिता की भूमिका पर भी सवाल उठाए हैं। 13 जुलाई 2025 को सोशल मीडिया पर साध्वी का एक वीडियो वायरल हुआ था।

- साध्वी के पुराने साथियों की गिरफ्तारी- मामले की जांच के बाद पुलिस ने 4 लोगों को गिरफ्तार किया था। इनमें साउंड सिस्टम लगाने का काम करने वाला जोगेंद्र उर्फ जोगाराम (29), पूर्व ड्राइवर रमेश, कृष्णा (जोगेंद्र की पत्नी) और दो अन्य लोग शामिल थे। साध्वी ने आरोप लगाया था कि जोगेंद्र ने घर में लगे सीसीटीवी कैमरे से इसे निकाला था।

टैक्स फ्री हो सकती है 13 लाख तक की कमाई

- यूनियन बजट में 300 नई ट्रेनों की घोषणा संभव
- आम जनता से जुड़े बजट में 5 बड़े ऐलान संभव

नई दिल्ली (एजेंसी)। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को बजट में आम जनता के लिए बड़ी राहत की घोषणा कर सकती हैं। 300 ट्रेने चलाने का भी लक्ष्य है। जानकारी के अनुसार इनकम टैक्स की नई रिजीम में स्टैंडर्ड डिडक्शन 75 हजार से बढ़ाकर 1 लाख रुपए किया जा सकता है। इससे सैलरीड लोगों की 13 लाख रुपए की इनकम टैक्स-फ्री हो जाएगी। अभी 12.75 लाख रुपए तक कि इनकम टैक्स फ्री है। सूत्रों ने बताया कि उद्योग संगठन कंफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री ने सरकार को सुझाव दिया है कि खपत बढ़ाने के लिए लोगों के हाथ में ज्यादा पैसा छोड़ना जरूरी है। टैक्स छूट बढ़ने से लोगों की पर्चेजिंग पावर बढ़ेगी। इससे इकोनॉमी को फायदा होगा। सरकार पुरानी टैक्स रिजीम को नई टैक्स रिजीम से बदलना चाहती है। इसके लिए

नई टैक्स रिजीम को फायदेमंद बनाए रखना जरूरी है। इसी मकसद से नई रिजीम में सैलरी पाने वालों के लिए स्टैंडर्ड डिडक्शन बढ़ाया जा सकता है। इससे मिडिल क्लास के हाथ में आने वाला पैसा बढ़ेगा। महीने में कुछ हजार रुपए की बचत हो सकती है। ये खर्च, सेविंग या निवेश में काम आएगी। **किसान सम्मान निधि की बढ़ सकती है सालाना रकम**– पीएम-किसान योजना की राशि 6 हजार से 9 हजार रुपए सालाना की जा सकती है। बीते 3 साल से इसे बढ़ाने की बात हो रही है। 2019 में योजना शुरू होने के बाद से इसमें बदलाव नहीं हुआ है। 2024 में संसदीय स्थायी समिति ने रकम दोगुना करने की सिफारिश की थी।

60 साल से ऊपर के सभी बुजुर्गों को फायदा देने की उम्मीद

सरकार आयुष्मान भारत योजना का दायरा बढ़ा सकती है। वर्तमान में 70 साल से ऊपर के बुजुर्गों को इस योजना का फायदा मिल रहा है, जिसे घटाकर 60 साल किया जा सकता है। साथ ही, सालाना 5 लाख के मुफ्त इलाज की लिमिट को बढ़ाया जा सकता है, ताकि कैंसर और हार्ट सर्जरी जैसी गंभीर बीमारियों का खर्च कवर हो सके। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 60+ उम्र के बुजुर्गों में से 82 फीसदी के पास कोई भी हेल्थ इंश्योरेंस नहीं है। हालांकि 70+ उम्र वाले आयुष्मान में कवर है। 60 से 70 साल के बीच ऐसे बुजुर्ग जिनके पास हेल्थ इंश्योरेंस नहीं है वे गंभीर बीमारियों के लिए अपनी जमापूंजी खर्च करने को मजबूर हैं। ऐसे में सरकार इन्हें राहत दे सकती हो। इलाज का दायरा 60 साल होने से करोड़ों नए परिवार योजना से जुड़ेंगे। वहीं इलाज की लिमिट बढ़ने से परिवारों को बड़े ऑपरेशनों के लिए कर्ज नहीं लेना पड़ेगा।

साल भर पहले कांग्रेस नेता ने किया था सुसाइड

ईडी कोर्ट पहुंची

परमार दंपत्ति ने ईडी के खिलाफ लिखा था 5 पेज का सुसाइड नोट, पीएनबी ब्रांच मैनेजर भी आरोपी

भोपाल (नप्र)। ईडी की प्रताड़ना से दुखी होकर आत्महत्या करने वाले कांग्रेस नेता मनोज परमार और उनकी पत्नी नेहा परमार की मृत्यु के एक साल बाद प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) भोपाल ने मनोज परमार और अन्य के विरुद्ध पीसी दायर की है।

ईडी ने मनोज परमार और अन्य के मामले में मार्क पियस करारी और 4 अन्य के खिलाफ पीएमएलए के प्रावधानों के आधार पर पीसी (प्रॉसीक्यूशन कम्प्लेंट) दायर की है, जिसके बाद न्यायालय ने आरोपियों को नोटिस जारी किए हैं। यह मामला इसलिए भी चर्चा में रहा क्योंकि मनोज परमार के बच्चों ने राहुल गांधी की न्याय यात्रा के दौरान राहुल को गुल्लक भेंट किया था। इसके बाद ईडी की कार्यवाही का कांग्रेस ने विरोध भी किया था।

ईडी ने यह पीसी सीबीआई भोपाल द्वारा विभिन्न धाराओं के अंतर्गत मनोज परमार, मार्क पियस करारी (तत्कालीन शाखा प्रबंधक पंजाब नेशनल बैंक, आष्टा, जिला सीहोर) और अन्य के खिलाफ दर्ज एफआईआर के आधार पर जांच शुरू की थी। इसके बाद सीबीआई ने मनोज परमार और अन्य के खिलाफ आरोपपत्र दायर किया।

ईडी की जांच में पता चला कि मनोज परमार ने पंजाब नेशनल बैंक के तत्कालीन शाखा प्रबंधक की मदद से प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) और मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना (सीएमवाईयूवाई) के अंतर्गत धोखाधड़ी से ऋण प्राप्त किए गए। फर्जी आवेदकों, जाली दस्तावेजों और मनगढ़ंत कोटेशन का उपयोग करके 2016 में कुल 18 लोन मंजूर किए गए जिनकी कुल राशि 6.20 करोड़ रुपये थी, जिनमें से वास्तव में 6.01 करोड़ रुपए वितरित किए गए।

लोन देने में नियमों की अनदेखी, अधिकार न होने के बाद बांटे लोन

ईडी की जांच से पता चला है कि बैंक के ऋण स्वीकृति नियमों की अनदेखी की गई, दूसरे स्तर की स्वीकृतियों को दरकिनार किया गया और शाखा प्रबंधक की वित्तीय शक्तियों से परे जाकर भी ऋण स्वीकृत किए गए। बैंक अधिकारियों द्वारा किए गए निरीक्षण से पुष्टि हुई कि कोई भी व्यावसायिक इकाई स्थापित नहीं की गई थी और उधारकर्ताओं ने ऋण के लिए आवेदन करने या ऋण प्राप्त करने से इनकार कर दिया जिससे पता चलता है कि स्वरोजगार के लिए बनाई गई योजनाओं का घोर दुरुपयोग किया गया। ईडी की विज्ञप्ति में कहा गया है कि इसके बाद धोखाधड़ी से प्राप्त ऋण राशि को मनोज परमार और उनके करीबी सहयोगियों द्वारा नियंत्रित फर्मों के खातों में ट्रांसफर कर दिया गया।

- **लोन की राशि से खरीदी गई संपत्तियां-** ईडी की जांच रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मनोज परमार और अन्य के नाम पर संपत्तियां खरीदने के लिए इस्तेमाल किया गया। मनोज परमार और अन्य द्वारा नियंत्रित फर्मों का उपयोग धन के संचलन और झूठी व्यावसायिक गतिविधि को प्रदर्शित करने के लिए किया गया। ईडी ने कहा है कि सरकारी सब्सिडी वाले लोन मनी के ट्रांसफर और नकद निकासी सार्वजनिक धन के जानबूझकर किए गए गबन को दर्शाता है, जो अपराध की आय का निर्माण करता है। ईडी ने इससे पहले मनोज परमार और अन्य लोगों से संबंधित मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के आष्टा में स्थित लगभग 2.08 करोड़ रुपए मूल्य की 12 अचल संपत्तियों को अस्थायी रूप से जब्त कर लिया था।

दिसंबर 2024 में मनोज और उनकी पत्नी नेहा ने आत्महत्या की थी

सीहोर जिले के आष्टा में कारोबारी मनोज परमार और उनकी पत्नी नेहा आत्महत्या की थी। दिसम्बर 2024 में की गई आत्महत्या के 8 दिन पहले 5 दिसंबर 2024 को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने परमार के इंदौर और सीहोर स्थित चार ठिकानों पर छापा मारा था। यहां से कई चल-अचल और बेनामी संपत्तियों के दस्तावेज जब्त किए थे। साथ ही साढ़े तीन लाख रुपए का बैंक बैलेंस भी फ्रीज किया था। मामला पंजाब नेशनल बैंक में 6 करोड़ रुपए के फ्रॉड से जुड़ा है। इसमें परमार की गिरफ्तारी भी की गई थी। मनोज परमार तब चर्चा में आए थे जब उनके बच्चों ने न्याय यात्रा के दौरान कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को गुल्लक भेंट की थी।

बेटे ने कहा था- ईडी ने मानसिक दबाव बनाया- मनोज परमार सीहोर जिले के हरसपुर तहसील के रहने वाले थे। वे आष्टा क्षेत्र में प्रॉपर्टी के साथ शेयर मार्केटिंग का काम करते थे। यहां उनका मकान और एक कॉम्प्लेक्स भी था। मनोज के तीन बच्चे बेटी जिया (18), बेटे जतिन (16) और यश (13) हैं-। जतिन ने अपने माता पिता की आत्महत्या के बाद कहा था ईडी वालों ने मानसिक तौर पर प्रेशर बनाया था। इस कारण माता-पिता ने सुसाइड किया है। मनोज के भाई और हर्षपुर के सरपंच राजेश परमार ने बताया था कि मनोज पर ईडी का मानसिक दबाव था। इससे पहले भी कार्रवाई हुई थी, इससे वह परेशान हो चुका था। घटना के दौरान पुलिस ने जानकारी दी थी कि मनोज परमार ने 5 पेज का सुसाइड नोट छोड़ा है। 7 पॉइंट्स के इस नोट में 5 दिसंबर को ईडी की रेड के बारे में लिखा है। अफसरों पर प्रताड़ना का आरोप लगाया है।

मनोज परमार के सुसाइड नोट की बड़ी बातें- 5 दिसंबर को ईडी ने सुबह 5 बजे रेड मारी। मेरे घर पर कागज का एक टुकड़ा नहीं छोड़ा। दूसरे के 10 लाख रुपए, ज्वैलरी और ओरिजनल दस्तावेज लेकर गए।

राज्यपाल श्री पटेल ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर अर्पित की पुष्पांजलि

शहीद दिवस पर मौन रखकर दी गई श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने शुक्रवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की और नमन किया। उन्होंने दो मिनट का मौन रखकर शहीदों का पुण्य स्मरण किया। इस अवसर पर लोकायुक्त जस्टिस श्री सतेंद्र कुमार सिंह ने भी राष्ट्रपिता को पुष्पांजलि दी। कार्यक्रम में राज्यपाल के प्रमुख सचिव डॉ. नवनीत मोहन कोठारी भी मौजूद थे।

शहीद दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी जी के चित्र पर राज्यपाल के अपर सचिव श्री उमाशंकर भार्गव सहित लोकभवन के अन्य अधिकारी-कर्मचारियों ने पुष्पांजलि अर्पण और मौन रखकर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

सड़क सुरक्षा केवल कानून नहीं, जन-जीवन से जुड़ा महत्वपूर्ण विषय : आयुक्त

नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा प्रशिक्षण सह कार्यशाला का सफल आयोजन

भोपाल (नप्र)। आयुक्त नगरीय विकास एवं आवास श्री संकेत भोंडवे ने कहा है कि सड़क सुरक्षा केवल कानून का विषय नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक के जीवन से जुड़ा हुआ विषय है। यदि सभी नागरिक यातायात नियमों का पालन करें और आपात परिस्थितियों में सही जानकारी रखें, तो अनेक बहुमूल्य जीवन बचाए जा सकते हैं। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम समाज में जिम्मेदार नागरिक भावना विकसित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने तथा आम नागरिकों को सुरक्षित यातायात के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से गुरूवार को नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने और

नागरिकों को सुरक्षित यातायात के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा प्रशिक्षण सह कार्यशाला में सड़क सुरक्षा, प्राथमिक उपचार, दुर्घटना की स्थिति में त्वरित सहायता एवं जीवन रक्षा से जुड़े विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। आयुक्त नगर निगम सुश्री संस्कृति जैन ने कहा कि सड़क सुरक्षा को लेकर नागरिकों की सहभागिता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने आमजन से अपील की कि हेलमेट एवं सीट बेल्ट का उपयोग अनिवार्य रूप से करें और यातायात नियमों का पालन कर स्वयं सुरक्षित रहें और दूसरों को भी सुरक्षित रखें। इस अवसर पर पुलिस आयुक्त श्री हरिनारायण चारी मिश्रा ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में असामयिक मृत्यु के अधिकांश मामले 25 से 50 आयु वर्ग के युवाओं के होते हैं। इसका प्रमुख कारण हेलमेट एवं सीट बेल्ट का उपयोग न करना है। युवा वर्ग को यह समझना होगा कि थोड़ी सी लापरवाही जीवनभर का नुकसान बन सकती है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे वाहनों में उपलब्ध आधुनिक तकनीकों का सकारात्मक उपयोग करें, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना को कम किया जा सके। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को प्राथमिक उपचार, दुर्घटना स्थल पर सुरक्षित सहायता, आपात सेवाओं से समन्वय और जीवन रक्षा से संबंधित व्यवहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया।

विंध्य में विधायक और महिलाएं सुरक्षित नहीं:सपा प्रदेशाध्यक्ष

कहा- फल-फूल रहा कफ सिरप का अवैध कारोबार

भोपाल (नप्र)। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. मनोज यादव ने विंध्य क्षेत्र की कानून-व्यवस्था को लेकर भाजपा सरकार पर गंभीर

आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि विंध्य में न विधायक सुरक्षित हैं और न ही महिलाएं। हालात इतने भयावह हैं कि खुद भाजपा के जनप्रतिनिधि और उनकी सहयोगी तक असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। डॉ. मनोज यादव ने कहा कि रीवा जिले के एक विधायक कई दिनों से सामने नहीं आए हैं और उन्होंने खुद स्वीकार किया है कि उनकी जान और परिवार को खतरा है। वहीं विधायक नरेंद्र प्रजापति के साथ खुलेआम गाली-गलौज, मारपीट की कोशिश और धमकी का वीडियो सामने आ चुका है। यह साबित करता है कि भाजपा शासन में विधायक भी सुरक्षित नहीं हैं।

सुरक्षा को लेकर उठाए सवाल

उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा पर सवाल उठाते हुए कहा कि सतना में भाजपा का मंडल अध्यक्ष अपनी ही पार्टी की महिला कार्यकर्ता के साथ बेरहमी से मारपीट करता दिखा। इसके अलावा भाजपा सांसद हिमाद्री सिंह की सहयोगी रोशनी शुक्ला की कुचलकर हत्या ने पूरे विंध्य को झकझोर कर रख दिया है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक यह अब तक की सबसे दर्दनाक घटनाओं में से एक थी।

नशे का कारोबार चल रहा- सपा प्रदेश अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल के गढ़ विंध्य क्षेत्र में नशे का अवैध कारोबार चरम पर है। सरकारी आंकड़ों में सामने आया है कि प्रदेश में सबसे अधिक कफ सिरप की खपत विंध्य क्षेत्र में दर्ज की गई है। गांजा तस्करी खुलेआम चल रही है और इसमें प्रभावशाली लोगों के रिश्तेदारों तक की संलिप्तता बताई जा रही है।

डिवाइडर से टकराई साले-बहनोई की बाइक,दोनों की मौत

- **शादी में जाते समय ईंटखेड़ी चौराहा पर हुआ हादसा**

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ईंटखेड़ी इलाके में बाइक सवार साले और बहनोई डिवाइडर से टकरा गए। हादसे में साले की दो दिन पहले इलाज के दौरान मौत हो गई। जबकि बहनोई ने इलाज के दौरान शुक्रवार की सुबह दम तोड़ दिया। हादसा 24 जनवरी की रात हुआ था। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है। घटना की जांच की जा रही है। पुलिस के मुताबिक रहीम पुत्र इब्राहीम (21 साला) और नसीम पिता मुबीन (27 बहनोई) दोनों ऐशबाग की बिसमिल्लाह कॉलोनी में एक महीने पहले ही किराए से रहने आए थे। मूल रूप से दोनों ही नरसिंहपुर के रहने वाले हैं। दोनों भोपाल में मजदूरी करते थे। 24 जनवरी को बाइक पर सवार होकर परिचित की शादी समारोह में शामिल होने के लिए ईंटखेड़ी जा रहे थे। तभी ईंटखेड़ी चौराहा पर उनकी बाइक डिवाईडर से टकरा गई। हादसे में घायल रहीम की इलाज के दौरान 26 जनवरी को मौत हो गई।

बहनोई ने इलाज के दौरान दम तोड़ा

नसीम ने आज दम तोड़ा है। नसीम के शव को पीएम के बाद पुलिस ने आज दोपहर परिजनों के हवाले कर दिया है। पुलिस का कहना है कि घटना स्थल के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं, जिससे हादसे के सही कारणों का खुलासा हो सके। सभी एंगल पर मामले की जांच की जा रही है।

वानिकी सम्मेलन और आईएफएस मीट में सीएम यादव का तंज

मगरमच्छों को वैसे तो पकड़ते हैं पर हमारे वन अफसरों ने छोड़ने का काम किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आईएफएस सर्विस मीट में मगरमच्छों को लेकर तंज कसते हुए कहा है कि वैसे तो मगरमच्छों को पकड़ने की बात होती है, छोड़ने पर सवाल खड़े होते हैं, लेकिन वन विभाग की ओर से मगरमच्छों को छोड़ने का मामला तो कुछ मुश्किल लगा। यहां मगरमच्छों को छोड़ना पकड़ना होता रहता है।

उन्होंने प्रदेश के वन विभाग की गतिविधियों और प्रगति की सराहना करते हुए कहा कि कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीते का पुनर्स्थापना वन विभाग की दक्षता से ही संभव हो पाया। चंबल में घड़ियाल और नर्मदा नदी में मगरमच्छ छोड़ने का अनुभव अद्भुत रहा। उन्होंने कहा कि वन, वन्य जीव और क्षेत्रीय रहवासियों के बीच निर्भयता वाले संबंध वन विभाग की सेवाओं से ही संभव हो पाए।

यादव ने कहा कि अगर हम डरते तो वन में जाते नहीं और वे डरते तो अटैक करते, लेकिन दोनों ने ही इसमें भागीदारी निभाई है। वन विभाग की गतिविधियों का विस्तार नभ, थल, जल सभी ओर है। इसी कारण देश में सबसे अच्छी ग्रोथ वन विभाग की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आईएफएस मीट प्रोफेशनल संवाद के साथ ही पारिवारिक आत्मीयता और सहयोगी संबंधों को मजबूत करने का भी अवसर है।

इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आईएफएस थीम गीत का विमोचन किया और सेवानिवृत्त आईएफएस एवं प्रदेश के पूर्व पीसीसीएफ डॉ. पीबी गंगोपाध्याय को प्रदेश के वनों की सुरक्षा और बेहतरी में उनके योगदान के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड दिया। अवार्ड गंगोपाध्याय की पत्नी गौरी गंगोपाध्याय ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम में वन, पर्यावरण राज्यमंत्री दिलीप सिंह अहिरवार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख वीएन अंबाडे और वन अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित हैं। आईएफएस आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष एचएस मोहंता ने बताया कि दो दिन तक चलने वाले इस कार्यक्रम में आईएफएस अधिकारियों के साथ रिटायर्ड अधिकारी भी शामिल होंगे। इस दौरान वन विभाग की गतिविधियों और एचीवमेंट की जानकारी भी दी जाएगी।

प्रदेश के 19 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे

राजगढ़ सबसे ठंडा, तापमान 3 डिग्री पहुंचा; सतना में 50 मीटर विजिबिलिटी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में मौसम ने एक बार फिर करवट ले ली है। ओले-बारिश का दौर थमने के बाद ठंड और कोहरे का असर तेज हो गया है। शुक्रवार सुबह सतना में घना कोहरा छाया रहा, जिससे विजिबिलिटी घटकर महज 50 मीटर रह गई। हालात ऐसे थे कि कुछ ही दूरी पर दिखाई देना मुश्किल हो गया, वहीं रात के तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई। भोपाल, ग्वालियर समेत प्रदेश के 19 शहरों में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहा। राजगढ़ प्रदेश का सबसे ठंडा स्थान रहा, जहां पारा 3 डिग्री तक पहुंच गया।

मौसम विभाग के मुताबिक, शुक्रवार सुबह सतना, रीवा, ग्वालियर और गुना में घना कोहरा दर्ज किया गया। इसके अलावा भोपाल, दतिया, खजुराहो, टीकमगढ़, नर्मदापुरम, इंदौर, राजगढ़, रतलाम, श्योपुर, उज्जैन, जबलपुर, मंडला, सागर, उमरिया, बालाघाट, विदिशा, अशोकनगर, रायसेन, शाजापुर, आगर-मालवा, देवास, सीहोर और डिंडौरी सहित कई जिलों में कोहरे का असर देखा गया।

अगले 3 दिन बारिश का अलर्ट

31 जनवरी- ग्वालियर, मुरैना, दतिया, भिंड, श्योपुर, शिवपुरी, अशोकनगर, गुना, विदिशा, सागर, निवाड़ी, टीकमगढ़ और छतरपुर में बारिश का अलर्ट।

1 फरवरी- नीमच, मंदसौर, आगर-मालवा, राजगढ़, शाजापुर, सीहोर, भोपाल, विदिशा, सागर, रायसेन, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, श्योपुर, ग्वालियर, भिंड, मुरैना, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना और रीवा में बारिश का अलर्ट। 2 फरवरी- भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, राजगढ़, विदिशा, शाजापुर, सीहोर, रायसेन, नर्मदापुरम, नरसिंहपुर, देवास, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, धार, सागर, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, दमोह, पन्ना, कटनी, सतना, मैहर, उमरिया, शहडोल, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में बारिश का अलर्ट।

मंत्रालय में शहीदों की स्मृति में दो मिनट का मौन धारण

महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यर्पण

भोपाल (नप्र)। मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में महात्मा गांधी के बलिदान दिवस एवं वीर शहीदों की स्मृति में दो मिनट का मौन धारण किया गया। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यर्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्य सचिव श्री जैन ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ शहीदों की स्मृति में 11 बजे दो मिनिट का मौन धारण किया।

इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव, श्री मनु श्रीवास्तव, प्रमुख सचिव श्री पी. नरहरि, सचिव श्री एम. रघुराज, श्री मनीष सिंह सहित मंत्रालय वल्लभ भवन, सतपुड़ा-विंध्याचल भवन के अधिकारी-कर्मचारी एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान 2 फरवरी को मंत्रालय स्थित पटेल पार्क में होगा

भोपाल (नप्र)। मंत्रालय स्थित वल्लभ भाई पटेल पार्क में राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम' एवं राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' का गायन 2 फरवरी को प्रात: 10:15 बजे किया जाएगा। रविवार 1 फरवरी को शासकीय अवकाश होने के कारण राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान का आयोजन 2 फरवरी को किया जायेगा। सामान्य प्रशासन विभाग ने सभी अधिकारी/कर्मचारियों को अनिवार्य रूप से उपस्थित होने के लिए निर्देश दिये हैं। उल्लेखनीय है कि प्रत्येक माह के प्रथम कार्य दिवस पर राष्ट्र गीत एवं राष्ट्र गान का आयोजन किया जाता है।

गुना ट्रेजरी में खजांची ने 2.7 करोड़ रुपए का किया खेल, हिसाब-किताब न मिलने पर एफआईआर दर्ज

गुना(नप्र)। जिला कोषालय गुना में करोड़ों रुपए के शासकीय स्टाम्पों की हेराफेरी का एक बड़ा मामला सामने आया है, जिसमें गुना कलेक्टर के कड़े रुख के बाद थाना कैंट में पदस्थ सहायक ग्रेड-3 (खजांची) केशव वर्मा के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई है। इस पूरे वित्तीय घोटाले का खुलासा तब हुआ जब दिसंबर 2025 में ग्वालियर से आए संयुक्त संचालक कोष एवं लेखा की टीम ने कोषालय का निरीक्षण किया।

स्टाम्प घोटाला आया सामने- जांच के दौरान डिजिटल रिकॉर्ड और भौतिक रूप से उपलब्ध स्टाम्प स्टॉक के बीच 3 करोड़ 74 लाख रुपये से अधिक का अंतर पाया गया। हालांकि बाद में कुछ चालानों की प्रविष्टियां मिलने के बाद अंतर की राशि 2,70,25,310 रुपये निर्धारित की गई, जिसका हिसाब देने में संबंधित कर्मचारी पूरी तरह विफल रहा।

खजांची के खिलाफ केस दर्ज

वरिष्ठ कोषालय अधिकारी राकेश कुमार द्वारा थाने में दी गई शिकायत के अनुसार, आरोपी खजांची केशव वर्मा ने वर्ष 2018 से 2025 की लंबी अवधि के दौरान मध्य प्रदेश कोषालय संहिता 2020 के नियमों को ताक पर रखकर कार्य किया। जांच में यह तथ्य उजागर हुआ कि आरोपी ने बिना किसी सक्षम अनुमति, बिना कंप्यूटर प्रविष्टि और बिना किसी पावती के ही स्टाम्प वेंडरों को भारी मात्रा में स्टाम्प जारी कर दिए थे। सबसे गंभीर बात यह रही कि आरोपी ने सुरक्षित रखे जाने वाले 'डबल लॉक सिस्टम' की मर्यादा का उल्लंघन किया और बिना अनुमति के स्टाम्पों को निकालकर शासन को करोड़ों रुपये की आर्थिक चपत लगाई।

संपादकीय

सुप्रीम कोर्ट की रोक: सभी को राहत

यूजीसी (यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन) द्वारा देश के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में जातीय भेदभाव रोकने के लिए जारी ताजा और विवादित इक्विटी नियमों के बाद देश भर में मचे बवाल के उपरांत सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश पर रोक लगाकर न केवल सामान्य वर्ग को बल्कि सभी को और खासकर केन्द्र में सत्तारूढ़ भाजपा को राहत दी है। सुप्रीम कोर्ट ने माना कि सयूजीसी प्रमोशन ऑफ़ इक्विटी रेग्युलेशंस 2026' के प्रावधानों में प्रथम दृष्ट्या अस्पष्टता है और इनके दुरुपयोग की आशंका है। कोर्ट ने इन नियमों के लागू होने पर फ़िलहाल रोक लगाते हुए सुझाव दिया कि विशेषज्ञों की एक समिति इन नियमों में खामियों को भरने पर विचार कर सकती है।

मुख्य न्यायाधीश ने यह भी कहा कि ऐसा नए नियमों का मसौदा तैयार करते समय कुछ पहलुओं की नजरअंदाज किया गया। मामले की अगली सुनवाई 19 मार्च को होगी। इसे रोहित वेमुला की मां की ओर से 2012 के यूजीसी नियमों को चुनौती देने वाली याचिका के साथ सुना जाएगा। दरअसल 2012 के नियमों में जहां केवल 'भेदभाव' की बात की गई थी वहीं 2026 में लाए गए संशोधित नियमों में भेदभाव की परिभाषा में 'जाति आधारित भेदभाव' शब्द को जोड़ा गया है। नए नियमों में 'जाति-आधारित भेदभाव' का मतलब सिर्फ़ जाति या जनजाति के आधार पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों के सदस्यों के विरुद्ध किया जाने वाला भेदभाव है। नए नियमों के तहत हर विश्वविद्यालय और कॉलेज को समान अवसर केंद्र या इक्वल ऑपर्चुनिटी सेंटर स्थापित करना होगा। इस केंद्र का काम वंचित समुदायों के हितों से जुड़ी योजनाओं पर नज़र रखना, छात्रों और कर्मचारियों को पढ़ाई, सामाजिक मामलों और पैसों से जुड़ी सलाह देना, परिसर में विविधता और सबको साथ लेकर चलने का माहौल बढ़ाना और ज़रूरत पड़ने पर ज़िला और राज्य की कानूनी सेवा संस्थाओं की मदद से कानूनी सहायता उपलब्ध कराना होगा। इस केंद्र के तहत एक समता समिति बनाई जाएगी, जिसकी अध्यक्षता संस्थान के प्रमुख करेंगे। इस समिति में वरिष्ठ शिक्षक, सिविल सोसायटी के सदस्य और छात्र शामिल होंगे। यह समिति भेदभाव से जुड़ी शिकायतों की जांच करेगी। प्रत्येक संस्थान को एक चौबीसों घंटे उपलब्ध 'समता हेल्पलाइन' चलानी होगी। अगर किसी छात्र, शिक्षक या कर्मचारी को लगे कि उसके साथ भेदभाव हुआ है तो वह हेल्पलाइन, ऑनलाइन पोर्टल या समान अवसर केंद्र को ईमेल के जरिए शिकायत दर्ज कर सकता है। अनुरोध करने पर शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखी जाएगी। इन नियमों की सबसे बड़ी खामी यह थी कि इसमें सवर्ण वर्ग को स्वतः अपराधी मान लिया गया था। क्योंकि जो समितियां बनाई जाएंगी, उनमें एससी, एसटी और ओबीसी के प्रतिनिधियों को तो रखा गया है, लेकिन सवर्ण वर्ग के किसी प्रतिनिधि का प्रावधान नहीं है। सारा बवाल इसी को लेकर है। उधर कोर्ट का यह भी कहना है कि भेदभाव के मामले में उसने केवल एससी, एसटी के साथ होने वाले उत्पीड़न को रोकने के लिए कमेटियां बनाने के लिए कहा था फिर क्यों इसमें ओबीसी को यूजीसी ने अपने मन से क्यों जोड़ा? यूजीसी के इन नियमों पर सामान्य वर्ग के छात्र सड़कों पर उतर आए। यहां तक भाजपा में भी सामान्य वर्ग के सांसद और विधायक इन नियमों से नाराज थे। छात्रों की नाराजी के बाद केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने यह सफाई देने की कोशिश की किसी के साथ अन्याय नहीं होगा। लेकिन कैसे, यह वो भी नहीं बता सके। दूसरे, यूजीसी में काम कैसे हो रहा है, यह इसकी बानगी है। क्या एक भी व्यक्ति वहां इतना समझदार नहीं है कि नियमों की इस बड़ी खामी को पकड़ पाता। नियम जारी करने से पहले उन्हें अनुमोदन के लिए संसद की स्थायी कमेटी को भी नहीं भेजा गया।

शंकराचार्य जी भारी मन से चले गए

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा में चेयर प्रोफेसर हैं।

भारत जिस सनातन की बात करता है उसमें शंकराचार्य का स्थान बहुत ही ऊंचा है। सनातन सभ्यता में शंकराचार्य जी का सम्मान का अर्थ है भारत का सम्मान। विश्व में आदि शंकराचार्य जी महाराज ने जिन चार पीठों की स्थापना की थी, उसका अपना महत्व है। आज़ जब प्रयागराज में उन पीठों के एक शंकराचार्य को लज्जित किया गया। ब्राह्मण बटुकों, बृद्धों, महिलाओं व संन्यासियों को प्रशासन के लोगों ने बुरी तरह से मारा-पीटा, यह कदाचित भारतीय इतिहास का एक काला अध्याय है। हमने अपने देश की अपनी विरासत का अपमान किया। हमने अपने देश की गरिमा के साथ खिलवाड़ किया।

भारत ने अपना एक नया इतिहास दर्ज़ किया है चाहे इसको भारतीय महसूस करें या न करें। देश के शंकराचार्य स्वामी श्रीयुत अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी को अंततः प्रयागराज के संगम तट से भारी मन से जाना पड़ा। उन्होंने बहुत कोशिश की। प्रतीक्षा की। उम्मीद की। विश्वास किया। अपनी क्षमा को उन्होंने साधारण बनाकर मुख्य मंत्री व प्रशासन के अधिकारीयों को बार-बार क्षमा करने की बात की। लेकिन दुर्भाग्य है इस देश का, जहाँ शंकराचार्य का सम्मान बिलकुल नहीं है। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी भारी मन से प्रयागराज से चले गए।

भारत जिस सनातन की बात करता है उसमें शंकराचार्य का स्थान बहुत ही ऊंचा है। सनातन सभ्यता में शंकराचार्य जी का सम्मान का अर्थ है भारत का सम्मान। विश्व में आदि शंकराचार्य जी महाराज ने जिन चार पीठों की स्थापना की थी, उसका अपना महत्व है। आज़ जब प्रयागराज में उन पीठों के एक शंकराचार्य को लज्जित किया गया। ब्राह्मण बटुकों, बृद्धों, महिलाओं व संन्यासियों को प्रशासन के लोगों ने बुरी तरह से मारा-पीटा, यह कदाचित भारतीय इतिहास का एक काला अध्याय है। हमने अपने देश की अपनी विरासत का अपमान किया। हमने अपने देश की गरिमा के साथ खिलवाड़ किया। यदि हमारे देश में साधु, संत, महात्माओं का अपमान हो। यदि हमारे देश के ऋषियों-महर्षियों की रचनाओं का अपमान किया जाता हो। यदि हमारी अस्मिता व पहचान के साथ गन्दी, भद्दी व अतार्किक बातें जोड़कर ज्यादा प्रोग्रेसिव बनने की चेष्ठा की जा रही हो तो ऐसे में इस भारत का क्या होगा, समझ में नहीं आता।

देश में सत्ता ने संत परंपरा के साथ द्वंद्व छेड़कर भारत का कम से कम भला तो नहीं किया है। देश में जिस भी प्रकार से भारतीय जनमानस की सरकार चले लेकिन भारतीय संतों, महात्माओं, शंकराचार्यों को सम्मान बराबर मिलना चाहिए। उनका अपमान नहीं किया जाना चाहिए। सत्ता के पक्ष में और सत्ता के विपक्ष में संतों को आइडेंटिफाई करके उनके साथ किया जाना वाला व्यवहार देश हित में नहीं है। सतुआ बाबा को भारी महंगी गाड़ियों के साथ मेला क्षेत्र में घूमने, आने-जाने की अनुमति देखी गयी किन्तु स्वामी श्रीयुत अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी को संगमनोज पर पालकी से उतरकर स्नान करने के लिए विवश किया गया। उनके साथ रहने वाले सेवार्थियों, ब्राह्मण बालकों को क्रूरता के साथ पीटा गया। यह सत्ता का चरित्र जो इतिहास में अंकित हुआ, सदियों तक अमिट हो चुका है। यदि स्वामी श्रीयुत अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज को वहां जाने ही दिया गया होता और स्नान की ठीक व्यवस्था कर दी गयी होती तो सरकार का क्या घट जाता? प्रशासन की बर्बरता के बाद भी मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ यदि क्षमा ही मांग लेते तो

क्या घट जाता? इसकी जगह उनकी पहचान, शंकराचार्य होने का प्रमाण पत्र माँगा जाने लगा। इससे कोई भी शंकराचार्य आहत हो सकता है। आम आदमी से जब उसके भारत में जन्म लेने के बाद नागरिकता का प्रमाण पत्र माँगा जाता है तो उसे बुरा लगता है, वह तो भगवन शंकर के अवतार हैं। शंकराचार्य हैं। विवादों में घिरा विगत पंद्रह दिवस मौनी अमावस्या के बाद का समय निश्चय ही भारतीय सनातनियों के लिए बहुत पीड़ादायी रहा है। एक अजीब बात इसमें यह रही कि देश की राजनीतिक पार्टियाँ इसमें अपने-अपने तरीके से अवसर ढूंढती रहीं। यद्यपि स्वामी जी ने किसी की दाल गलने नहीं दी।

अब स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी की भी बात कर लें। उन्होंने सदैव दो बातों पर ज्यादा जोर दिया। एक, गाय हमारी माता है। गाय की रक्षा की जाए। गो-हत्या बंद हो। गाय को राष्ट्रमाता घोषित किया जाए। सनातन सभ्यता में धर्म की स्थापना हेतु भी गाय की सेवा-सुश्रुषा व सम्मान को धर्मसम्मत माना गया है। दूसरी उनकी इच्छा है कि विदेशों में बीफ के निर्यात न हों। शंकराचार्य को धर्मसम्मत सम्मान मिले। माना की 1947 के बाद देश को आज़ादी मिलने के साथ हमने संविधान को स्वीकार किया। उसका सम्मान होना चाहिए लेकिन यह भारत वर्ष अपने प्राचीन काल से आज के संविधान से संचालित नहीं होता था। यहाँ की अपनी धर्म-संवहन और जीवनचर्या में अपनी संहिता रही है जिससे यह देश इतने लंबे समय से अपनी यात्रा तय कर रहा है। इसका अर्थ है कि हम जिस दायरे में भारत को रखकर देखना चाहते हैं, उससे परे भी कुछ चीजें विद्यमान रही हैं और भारत उस विरासत व संहिताओं के साथ इतने वर्षों से अपने अस्तित्व में है। इसलिए शंकराचार्य अब कुछ भी नहीं हैं, ऐसे भ्रम को मन से निकालकर सरकारों को भारतीय-बोध को समझना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो हम आज कौन सी भारतीय ज्ञान परंपरा पर बात कर रहे हैं? तब तो ऐसी आत्मबोध की बात को बिलकुल बंद कर देना चाहिए। हमारे देश की यह बहुत बड़ी हार है जब हम अपने सांस्कृतिक संवाहकों को पहचानने से मना कर रहे हैं और उन्हें प्रमाण-पत्र देने की बात कर रहे हैं।

यह बात तब और अचंभित करने वाली रही जब योगी सरकार के एक उप मुख्यमंत्री ने शंकराचार्य को भगवान् कहा और अपनी राजनीति चमकाने की कोशिश की। अगर वह व्यक्ति सरकार का हिस्सा है तो सरकार के साथ होना चाहिए। हाँ, एक चूक ज़रूर शंकराचार्य जी की ओर से महसूस हुई कि जैसे ही केशव प्रसाद मौर्या ने शंकराचार्य भगवान के पक्ष में कहा तो उन्होंने यह कहा कि इस प्रदेश का मुख्य मंत्री केशव प्रसाद मौर्या को होना चाहिए। ऐसे में शंकराचार्य जी को अपनी निरपेक्ष दृष्टि से बातें करनी चाहिए थी। कौन कितना चतुराई से खेल खेल रहा है, इसे भी शंकराचार्य जी को समझकर ही कुछ अभिव्यक्त करना चाहिए था लेकिन नहीं उन्होंने ज़रूर ज़ल्दी में कुछ कहा, जो कि भारत के लिए हित में था या नहीं, यह वे स्वयं सोचेंगे तो उन्हें खुद इस बातका एहसास होगा।

अब सबकुछ जो प्रयागराज में हुआ। शंकराचार्य जी के जाने से धीरे-धीरे दूसरी बहसों के साथ ओझल होगा। हो सकता है लोग भूल जाएँ। हो सकता है जिन्हें उन समस्याओं से जूझना पड़ा वे आजीवन स्मरण रखें लेकिन भारत का इतिहास इस कालखंड को कभी नहीं भूलेगा। शंकराचार्य का भारी मन से जाना भारत का अपमान है।

सरकारें भारतीय परंपरा में यदि शंकराचार्य के बरक्स अपन इगो को रखेंगी, घमंड करेंगी, अनावश्यक प्रलाप करेंगी और अपनी ही विरासत से उसके सही और गलत होने के लिए प्रमाणित करने को कहेंगी तो यह ठीक बात नहीं है। क्या वोटबैंक, सत्ता, सत्ता-समीकरण और अपने अस्तित्व को त्यागकर भारत हम होना ही पसंद नहीं करने लगे हैं क्योंकि भारत तो अपनी भारतीयता में ही अपना अस्तित्व रखता है। यहाँ राजधर्म भी त्याग और करुना, प्रेम और सौहार्द से अपनी नैतिक भूमि की खोज करते रहे हैं। यहाँ किसी भी अतिरेक में जीने वाली सत्ता को कभी सम्मान नहीं मिला है। इसलिए अगर हम पश्चिम से आज कहते हैं पूर्व की ओर देखो ! तो प्रश्न यह है कि वे देखेंगे तो क्या देखेंगे? क्या हमारा यही आचरण हमें किसी पश्चिम के देश को भारत की ओर सम्मान की दृष्टि से देखने के लिए आमंत्रित कर सकेगा? ऐसे में आज जो चिंता भारत के बारे मने की जानी आवश्यक है वह यह है कि हम अपनी वास्तविक पहचान को न खोएं और न ही ऐसा वातावरण तैयार करें जो भारत को शर्मिन्दा करता हो। हम यंत्रवत होकर नहीं चल सकते क्योंकि भारत तो भावनाओं में भी अपने शील के लिए जाना जाता है।

स्वच्छ हवा का संकट और घटते वित्तीय संसाधन

क्लीन एयर फंड की रपट

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र स्तंभकार हैं।

स्वच्छ हवा आज दुनिया की सबसे बुनियादी ज़रूरतों में शामिल है, लेकिन वैश्विक वित्तीय व्यवस्था इसे अब भी प्राथमिकता नहीं मानती। 'क्लीन एयर फंड' की ताज़ा वैश्विक रपटरपट ने एक बार फिर इस कड़वी सच्चाई को सामने रखा है कि दुनिया के तमाम देश और विकास एंजेसिया स्वच्छ हवा के लिए बड़े-बड़े वादे तो जरूर करती हैं, लेकिन उनका धन उन्हीं परियोजनाओं में जा रहा है, जो हवा को और ज़हरीला बना रही हैं। यह स्थिति केवल नीतिगत विफलता नहीं है, बल्कि एक ऐसे वैश्विक अन्याय का उदाहरण है, जिसका सबसे भारी बोझ भारत जैसे विकासशील देशों को उठाना पड़ रहा है। यह चिंताजनक स्थिति है और इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

'क्लीन एयर फंड' की रपट के मुताबिक 2023-24 के दौरान कई देशों की सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने जीवाश्म ईंधन को लंबे समय तक बनाए रखने वाली परियोजनाओं में वित्तीय राशि 80 फीसद बढ़ाकर 9.5 अरब डॉलर कर दी। इसके उलट, स्वच्छ हवा और वायु गुणवत्ता सुधार के लिए दी जाने वाली सहायता घटकर 3.7 अरब डॉलर रह गई, जो कुल वैश्विक विकास सहायता का महज़ एक फीसद ही है। यह आँकड़ा बताता है कि विकास वित्त और मानव स्वास्थ्य के बीच की खाई कितनी गहरी होती जा रही है।

हर वर्ष होने वाले अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मेलन चाहे वे जलवायु पर हों या स्वास्थ्य पर, ये स्वच्छ हवा को मानव अधिकार के रूप में स्वीकार करते हैं। मगर जब बजट आवंटन की बात आती है, तो वही सरकारें और संस्थाएँ पीछे हट जाती हैं।

ऐसा लगता है कि वैश्विक निर्णय लेने वाली संस्थाएँ प्रदूषण से होने वाली मौतों और बीमारियों की वास्तविक कीमत को समझने के बजाय आर्थिक और कारोबारी हितों को ज़्यादा महत्व दे रही हैं। इससे कई देशों के समाने जोखिम लगातार बढ़ रहा है। स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब दुनिया की सबसे बड़ी विकास एजेंसी यूएसएड के बंद होने और विश्व बैंक पर जीवाश्म ईंधन ऋण बढ़ाने के दबाव जैसी चर्चा सामने आती हैं। इन फैसलों ने स्वच्छ हवा के लिए चल रहे वैश्विक प्रयासों की रीढ़ कमजोर कर दी है। क्लीन एयर फंड की मुख्य कार्यकारी जेन बर्स्टन की चेतावनी इस संदर्भ में बेहद अहम है अगर दिशा नहीं बदली गई, तो आने वाले वर्षों में करोड़ों और लोग जहरीली हवा के कारण जान गंवाएँगे।

गौरतलब है कि आज वायु प्रदूषण दुनिया भर में हर साल लगभग 57 लाख लोगों की जान ले रहा है। यह संख्या 2040 तक 62 लाख तक पहुँच सकती है। यह कोई संभावित खतरा नहीं, बल्कि एक चलती-फिरती महामारी है, जो चुपचाप समाज के सबसे कमजोर तबकों को निगल रही है। यह संकट सिर्फ़ स्वास्थ्य से जुड़ा नहीं है; यह बताता है कि वैश्विक राजनीति में किसकी ज़िंदगी की कीमत क्या है। लिहाजा, अब इसे समझने और सचेत होने की जरूरत है।

वैश्विक रिपोर्ट यह भी दिखाती है कि स्वच्छ हवा के लिए उपलब्ध सीमित वित्तीय अनुदान का वितरण बेहद असमान है। वर्ष 2023 में फिलीपींस, बांग्लादेश और चीन को वायु गुणवत्ता सुधार के लिए 65 फीसद बाहर से सहायता राशि मिली, जबकि उप-सहारा अफ्रीका के लिए सहायतासहायता राशि 91 फीसद घटकर केवल 1.18 करोड़ डॉलर रह गई। यानी जिन इलाक़ों में स्वास्थ्य ढाँचा सबसे कमजोर है, वहीं मदद सबसे कम पहुँच रही है।

भारत इस वैश्विक असमानता का सबसे बड़ा उदाहरण है। दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में भारत के शहर लगातार ऊपर बने हुए हैं। दिल्ली, पटना, लखनऊ, कानपुर, धनबाद, गाजियाबाद ये नाम अब केवल शहर नहीं, बल्कि वैश्विक प्रदूषण चेतावनी बन चुके हैं। सर्दियों के महीनों में उत्तर भारत का बड़ा हिस्सा गैस चैंबर में बदल जाता है, जहाँ बच्चों, बुज़ुर्गों और बीमार लोगों के लिए साँस लेना तक मुश्किल हो जाता है।

भारत को स्वच्छ हवा के लिए अंतरराष्ट्रीय सहायता में प्राथमिकता नहीं मिलती। न तो वायु प्रदूषण पर शोध के लिए पर्याप्त सहयोग मिलता है, न ही स्थानीय समाधान विकसित करने के लिए दीर्घकालिक निवेश। जबकि भारत की स्थिति यह है कि यहाँ वायु प्रदूषण से हर साल करीब 95 अरब डॉलर की आर्थिक क्षति होती है। यह नुकसान केवल अस्पतालों के बढ़ते खर्च में नहीं दिखता, बल्कि काम के दिनों की हानि, स्कूल न जा पाने वाले बच्चों, घटती उत्पादकता और जीवन की गिरती गुणवत्ता के रूप में सामने आता है।

भारत जैसे देश के लिए वायु प्रदूषण केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं है। यह गरीबी, असमानता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट से सीधा जुड़ा हुआ मुद्दा है। गरीब बस्तियाँ, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मज़दूर, सड़क किनारे रहने वाले लोग ये सभी सबसे ज़्यादा प्रदूषण झेलते हैं, लेकिन निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनकी आवाज़ सबसे कम सुनी जाती है।

अगर वैश्विक वित्तीय सहायता जीवाश्म ईंधन आधारित परियोजनाओं पर ही केंद्रित रही, तो भारत का स्वच्छ ऊर्जा अभियान धीमा पड़ेगा। कोयला आधारित बिजली संयंत्र, डीज़ल आधारित परिवहन और प्रदूषण फैलाते उद्योग न केवल जलवायु संकट को गहराएँगे, बल्कि भारत को एक स्थायी स्वास्थ्य आपदा की ओर धकेल देंगे। यह भी समझना ज़रूरी है कि वायु प्रदूषण किसी एक देश तक सीमित नहीं रहता। यह सीमाओं के पार फैलता है। दक्षिण एशिया में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल एक साझा वायु क्षेत्र में साँस लेते हैं। इसलिए वैश्विक वित्त की दिशाहीनता का असर पूरे क्षेत्र पर पड़ता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2040 तक मानवजनित वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों को आधा करने का लक्ष्य रखा है। जी20 ने भी वायु गुणवत्ता को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है। मगर सच्चाई यह है कि वैश्विक राजनीति घोषणाओं में तेज़ी देखी जाती है लेकिन संसाधन मुहैया कराने की प्रक्रिया बेहद धीमी है। जब तक नीतियों और बजट के बीच की यह खाई बनी रहेगी, तब तक कोई भी लक्ष्य कागज़ से बाहर नहीं आ पाएगा। क्लीन एयर फंड की रिपोर्ट समाधान का रास्ता भी सुझाती है वित्त पोषण को जीवाश्म ईंधन के विस्तार से हटाकर स्वच्छ हवा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छ ऊर्जा की ओर मोड़ा जाए। यह केवल तकनीकी बदलाव नहीं है, बल्कि मूल्यों का बदलाव है। यह पूरी दुनिया के लिए जरूरी भी है।

वायु प्रदूषण कोई प्राकृतिक आपदा नहीं है। यह राजनीतिक फैसलों, आर्थिक प्राथमिकताओं का अभाव इच्छा शक्ति की कमी और वैश्विक असमानता का परिणाम है। अगर विकास बैंक और वैश्विक संस्थाएँ अब भी अपनी दिशा नहीं बदलतीं, तो विश्व स्वास्थ्य संगठन और जी20 के लक्ष्य केवल खोखले घोषणापत्र बनकर रह जाएँगे। लेकिन अगर समय रहते दिशा बदली जाए, तो यह लड़ाई सिर्फ़ प्रदूषण की नहीं रहेगी बल्कि न्याय, समानता और हर इंसान को स्वच्छ साँस लेने के अधिकार की लड़ाई बन सकती है।

अंधी दौड़ में भटकती युवा पीढ़ी

दृष्टिकोण

काशीनाथ खरनाल

भगवान ने हमें दो आँखें दी हैं, जाहिर है—देखने के लिए। जो सामने आता है या आसपास होता है, वह दिखता है। देखने के अपने-अपने अंदाज़ होते हैं—प्यार से देखना, गुस्से से देखना और घूरकर देखना। घूरकर देखने के भी दो अंदाज़ होते हैं—प्यार से घूरना और गुस्से से घूरना। मैं यहाँ 'घूरकर' देखने के बारे में बात कर रहा हूँ। आजकल स्कूल और कॉलेज में सह-शिक्षा का प्रचलन है, अतः लड़के-लड़कियों का संपर्क में आना स्वाभाविक है। लड़के-लड़कियां बाहरी शहरों, कस्बों या गाँवों से आकर पढ़ते हैं। उन्हें प्रायः हॉस्टल में रहना पड़ता है या कुछ लोग बाहर किराए का कमरा लेकर रहते हैं। कॉलेज में कैंटीन वह जगह है, जहाँ सभी आकर चाय-नाश्ता करते हैं।

एक खूबसूरत लड़की, जो साधारण परिवार से है, वह रोज़ाना कैंटीन आती है। उसने देखा है कि उसके साथ की ज्यादातर लड़कियों ने लड़कों से दोस्ती कर ली है और वे उनके साथ मज़े में हैं। उसका मन भी चाहता है कि उसका भी कोई लड़का दोस्त बने, जो उसकी इच्छाओं की पूर्ति कर सके। कैंटीन में उसकी नज़र एक स्मार्ट लड़के पर पड़ती है, जो कॉलेज अपनी कार से आता है। उसके कई दोस्त हैं, जिन पर वह काफी पैसा खर्च करता है। उस लड़के को देखकर वह उसकी ओर आकर्षित हो जाती है। कैंटीन में वह ऐसी जगह बैठती है, जहाँ वह लड़के की नज़र में आ सके। लड़का आता है और वह उसे घूरकर देखती है। लड़का भी साधारण नज़रों से उसकी ओर देखता है; शायद लड़की उसे अच्छी लगी। इसी 'देखा-देखी' में उनकी दोस्ती हो जाती है। लड़की की इच्छा है कि लड़का उसे अच्छे कपड़े दिलवाए, अच्छा मोबाइल फोन दिलाए और महँगे होटलों में खाना खिलाए।

अब लड़का-लड़की साथ-साथ घूमने लगते हैं—कभी मॉल, कभी होटल तो कभी पिकनिक स्पॉट पर। होटल में जहाँ पहले वे चाय, कॉफी या शीतल पेय लेते थे, अब बीयर पीने लगे हैं। धीरे-धीरे बात वोदका और व्हिस्की तक पहुँच जाती है। साथ ही, वे साथ जीने-मरने की कसमें भी खाने लगते हैं।

एक बार वे अपने एक दोस्त के जन्मदिन की पार्टी मनाने के लिए एक रिसॉर्ट में जाते हैं। देर रात तक खाना-पीना चलता है और सुबह पार्टी खत्म होती है। सभी अपने-अपने ठिकानों की ओर लौटने के लिए निकलते हैं। लड़का और लड़की भी अपनी कार से निकलते हैं। दोनों ने अच्छी-खासी शराब पी रखी है। लड़का गाड़ी चला रहा होता है और रफ्तार बढ़ती जाती है। अचानक आगे खड़े एक टैंकर से उनकी कार टकरा जाती है। उनके 'साथ-साथ मरने' का सपना एक दर्दनाक हादसे में पूरा हो जाता है।

एक अन्य दृश्य- पान की एक दुकान पर अक्सर जवान लड़के सिगरेट या नशीले पदार्थ लेने आते हैं। एक दिन एक लड़का सिगरेट ले रहा था, उसने देखा कि सामने खड़ा एक लड़का उसे घूर रहा है। पहले तो उसने नज़रअंदाज़ किया और चला गया। दूसरे दिन वह फिर आया और देखा कि वही लड़का उसे फिर घूर रहा है। घूरने वाले लड़के की हरकतें कुछ अजीब थीं, शायद उसने गाँजा या चरस पी रखा था। घूरने की बात पर दोनों में कहा-सुनी हो गई। जैसा कि आजकल होता है, किसी ने भी उनके झगड़े में हस्तक्षेप नहीं किया। घूरने वाले लड़के ने चाकू निकाला और दूसरे पर चार-पांच वार कर दिए। भगदड़ मची, पुलिस आई और उसने लड़के को गिरफ्तार कर लिया। इस तरह एक और मर्डर केस दर्ज हुआ। इंदौर शिक्षा का बड़ा केंद्र है। यहाँ लड़के-लड़कियां अपना ग्रुप बनाकर घूमते-फिरते हैं। शनिवार-रविवार को ज्यादातर युवा नाइट क्लब या होटल जाते हैं, जहाँ नाचने-गाने की व्यवस्था होती है। एक नाइट क्लब में पास-पास की टेबल पर बैठे दो ग्रुप्स में झगड़ा हो गया। मसला यह था कि किसी ने किसी की गर्लफ्रेंड को घूरकर देख लिया था। पहले होटल के अंदर मारपीट हुई, फिर बाहर सड़क पर 'उठा-पटक' होने लगी। लोगों ने बीच-बचाव तो नहीं किया, हाँ, वीडियो ज़रूर बनाते रहे। बड़े शहरों में ये दृश्य अब आम हो चले हैं। लड़के-लड़कियां शहरों में अकेले रहते हैं और उन पर नियंत्रण करने वाला परिवार का कोई सदस्य नहीं होता। यह स्वच्छंदता उन्हें अस्थायी आज़ादी तो दे देती है, पर वे यह नहीं समझ पाते कि इससे उनका ही भविष्य दांव पर लगा है। यह आज़ादी जिसे आज की युवा पीढ़ी अपना अधिकार समझ रही है, वास्तव में एक छलावा है। यदि समय रहते उन्होंने अपनी प्राथमिकताओं को नहीं पहचाना और मनोरंजन व अनुशासन के बीच की बारीक रेखा को नहीं समझा, तो पछतावे के अलावा कुछ हाथ नहीं आएगा। याद रहे, उड़ान वही सफल होती है जिसमें पंख आज़ाद हों, मगर जुड़ाव अपनी ज़मीन और संस्कारों से हो।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बंद गोदाम के आखिरी कोने में सहेजा हुआ बुद्धिजीवी

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

आलसी अपने को ईश्वर का सच्चा पुत्र मानता है। काम या परिश्रम करके वह पालनहार परमपिता की महिमा पर बट्टा नहीं लगाना चाहता है। वह आलस्य के आनंद रस में इतना पगा होता है कि उसे निष्क्रिय जीवन वरदान लगता है । वह सर्वज्ञानी होता है । उसे नया पुराना कुछ भी करने या सीखने की जरूरत महसूस नहीं होती है। असल में वह बंद गोदाम के आखिरी कोने में सहेजा हुआ बुद्धिजीवी होता है। उसे अच्छी तरह से पता है कि जीवन चार दिनों का है, ओन्ली फॉर फ़ोर डेज़, यू नो ! ना यहां कुछ लेकर आए थे ना यहां से कुछ लेकर जाएंगे।

आलसी आदमी भी दूसरे तमाम प्राणियों की तरह जीवित शरीर होते हैं । फर्क केवल उनके जिंदा रहने के तरीके में देखा जा सकता है। जहाँ आम लोग जीने के लिए भागते दौड़ते, खटते रहते हैं वहीं आलसी लीक से हट कर एक मिसाल पैदा करते हैं । वे जरूरी / गैरजरूरी किसी भी तरह की हलन चलन के विरुद्ध क्रांति संदेश देते हुए समाज को आराम की दिशा देते हैं । आलसीजी मानते हैं कि बैठे रहकर या पड़े रहकर भी मस्त जीवन जिया जा सकता है। आलस्य एक तरह का दिव्य गुण है । शेषनाग पर भगवान भी तो सदा सदा लेटायमान रहते हैं । आलसी अपने को ईश्वर का सच्चा पुत्र मानता है। काम या परिश्रम करके वह पालनहार परमपिता की महिमा पर बट्टा नहीं लगाना चाहता है। वह आलस्य के आनंद रस में इतना पगा होता है कि उसे निष्क्रिय जीवन वरदान लगता है । वह सर्वज्ञानी होता है । उसे नया पुराना कुछ भी करने या सीखने की जरूरत महसूस नहीं होती है। असल में वह बंद गोदाम के आखिरी कोने में सहेजा हुआ बुद्धिजीवी होता है। उसे अच्छी तरह से पता है कि जीवन चार दिनों का है, ओन्ली फॉर फ़ोर डेज़, यू नो ! ना यहां कुछ लेकर आए थे ना यहां से कुछ लेकर जाएंगे। यह दुनिया मुफ़्त सराय है जिसमें आलसी खाते पीते, आराम करते हैं और चले जाते हैं। पचास प्रतिशत दानों पर आलसियों का नाम भी लिखा होता है । वक्त से पहले और भाग्य से ज्यादा किसी बिके हुए न्यायाधीश को भी नहीं मिलता है। लीडर करे न चाकरी मंत्री करे ना काम; संत सर्टिफाइड कहें सबको देता राम । ऐसे में बिना बात हाड़ तोड़ने का कोई मतलब नहीं है। बैल दिन भर काम करते हैं और बैल ही बने रहते हैं, घोड़ा नहीं हो जाते हैं। आलसी मानता है कि हमसे पहले हजारों परिश्रमी आए और तमाम काम करके चले गए लेकिन कोई उन्हें नहीं जानता। पिछले दिनों एक जिम्मेदार नेता ने बताया कि गाँधी जी तक को कोई नहीं जानता था । वो तो एटनबरो ने फिल्म बनाई तब कहीं जा कर दुनिया को पता पड़ा । इसीलिए भगवान कहते हैं कि तू मेरा हो जा और अपनी चिंताएं मुझ पर छोड़ कर सो जा । बताइए क्या आज के समय में भगवान पर विश्वास करना गलत है! नहीं नहीं, बोलिए, गलत है तो कहिये जरा ।

एक बात और, जो लोग काम करते हैं उनसे जाने अनजाने में कानून टूटता ही है। आलसी कानून के सम्मान के लिए भी काम नहीं करता है। न रहे बांस न बजे बंसी । उसे किसी नेता या सरकार से कोई शिकायत नहीं है। कोउ साला नृप होए हमै का हानि । इसलिए वोट देकर विरोध या समर्थन दर्ज कराने की उसे कभी जरूरत महसूस नहीं हुई। ऐसा नहीं है कि आलसी कुछ सोचता विचारता नहीं है। मतदान वाले दिन सुबह से सोचता है कि वोट दूं या नहीं दूँ, नहीं दूं या दे ही दूं। किसी निर्णय पर पहुंचने से पहले शाम हो जाती है और वह भगवान को धन्यवाद कहकर वापस लुढ़क जाता है।

जब आप रुचि से इतना पढ़ चुके हैं तो यह भी जान लीजिए कि जन्मजात आलसी साउण्ड प्रूफ होते हैं। लोगों के कहने सुनने को, तानों को एक कान से सुनकर दूसरे कान से 'सट्ट से' निकाल देते हैं। इसी गुण के कारण लोग उन्हें सरकार तक कह देते हैं लेकिन इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है । कुछ आलसी संत टाइप होते हैं। वे मानते हैं कि कर्म छोड़ा है सांसारिक सुख नहीं । कुछ आलसी मौका परस्त भी होते हैं जो वक्त जरूरत और अवसर देखकर अलसाते हैं। जैसे आज संडे है तो मस्त पड़े हैं, कुछ करेंगे नहीं । या फिर काम करने वाली (पत्नी) है आसपास तो वे खुद से साँस ले रहे है यही बड़ा काम है । ससुराल में है तो प्रति घंटा चाय-बिस्किट के बावजूद आलस्य को न टूटने देना उनका जमाई अधिकार है। आलसी प्रायः भाग्यवान होते हैं, कोई काम खुद ही उनके पास नहीं फटकता है । आलसी अचार की बरनियों की तरह कभी धूप में कभी छाँह में रखा होता है । घर-परिवार वाले इस उम्मीद से उसे सम्हाले रहते हैं कि कभी कुछ नहीं होगा तो काम आएगा । मीर लिखते हैं - आरज़ुएँ हजार रखते हैं, तो भी हम दिल को मार रखते हैं ।

राजनीति

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

अशक्त प्रतिपक्ष, सशक्त लोकतंत्र की राह में बाधक

स्वतंत्र भारत की राजनीति में ऐसा होता आया है कि राजनेता के आचरण और व्यवहार के साथ-साथ पर संवाद के दौर में उनकी भूमिका ही नेतृत्व के प्रति जन विश्वास का कारण बनती है। लेकिन दुर्भाग्य से गांधी परिवार में अब ऐसा कोई महामानव नजर नहीं आता जो कांग्रेस के गौरवशाली इतिहास को और अधिक प्रकाशमान कर सके। उल्टे हो यहां रहा है कि नेतृत्व के तौर तरीके कांग्रेस के परंपरागत जनाधार को भी तहस-नहस करते जा रहे हैं। दूसरी ओर वर्तमान में गठबंधन की सरकार प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एक-एक करके अनेक अनसुलझे सवालों का प्रभावी समाधान करते चली जा रही है। वर्तमान नेतृत्व के पक्ष में हजारों तर्क दिए जा सकते हैं। मजे की बात यह है कि किसी भी तर्क का कोई खंडन नहीं कर सकता। आम नागरिक यह भली भांति समझने लगे हैं कि देश के विकास को तीव्र गति प्रदान करने की दिशा में नेतृत्व का क्या महत्व है। प्रधानमंत्री मोदी की पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनीतिक कतई नहीं रही।

भाजपा नीत गठबंधन की सरकार के मुखिया की दूरदृष्टि के चलते राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में भी भारत की छवि में अपेक्षा से कहीं अधिक सुधार आया है। नेतृत्व की कार्यप्रणाली से इस बात पर रत्ती भर भी संदेह नहीं किया जा सकता है कि हम सुनहरे कल की ओर बढ़ रहे हैं। बावजूद इसके वर्तमान दौर में जो प्रतिपक्ष की दयनीय हालत है, तमाम लोकतंत्र के हिमायतियों के लिए चिंता का विषय बनती जा रही है। लोकतांत्रिक परंपरा में सत्तापक्ष के विकल्प के रूप में प्रतिपक्ष को देखा जाना, लोकतंत्र को उसके वास्तविक स्वरूप में देखना होगा। अन्यथा लोकतंत्र में लोकतंत्र तो कभी दिखाई ही नहीं देगा।

लेकिन इन दिनों देश-प्रदेश के हालात कुछ ऐसे निर्मित हो रहे हैं कि गौरवशाली इतिहास से आच्छादित कांग्रेस अपने रहे-सहे अस्तित्व को बचाने की दिशा में बावरी हुई जा रही है। हालांकि शिक्षा एवं तकनीकी संसाधनों के चलते आम नागरिकों में राजनीतिक चेतना भी उल्लेखनीय रूप से नजर आती है। बावजूद इसके राजनीति का व्यक्ति विशेष पर केंद्रित हो जाना, लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं माना जा सकता। जहां तक वर्तमान नेतृत्व का सवाल है, तो उनका तो संपूर्ण जीवन क्रम ही खुली किताब की भांति है। उनकी नेकनीयत पर अंश मात्र भी संदेह नहीं किया जा सकता। आज उनके कद के बराबर उनके अलावा दूसरा कोई नजर ही नहीं आता।

लेकिन भविष्य किसने देखा ? कल को सशक्त प्रतिपक्ष के अभाव में लोकतंत्र को एकतंत्र की ओर अग्रसर होने से रोकने के लिए कौन क्या कर सकेगा ? इस संदर्भ में वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए प्रतिपक्ष को अपने खोये हुए आत्मविश्वास को जागृत करने की नितांत आवश्यकता है। कांग्रेस के तपोनिष्ठ राजनीतिज्ञ नेतृत्व की जुबान के चलते शर्मिंदगी का अनुभव करते होंगे। जाहिर तौर पर कांग्रेस अध्यक्ष कोई भी हो, उसकी घुरी तो गांधी परिवार के इर्द-गिर्द ही घूमती है। इसलिए कांग्रेस की राजनीति के केंद्र बिंदु बाबा ही तो है। अब बाबा की ना समझी जब जब जाहिर होती है, सिद्धांत वादी कांग्रेसी कसमसा कर रह जाया करते हैं। या फिर मौका पाकर खेमा बदल लेते हैं।

स्वतंत्र भारत की राजनीति में ऐसा होता आया है कि राजनेता के आचरण और व्यवहार के साथ-साथ पर संवाद के दौर में उनकी भूमिका ही नेतृत्व के प्रति जन विश्वास का कारण बनती है। लेकिन दुर्भाग्य से गांधी परिवार में अब ऐसा कोई महामानव नजर नहीं आता जो कांग्रेस के गौरवशाली इतिहास को और अधिक प्रकाशमान कर सके। उल्टे हो यहां रहा है कि नेतृत्व के तौर तरीके कांग्रेस के परंपरागत जनाधार को भी तहस-नहस करते जा रहे हैं। दूसरी ओर वर्तमान में गठबंधन की सरकार प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एक-एक करके अनेक अनसुलझे सवालों का प्रभावी समाधान करते चली जा रही है।

वर्तमान नेतृत्व के पक्ष में हजारों तर्क दिए जा सकते हैं। मजे की बात यह है कि किसी भी तर्क का कोई खंडन नहीं कर सकता। आम नागरिक यह भली भांति समझने लगे हैं कि देश के विकास को तीव्र गति प्रदान करने की दिशा में नेतृत्व का क्या महत्व है। प्रधानमंत्री मोदी की पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनीतिक कतई नहीं रही। उनके साथ केवल उनकी नीति और उनके सिद्धांत ही उनके जीवन की कुल जमा पूंजी थी, जिसे आम नागरिकों द्वारा हाथों-हाथ लिया गया। वैसे निकट भविष्य में तो लोकतंत्र पर कोई खतरा नजर नहीं आता। लेकिन कल किसने देखा ?, यही सवाल चिंता का विषय बनता जा रहा है।

यह माना कि परिस्थितियां स्वयं अपना विकल्प गढ़ लेती है, लेकिन फिर भी भविष्य के प्रति मन आशंकित होता ही है। मुद्दे की बात यह कि लगातार चकनाचूर होते जा रहे प्रतिपक्ष को भरपूर आत्मविश्वास से लबरेज होना चाहिए। लेकिन वर्तमान दौर में प्रतिपक्ष के खेमे में से लगातार पलायन का दौर चल रहा है। ऐसे में प्रतिपक्ष का रहा-सहा आत्मबल भी ध्वस्त होता जा रहा है। इतिहास साक्षी है कि सत्ता की मदहोशी में बीते दौर में नागरिकों के मूलभूत अधिकार छीन लिए गए थे। परिणाम स्वरूप देश को आपातकाल की त्रासदी भुगतने को विवश होना पड़ा। व्यक्ति विशेष के अहम की लड़ाई में लोकतंत्र के सिद्धांतों को ताक पर रख देने का नजारा देश भुगत चुका है।

इसलिए बेहतर यही होगा कि प्रतिपक्ष को आसानी से सांस लेने के काबिल तो छोड़ा ही जाना चाहिए। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिपक्ष की दुर्दशा का यह क्रम लगातार जारी रहा तो, कालांतर में भाजपा से ही सिद्धांतों की लड़ाई लड़ने वाले प्रतिपक्ष की भूमिका का निर्वहन करने लगेंगे। हालांकि यह केवल आशंका है, लेकिन इस आशंका को पूरी तरह से निर्मूल नहीं कहा जा सकता। स्पष्ट बहुमत के बावजूद आज भाजपा की लोकप्रियता को राष्ट्रव्यापी भी नहीं कहा जा सकता। आज भी अनेक राज्यों में भाजपा अपना जनाधार स्थापित करने या बढ़ाने की दिशा में संघर्ष करत दिखाई देती है।

इसके विपरीत अपने गौरवशाली इतिहास के चलते कांग्रेस की लोकप्रियता राष्ट्रव्यापी रही थी। हालांकि हिंदी भाषी प्रदेशों से कांग्रेस की जड़ का तेजी से सफाया भी हुआ है। लेकिन फिर भी पूर्वजों के प्रताप से आज भी कांग्रेस में इतना दमखम तो है कि उसके बैनर तले अनेकता में एकता के नजारे भी दिखाई देते हैं। कुल मिलाकर तमाम बातों का लब्बोलुआब यह है कि कांग्रेस अपने पैरों पर खड़ी होने का प्रयास करें। वैसे इसमें भी दो मत नहीं है कि गांधी परिवार के दायरे से निकलकर ही कांग्रेस अपने गौरवशाली अतीत को लौटा ला सकती है। अन्यथा बाबा के चलते दूर तक ऐसे आसार नजर नहीं आते कि कांग्रेस अपनी खोयी स्थिति को पा सके।

पुस्तक चर्चा

मनोज खरे

समीक्षक

गाँठें: स्मृतियों के गलियारे में बेचैन भटकन

एक खानदान की कई पीढ़ियों के आपसी रिश्तों, सम्बन्धों, टूटने-जुड़ने, अनुराग-विद्वेष और स्वार्थ-आत्मीयता के किस्से भी समानान्तर चलते हैं। इसी से जुड़ता है दत्तक पुत्र का प्रसंग जो कारण बनता है दोयम दर्जे के व्यवहार का, अपनों के ही साथ, अपनों के ही द्वारा। उपन्यास में बड़ी संख्या में घटनाक्रम हैं और प्रसंग भी। अनेकचेहरे और पात्र हैं जिनके नाम हैं और रिश्ते भी।

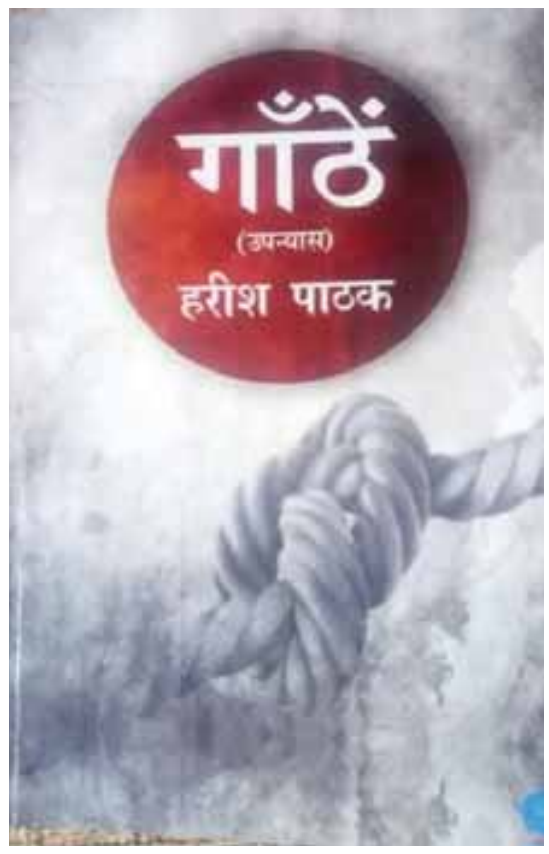

हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर, रंगकर्मी और शिक्षाविद् स्वर्गीय डॉ. हरीश पाठक की सद्यः प्रकाशित कृति हिन्दी उपन्यास ''गाँठें' इस अर्थ में महत्वपूर्ण है कि इसे पढ़ते हुए हर पाठक अपने अतीत और तमाम भूली-बिसरी स्मृतियों में लौटने लगता है। उपन्यास के कथानक के मुख्य चरित्र की तरह उसे अपने पैतृक घर-गाँव और पूर्व पीढ़ियों के परिजनों के प्रति गहन उत्कंठा और जिज्ञासाएं निरन्तर उद्वेलित करती हैं।

प्रायः यह देखने को मिलता है कि इंसान को अपने भविष्य को जानने की बहुत उत्सुकता रहती है लेकिन इसके उलट इस उपन्यास में लेखक ने बहुत सक्षमता से इस सच को स्थापित किया है कि व्यक्ति को अपने अतीत, अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और अपने पूर्वजों-पुरखों की उत्पत्ति-स्थल के बारे में भी जानने की उतनी ही तीव्र उत्सुकता रहती है। कथानक के मुख्य चरित्र का आंतरिक अंतरिक्ष-क्यों, कब, कैसे, कहाँ और किसने, जैसे ढ़ेर सारे प्रश्नों के उपग्रहों के विचरण से लगातार बेचैन रहता है। सवालों के उपग्रहों के विचरण से लगातार बेचैन रहता है। सवालों के जवाब में मिलने वाली चुप्पियाँ, तटस्थता और आधे-अधूरे वाक्यांश उसकी सोच और विचारों में ''गाँठें'' बन कर पलने लगते हैं। इन पक्की और कसी हुई ''गाँठों'' को खोलने की जद्दो-जहद उसे बहुत अकेला करती जाती है।

कहानी उस पीढ़ी से शुरू होती है जो बरसों-बरस पहले बुन्देलखण्ड अंचल के दूरस्थ गाँव से निकल कर मालवा अंचल के उज्जैन आकर बस जाती है। कथानक का काल-खण्ड सन् 1857 के गदर से होकर देश की आजादी के बरास्ते 21वीं सदी के भारत के नव-निर्माण तक फैला हुआ है।

इसी दौरान एक खानदान की कई पीढ़ियों के आपसी रिश्तों, सम्बन्धों, टूटने-जुड़ने, अनुराग-विद्वेष और स्वार्थ-आत्मीयता के किस्से भी समानान्तर चलते हैं। इसी से जुड़ता है दत्तक पुत्र का प्रसंग जो कारण बनता है दोयम दर्जे के व्यवहार का, अपनों के ही साथ, अपनों के ही द्वारा।

उपन्यास में बड़ी संख्या में घटनाक्रम हैं और प्रसंग भी। अनेकचेहरे और पात्र हैं जिनके नाम हैं और रिश्ते भी। हरीश जी ने इन दोनों को बहुत बारीकी से कथानक के साथ गूंथा है, पिरोया है। छोटी से छोटी घटना और गतिविधियाँ भी वे नजरअंदाज नहीं करते हैं बल्कि उनका सूक्ष्म उद्वरण देकर भी उसे महत्वपूर्ण बना देते हैं।

उपन्यास में पारिवारिक सदस्यों के बीच खेली जा रही शतरंज की बाजियों को जिस बखूबी उजागर किया गया है, ठीक उसी तरह समाज की विसंगतियों, रूढ़ियों और कट्टरता को भी रेखांकित किया गया है। दत्तक पुत्र की अगली पीढ़ियों के साथ सौतेला व्यवहार तथा हीनता का भाव है लेकिन दत्तक पुत्र लेने वाले का चरित्र सर्व-पूज्य, सहज-स्वीकार्य और प्रतिष्ठित है जबकि वह अपने पिता द्वारा उसकी जन्म कुण्डली की विवेचना के आधार पर तीन विवाह करता है।

उपन्यास में एक ऐसे समाज को चित्रित किया गया है जहाँ दो अंतर्विरोधी अवधारणाएँ वाले समूह एक साथ सामान्य रूप से रहते हैं। एक वर्ग है जो सत्ताधीशों के कृपा-पात्र हैं, जो उनकी दासता को भी उपकृत होने का माध्यम समझते हैं। दूसरे वे जो देश की आजादी की अलख जिलाएं रखने के लिए यथासंभव संघर्ष करते हैं। दोनों समूह विभिन्न अवसरों पर साथ देखे जाते हैं लेकिन आंतरिक रूप से विभाजित हैं।

उपन्यास में लेखक के कोमल मन की गुनगुनी धूप जैसे कुछ प्रसंग मन को छू जाते हैं। जहाँ उनका बचपन बीता, उस तीन खिड़कियों वाले घर को ढ़हाए जाने की खबर उनके अंतर्मन को गहरे तक विचलित कर देती है। इस घटनाक्रम की कोई सूचना उसे अपनों द्वारा भी नहीं दी गई, इसको लेकर मन में रोष भी है तो बचपन छिन लिए जाने का दुख भी।

''कितने ही खण्डहर है बाहर से भीतर तक.....यह वाक्यांश उनके दुख को रेखांकित करता है।

अंतर्द्वन्दों से जूझते प्रभाष द्वारा रसोई घर में काम करती पत्नी निर्मला को 'आनंद' फिल्म का गीत ''कहीं दूर जब दिन ढ़ल जाए.... सुनाना। उसके मन की वेदना, संवेदना और तड़प को भी उजागर करता है।

संवेदनाओं को सर्वाधिक आन्दोलित करता हुआ प्रसंग है- केवल 11 वर्ष की आयु के बाद अनंत की यात्रा पर चले गए छोटे बेटे का।''उसका जन्म आपाताकाल के दौरान हुआ था और इसलिए कुछ पारिवारिक लोग उसे आफत कहते थे।..... इतनी क्रूर मानसिकता..... !! ईश्वर यदि तुम हो कहीं तो इन्हें माफ करना.....।''

इसी उपन्यास का एक अंश है - ''अतीत को खंगालते रहने की एक आदत बन जाती है जब, एक सोच गहरा होता जाता है। जितना सोचो, नए-नए नाम याद आते हैं। नए-नए चेहरे दिखाई देते हैं और पास जाने पर गायब हो जाते हैं। पर, तलाश खत्म नहीं होती। एक नया अनुभव देकर जाती है हर तलाश। इकट्ठा अनुभवों को सहेजकर और थककर बैठ जाता हूँ।

लेखक के इन्हीं अनुभवों और थकान की वेदना से उपजा है - उपन्यास गाँठें।

समय, समाज और परिवार से मिली आंतरिक पीड़ाओं के गर्भ से जन्मती हैं ''गाँठें''।

बदला कुछ भी नहीं है, आज भी। विखण्डित सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों के ध्वंस होने के इस दौर में भी और अधिक प्रासंगिक है - गाँठें।''

तीसरा विश्व युद्ध

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

एटम बम और गांधी-जीत किसकी होगी

पिछले 3-4 दिनों में अमेरिका जिस प्रकार के कदम बढ़ा रहा है, वह सारे विश्व के लिए चिंताजनक है। अमेरिकी राष्ट्रपति के पद पर डोनाल्ड ट्रंप के चुने जाने के बाद न केवल दुनिया बल्कि स्वतरू अमेरिका का समाज तथा विदेशी वीजाधारक भी निरंतर आशंकित रहते हैं कि ट्रम्प क्या कब कदम उठा सकते हैं यह कोई नहीं जानता? अमेरिका कुछ दशकों के पूर्व तक दुनिया में लोकतंत्र का अग्रणी देश माना जाता था। यद्यपि वहाँ संपन्नता तो आई थी परंतु समता नहीं थी। संपन्नता भी दुनिया को हथियार बेचकर, आर्थिक शक्ति की दम पर दूसरे देशों को लूटकर या अन्य प्रकार से शोषण कर यह संपन्नता अर्जित की गई थी। अमेरिकी लोकतंत्र पूँजीशाही का और कारपोरेट का लोकतंत्र रहा परंतु इस जीवनशैली में उदारवाद के कुछ गुण भी थे। अब वह पूंजीवादी लोकतंत्र के साथ साथ कट्टरपंथी और व्यक्ति नियंत्रित तानाशाह लोकतंत्र में बदल रहा है। अमेरिका की प्रणाली संसदीय नहीं वरन् राष्ट्रपति प्रणाली है। अमेरिका का संवैधानिक ढाँचा राज्यों को अधिकार तो देता है परंतु समूचे देश के नियंत्रण व निर्णय के अधिकार राष्ट्रपति में निहित है। अब स्थिति यह है कि श्री डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका के कई सदियों के लोकतांत्रिक इतिहास को भुलाकर अपने देश के हर क्षेत्र को चाहे वह पूंजी का हो, व्यापार का हो, शिक्षा का हो, विदेश नीति का हो, अपने सीधे नियंत्रण में लेना शुरू कर दिया है। मैं मानता और जानता हूँ कि कई मजहबी जमातों में कट्टरपंथ का गहरा प्रवेश है कुछ इसलिए भी की उनके धर्मग्रंथ उन्हें अपने ही विचार के लिए अंतिम रूप से श्रेष्ठ मानने के लिए प्रेरित करते है और इसका परिणाम अन्यों के प्रति प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष घृणा और दुर्भाव में होता है। इसके भी कितने ही उदाहरण हमारे सामने है। हालांकि इन मजहबी प्रतिक्रियाओं का नुकसान अभी तक उन्हीं मुल्कों को ज्यादा उठाना पड़ा है जिनकी तरफसे प्रतिक्रियाँ हुई थी। न्यूयॉर्क में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के हमले के बाद समूची दुनिया ने अमेरिका का समर्थन किया और अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन को खत्म करने के साथ साथ वर्षों तक अफगानिस्तान में अपने सेना का नियंत्रण बना के रखा। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि अफगानिस्तान में तालिबान को पैदा करने का काम भी अमेरिका ने ही किया था यद्यपि तालिबान के शासन के पहले भी वह इस्लामिक देश ही था, उसका इस्लामिक शासक था परंतु रूस समर्थक था और तालिबान ने मजहब के नाम पर अपने शासक की हत्या कर, उसे चौराहे पर टांग दिया था। बाद में जब तालिबान ने महसूस किया कि वे ही शक्तिमान है तो उसने अमेरिका पर आतंकवादी हमला किया और परिणामस्वरूप अफगानी अनेको वर्षों तक गुलामी में रहे और पिटे और मिटे।

ईरान में शाह की सत्ता को हटाने के बाद, खामनई धर्मगुरु की सत्ता आई और जब उसने शाह की संपत्ति को अमेरिका से वापस माँगा और अमेरिका के द्वारा वापिस नहीं दिए जाने पर, ईरान में अमेरिका की लगाई गई पूंजी को जब्त किया वहीं अमेरिकी सत्ता के खिलाफशक्तियों के साथ दोस्ताना सम्बन्ध शुरू किया।

ईरान को काबू करने के लिए अमेरिका ने सद्दाम हुसैन को आगे बढ़ाया और ईरान बनाम इराक की आग लगाई। प्रारंभिक दौर में सद्दाम हुसैन अमेरिका की आँख के तारे रहे। यहाँ तक की उस दौर में चालीस लाख से अधिक लोग मारे गए परंतु जब सद्दाम ने अपने मर्जी से राज करना शुरू किया और अमेरिकी डॉलर को चुनौती देकर यूरो को बढ़ावा दिया, तेल के व्यापार को यूरो में बढ़ाने का प्रयास किया तो नरसंहारक हथियारों के नाम पर अमेरिका ने सद्दाम को खत्म किया और ईराक को एक प्रकार की अराजक स्थिति में ला दिया।

हालांकि जब जांच रपटें आई तब मालूम पड़ा की इराक़ के पास नरसंहराक हथियार थे ही नहीं। हालांकि सद्दाम का शासन भी इराक में लगभग व्यक्ति परक शासन था और उन्होंने अमर्यादित व्यवहार शुरू किया था। इराक़ में उस होटल के सामने जहाँ विदेशी मेहमान आकर ठहरते थे, सद्दाम ने फर्श पर सीनियर जॉर्ज बुश का चित्र बनवा दिया था ताकि विदेशी मेहमान उनके चित्र पर जूते रखकर निकले। शायद इराक़ी सरकार और सद्दाम को मिटाने का एक कारण यह वैयक्तिक अमर्यादित आचरण भी था जिसका बदला उनके बेटे बुश ने राष्ट्रपति बनकर लिया।

अब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प फिर से लगभग दो तीन दशक के बाद अमेरिका को पुनरू विश्व शक्ति स्थापित करने के नाम पर और अमेरिका के विदेश नीति के छोड़े हुए स्थान को फिर से वापस लाने की योजना में है। इसके लिए उन्हें सामरिक और आर्थिक शक्ति चाहिए। सामरिक शक्ति तो उनके पास है ही परंतु अमेरिका और चीन में आर्थिक समझौते के बाद जिस तरह चीन ने अमेरिकी बाजार पर कब्जा किया था, उसने अमेरिकी आर्थिक क्षमता को घटाया था तथा जिन जिन देशों पर अपने नियंत्रण को अमेरिका ने अपने आर्थिक तंगी की वजह से छोड़ा था उन सभी केंद्रों पर अब पुनरू अमेरिका की नजर है। अपनी आर्थिक क्षमता को पुनरू स्थापित करने के लिए डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका में आने वाले दुनिया के आयातित सामनों पर टैरिफबढ़ाना शुरू किया है। यह टैरिफहथियार भी अणु बम से कम खतरनाक नहीं है क्योंकि जो दुनिया के छोटे कमजोर या रंगीन देश अमेरिका में अपने माल भेजकर अपनी अर्थ क्षमता को बढ़ा रहे थे और अमरीकी कोष घटता जा रहा था।

इस कोष का इस्तेमाल अब अमेरिका अपने वैश्विक जागीरदारी को स्थापित करने और दुनिया के दूसरे देशों की विदेश नीति को नियंत्रित करने में इस्तेमाल कर रहा है। एक बार फिर से अमेरिका उस पुराने दौर में जा रहा है जहाँ वे कहते थे, श्बी अमेरिकन बाय अमेरिकन्य। निसंदेह इससे अमेरिका का पूंजी विस्तार हुआ है और अब अमेरिका ने इस टैरिफहथियार के लिए दुनिया के उन देशों की सरकारों को गिराने का माध्यम बनाया है जो उनके अनुकूल नहीं है। उनकी अर्थव्यवस्था को गिराकर, वहाँ विद्रोह कराकर अपने हितों के अनुकूल सरकार को बनाना ये अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प की जाहिर नीति है।

हालांकि मैं इस बात के लिए ट्रम्प की तारीफ करता हूँ कि वे अपने किसी लक्ष्य को छिपाते नहीं है, बल्कि खुलकर कहते है। उनकी इच्छा थी कि उन्हें शांति का नोबल पुरस्कार मिले और यह उन्होंने खुलकर कहा जिसे एक अर्थ में बेशर्मी भी कहा जा सकता है। उन्होंने अपने चुनाव अभियान में भी मुद्दा बनाया था कि वे निर्वाचित होने के बाद रूस यूक्रेन युद्ध समाप्त करायेंगे इसके लिए उन्होंने प्रयास भी किए हालाकि वे अभी तक सफल नहीं हो सके।

पहलगाम आतंकी घटना के बाद जब भारतीय सेना ने पाकिस्तानी आतंकवादी क्षेत्रों पर हमला किया तो, दो तीन दिन के बाद पाकिस्तानी जनरल के प्रस्ताव पर भारतीय सेना के चीफ ने उसे स्वीकार कर, सैन्य हमला रोक दिया। इसको लेकर भी ट्रम्प ने लगातार कहा कि भारत पाक युद्ध को मैंने रुकवाया है हालांकि इसे भारत ने नहीं माना और प्रधानमंत्री ने इसका खंडन किया। जब इसके बाद भी नोबेल पुरस्कार नहीं मिला तो उन्होंने ये कहना शुरू कर दिया है कि अब मैं दुनिया को युद्ध में धकेल कर ही रहूँगा, कोई भी राजनेता जो ये कहता हो इसे उनकी बेबाकी भी कहा जा सकता है और अपरिपक्व मूर्खता भी।

वेनेजुएला में राष्ट्रपति मादरो का विरोध करने वाली नेता को उन्होंने पुनरू समर्थन दिया और शायद यह दुनिया की पहली घटना थी जब दुनिया के किसी देश के राष्ट्रपति को उसकी पत्नी के साथ रात में अगवा किया गया है और वह भी इस आधार पर कि वे अमेरिका में ड्रग्स भेजते है। उन्हें गिरफ्तार कर अमेरिका लाया गया और उन पर मुक़दमा चलाया जा रहा है। वेनेजुएला की सरकार भी बदल गई और नई सरकार बन गई। अब जो सरकार है वह अमेरिका के नियंत्रण में है, ट्रम्प ने तो यहाँ तक कह दिया कि मैं ही अब वेनेजुएला का राष्ट्रपति हूँ।

श्री ट्रम्प ने क्यूबा को भी धमकी दी है और ग्रीन लैंड, कनाडा, डेनमार्क तक को अमेरिका झंडे में बताया है। एक तरफ रूस जिसके मुखिया श्री पुतिन है यूएसएसआर के स्वरूप को और 1985-86 में स्वतंत्र हुए देशों को पुनरू अपने कब्जे में लेने का प्रयास कर रहे है। उसी प्रकार अमेरिका भी लैटिन अमेरिकी देशों को जो आजाद हुए थे, पुनरू अपने नियंत्रण में लेने की योजना में है। रूस और अमेरिका दोनों अपने-अपने प्रभाव के देशों को क़ब्जाने की तैयारी में है। अमेरिका अपना कब्जा ग्रीनलैंड पर इसलिए चाहता है कि एक तो वह वहाँ के रेयर अर्थ मिनरल्स का इस्तेमाल करेगा और अपना सामरिक अड्डा वहाँ बनाकर रूस व दुनिया तक को अपनी हथियारों की सीमा में लेगा।

यूरोपीय संघ जिसके देश अधिकांशतरू द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से नाटो में थे अब वे भी अमेरिका के प्रभाव से और तरीक़ों से चिंतित है। फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रो, जर्मन चांसलर, ब्रिटेन आदि देश अमेरिका की इन हरकतों का विरोध कर रहे है परंतु यह विरोध कितनी दूर तक जाएगा यह कहना कठिन है। क्योंकि ईसाइयत और यहूदी दोस्ती इन्हें एक रास्ते पर ला सकती है।

ईरान और अमेरिका के बीच में भी जो युद्ध का माहौल बना है वह चिंताजनक है। यद्यपि मुझे नहीं लगता की ईरान अमेरिका से कोई सीधे युद्ध की स्थिति में है। पिछले दिनों जब ईरान ने इजराइल पर ड्रोन हमले किए थे, तब अमेरिका ने ईरान पर मिसाइल छोड़ कर ईरान को लाचार कर दिया था। अभी ईरान ग्रह युद्ध में फँसा है एक तरफखमेनी धर्म गुरु के साथ में कट्टरपंथी समाज है और दूसरी तरफईरान का बड़ा हिस्सा संघर्षों में सड़कों पर है। लड़कियां जेल जा रही हैं और मारी रही हैं। कई हजार लोग मर चुके हैं और ट्रम्प ने तो कहा है कि चिंता मत करो, लड़ते रहो, मदद रास्ते में है। यह भी ईरान की इस्लामिक सत्ता को हटाकर पुनरू शाह की सत्ता और एक खुला समाज बनाने का खेल चला है।

कुल मिलाकर समूची दुनिया अपने छोटे-छोटे युद्धों से आगे बड़े युद्धों की ओर जा रही है, कट्टरपंथी घटनाये बढ़ रही है। भारत के पड़ोस के बांग्लादेश में इस्लामिक कट्टरपंथ सत्ता और समाज में पूर्णतरू हावी हो चुका है। एक प्रकार की अराजकता की स्थिति है। वहाँ के अल्पसंख्यक हिंदुओं को मारा जा रहा है और वे भयभीत है। उनकी स्थिति की कल्पना कर पाना भी कठिन है। हालाकि यह चिंताजनक है कि भारत के प्रधानमंत्री जिन्हें उनके समूह के लोग विश्व नेता कहते है, इन छोटे देशों में भी कुछ हस्तक्षेप करने की स्थिति में नहीं है। उन्होंने औपचारिक रूप से अब तक अल्पसंख्यक हिंदुओं की हत्याओं पर कुछ नहीं बोला है। हिंदू हितों के रक्षा के आधार पर बनाए गए आरएसएस और उनके मुखिया भी लगभग मौन ही है। भारत के अनेकों हिंदू लोग इससे क्षुब्ध है क्योंकि वे अब तक मानते थे कि आरएसएस उनके रक्षा के लिए बना है और उन्हें लगता था कि शायद संघ के लोग अपने लाखों स्वयंसेवक के साथ बांग्लादेश कूच करेंगे और हिंदुओं की रक्षा करेंगे परंतु, संघ और उसकी नियंत्रित सरकार बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों की रक्षा में सफल सिद्ध नहीं हुई। विरोध के नाम पर राजदूत के नाम विरोध पत्र देने तक ही सीमित रही है।

दुनिया में प्रबुद्ध लोगों में बहुत चिंता है की क्या दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर जा रही है और अगर तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो ये बंदूकों और मिसाइलों का नहीं होगा बल्कि परमाणु बमों का होगा। ऐसे युद्ध मानवता और सभ्यता दोनों को नष्ट कर देंगे।

महात्मा गांधी को याद आज दुनिया कर रही है कि गांधी का मार्ग अपनाकर ही युद्धों से बचा जा सकता है। लोहिया ने आज से लगभग 70 वर्ष पहले उत्तर प्रदेश के ललितपुर के घंटा घर में भाषण देते हुए कहा था की बीसवी सदी की 2 घटनाये महत्वपूर्ण है, एक एटम और दूसरे गांधी। देखते हैं किसकी जीत होती है।

लोहिया ने दुनिया के समक्ष यह प्रश्न रखा था कि गांधी की जीत का मतलब अहिंसा की, मानवता की और सभ्यता की जीत है। और अणु और परमाणु की जीत का मतलब मानवता और सभ्यता का नष्ट होना है। अब दुनिया को चुनना है कि वह जीवित रहना चाहती है या समाप्त होना।

इसलिए लोहिया ने विश्व संसद का सुझाव दिया था और वे खुद को विश्व नागरिक कहते थे। गांधी ने खुद को विश्व का पर्याय बना दिया था। कुछ मित्र इस पर प्रश्न चिह्न लगाते है कि इस विश्व स्थिति के रहते विश्व संसद कैसे बनेगी? उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया के शोषित और रंगीन देश, जिनकी संख्या सौ से अधिक है जिनकी आबादी छह अरब के पास है अगर एक हो जाए तो ये परमाणु वाले देश क्या करेंगे।

बड़े देश अगर परमाणु से दुनिया को खत्म करना चाहेंगे तो बगैर प्रजा के राजा होंगे। जब जनता ही नहीं रहेगी तो राज किस पर करेंगे। मेरा दृढ़ विश्वास है कि गांधी का संदेश और लोहिया की योजना और रणनीति ही युद्ध, हथियार और शोषण से मुक्ति दिला सकती है। 30 जनवरी बापू का बलिदान दिवस है। देखें दुनिया बापू के उस महान अहिंसक बलिदान को किस रूप में याद करती है।

धार में महाराजा भोज शोध केंद्र स्थापित जाएगा:विधायक नीना वर्मा

धार। महाराजा भोज की नगरी धार में विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को विभिन्न विषयों पर गहन अध्ययन के लिए एक समर्पित शोध केंद्र की आवश्यकता है। कालिदास संस्कृति अकादमी उज्जैन व मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग के माध्यम से धार में महाराजा भोज शोध केंद्र स्थापित करने के लिए प्रयास किए जाएंगे। इस संबंध में न केवल कालिदास अकादमी बल्कि संस्कृति विभाग के मंत्री एवं मुख्यमंत्री से भी चर्चा की जाएगी ।

भोज समारोह को संबोधित करते हुए धार विधायक नीना वर्मा ने कही। कालिदास संस्कृति अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृत परिषद, उज्जैन के तत्वावधान में महाराजा भोज के विराट व्यक्तित्व एवं उनकी सारस्वत साधना को केंद्र में रखकर आयोजित संगोष्ठी में विधायक श्रीमती वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने बताया कि धार में अन्य विकास कार्य भी निरंतर प्रगति पर हैं। मेडिकल कालेज का कार्य शीघ्र प्रारंभ होगा। साथ ही महाकाल लोक की तर्ज पर धारनाथ लोक में लगभग 3 करोड़ रुपये की लागत से 750 व्यक्तियों की क्षमता वाला केंद्र भी तैयार किया जाएगा। आने वाले समय में धार को कई नई सौगातें मिलेंगी, जिससे यह शहर शिक्षा व संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा। यह आयोजन महाराज भोज फाउंडेशन व महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार के सहकार से धार कालेज में आयोजित किया गया था।

कालिदास संस्कृति अकादमी के निदेशक डॉ. गोविंद गंधे ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि भविष्य में महाराजा भोज समारोह को और व्यापक स्तर पर आयोजित किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि विधायक नीना वर्मा द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव को अकादमी द्वारा प्रत्येक स्तर पर सहयोग किया जाएगा। धार में महाराजा भोज पर आधारित शोध केंद्र की स्थापना हो सके और देश-विदेश के विद्यार्थी यहां अध्ययन कर सकें।

विशेष अतिथि महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार की जनभागीदारी समिति के पूर्व अध्यक्ष दीपक बिड़कर ने कहा कि आज हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बात करते हैं, लेकिन राजा भोज अपने समय में ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत अग्रणी थे। उनके द्वारा रचित ग्रंथ एवं बहुविषयक अध्ययन आज के आधुनिक युग में भी प्रासंगिक हैं। इतिहास में यह भी उल्लेख मिलता है कि उस समय सुरक्षा व्यवस्था के लिए यांत्रिक साधनों का उपयोग किया जाता था, जो उनकी दूरदृष्टि को दर्शाता है। महाराजा भोज शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार के प्राचार्य डा एसएस बघेल ने कहा इस वर्ष विद्यालय तथा महाविद्यालय के छात्रों को समारोह से जोड़ने के लिए कविता लेखन व निबंध लेखन एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया था। इसके प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार भी प्रदान किए गए है।

गौरवशाली इतिहास को समझ सकेंगे – सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित ग्वालियर के शोधकर्ता एवं शिक्षाविद जीवाजी विश्व विद्यालय के पूर्व संकाय अध्यक्ष प्रो. शिवाकांत द्विवेदी ने कहा कि वे लगभग 41 वर्ष पूर्व धार की भोजशाला आए थे, जहां अनेक महत्वपूर्ण पाषाण पांडुलिपियां उपलब्ध हैं, जो तत्कालीन इतिहास को दर्शाती हैं। महाराजा भोज पर और अधिक गहन शोध की आवश्यकता है, इसके लिए जनप्रतिनिधियों को विशेष रूप से जागरूक होकर सहयोग करना होगा, तभी विद्यार्थी अपने गौरवशाली इतिहास को समझ सकेंगे।

शोध संगोष्ठी में विभिन्न राज्यों से आए विद्वानों ने प्रस्तुत किए शोध पत्र – आज आयोजित शोध संगोष्ठी में पन्ना, सीधी, रीवा, इंदौर, उज्जैन, रतलाम, बड़वानी एवं धार सहित विभिन्न प्रदेश के विविध स्थानों से आए विद्वानों एवं शोधार्थियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। विद्वानों ने अपने शोध में कहा कि खजुराहो के मंदिर राजा भोज द्वारा किए गए गहन वास्तुशास्त्रीय अध्ययन की उत्कृष्ट परिणति हैं। उन्होंने बताया कि राजा भोज ने अपने ग्रंथों में भक्ति एवं रति को सूक्ष्म चेतना से जोड़ते हुए मानव जीवन के गहरे दार्शनिक पक्ष को प्रस्तुत किया है। शोधकर्ताओं के अनुसार भोज की वास्तुकला बाह्य जगत से अंतर जगत की यात्रा का प्रतीक है, जिसमें सौंदर्य के साथ-साथ जीवन के सत्य का भी सजीव चित्रण मिलता है। नगर योजना, जल प्रबंधन, देवालय निर्माण एवं शिल्पकला के क्षेत्र में राजा भोज द्वारा दिए गए सिद्धांत आज भी मार्गदर्शक हैं। शोध संगोष्ठी का संचालन डॉ. केसर सिंह चौहान ने किया।

नगर पंचायत सोहागपुर का दावा खोखला?

सोहागपुर । नगर पंचायत परिषद का स्वच्छता का दावा खोखला है? नगर की नालियों में कचरे के कारण नालियां चोक हो गई हैं। सोशल मीडिया पर कांग्रेस सेवादल अध्यक्ष इरफान खान ने लिखा है कि जवाहर वार्ड में नाली का पानी रोड पर बह रहा है ।और नाली में जाम लगा हुआ है नगरपालिका के अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि नाली की सफाई कराई जाए। और जो पाइपलाइन नल जल योजना की नाली के अंदर से डाली हुई है उसको व्यवस्थित कराया जाए क्योंकि उसी के कारण जाम लगता है। इधर आनंद साहू ने भी सोशल मीडिया पर जवाहर वार्ड की सफाई व्यवस्था पर टिप्पणी लिखी है कि ÷न जाने कब से साफ नहीं हुई हैं।

शारदा पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती का आगमन 10 फरवरी को , जैन समाज का आयोजन 8फरवरी को

सुबह सवेरे सोहागपुर । शारदा पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती का आगमन 10 फरवरी को होने जा रहा है। वहीं जैन समाज 8 फरवरी को वृहद कार्यक्रम आयोजित कर रही है।इस संबंध को लेकर बावड़ी वाले मंदिर में सकल हिंदू समाज की बैठक का आयोजन किया गया । इस बैठक में कनूलाल अग्रवाल, कृष्णा पालीवाल , वकील मंगलसिंह रघुवंशी,संतोष मालवीय, आलोक जायसवाल, हरगोविंद पुरबिया, मुकेश मालवीय, विशाल गोलानी,,

अभिषेक जैन,स्वामी आलोक जैन,माधव भावसार, मिश्रीलाल साहू,इंदू दीवान,गजेंद्र चौधरी,अधिवक्ता शिव कुमार पटेल,संजय खंडेलवाल,धनराज तिवारी,राजकुमार रघुवंशी,,रितेंद्र राजपूत,नीरज चौधरी,विजेंद्र राजपूत,भास्कर मांझी,सत्यम

रघुवंशी,मोहन कहार, भरत तिवारी,उत्तम घरामी,प्रकाश मंडल,अक्षत आचार्य,सागर रघुवंशी आदि उपस्थित थे। इस बैठक में करनपुर निवासी हरगोविंद पुर्विया ने बताया कि 5 से 11 फरवरी में देव प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम आयोजित होगा ।जिसमें कथा का भी आयोजन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में 10 फरवरी को शारदा पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती का आगमन हो रहा है। उल्लेखनीय है कि हरगोविंद पुरबिया ने ग्राम करनपुर भव्य मंदिर का निर्माण कराया है। जिसमें प्राण-प्रतिष्ठा का आयोजन संपन्न होगा। जैन समाज के अभिषेक जैन ने बताया कि समाज का एक भव्य कार्यक्रम 7, से 9 फरवरी को कन्या शाला के पीछे प्रांगण में आयोजित होगा । जिसकी भव्य कलश यात्रा देनवा गार्डन से 8 फरवरी को निकाली जाएगी, कलश यात्रा में सकल हिन्दू समाज के नागरिक उपस्थित होने का आग्रह किया गया है। वकील शिवकुमार पटेल ने बताया कि सकल हिन्दू समाज की इस बैठक में तय किया गया कि शारदा पीठाधीश्वर पूज्य शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती जी महाराज के उनका भव्य स्वागत किया जाएगा।

पुलिस थाने में दी श्रद्धांजलि

सोहागपुर । नवीन पुलिस थाना परिसर में महात्मा गांधी की पुण्यतिथि शहीद दिवस पर उन सभी लोगों को श्रद्धांजलि दी गई ।जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता और कल्याण के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया था ।उक्त कार्यक्रम में महात्मा गांधी, शहीद भगत सिंह, शहीद राजगुरु और सुखदेव थापर को याद किया गया। वहीं 2 मिनट का मौन रखा कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।इस अवसर पर सोहागपुर पुलिस थाने के अधिकारी एवं पुलिस कर्मी उपस्थित थे

मंडी में मक्का की बंपर आवक जारी, इस साल 2 लाख हेक्टेयर में मक्के का उत्पादन

छोटा पड़ा मंडी परिसर, कोने-कोने में मक्के का ढेर

बैतूल। मौसम की मार और सोयाबीन के घटते उत्पादन की वजह से जिले के किसानों का सोयाबीन के प्रति मोह भंग होते जा रहा है। हालात यह है कि अब किसान सोयाबीन के बजाए मक्का फसल पर ज्यादा भरोसे जता रहे है। यहीं वजह है कि कृषि उपज मंडी में हर साल मक्के की बंपर आवक बनी रहती है। कई बार मक्के की नीलामी तक रोकनी पड़ती है। अभी इस साल भी खरीफ सीजन में मक्का का जमकर उत्पादन हुआ। जिसके कारण पिछले 3 माह से मंडी में मक्का की बंपर आवक बनी है। प्रतिदिन 25 हजार क्विंटल से अधिक मक्का मंडी में पहुंच रही है। मक्के के अलावा गेहूं और सोयाबीन की भी आवक है। ऐसे में मंडी में व्यवस्थाएं बिगड़ रही है। शुक्रवार को मंडी में :. क्विंटल मक्का की आवक रही। मक्का की बंपर आवक के कारण बडोरा रोड पर कई बार जाम के हालात भी निर्मित हुए। बता दे कि किसान ट्रैक्टरों में मक्का लेकर मंडी पहुंच रहे है। मंडी में प्रवेश का समय तय होने से किसान देर रात से ही मंडी में आ रहे है। चूंकि मंडी में आवाजाही के लिए एक ही गेट है, ऐसे में वाहनों के आमने-सामने खड़े होने के कारण जाम की स्थिति भी बनती रहती है।

जनवरी में अब तक 5 लाख से अधिक मक्का की आवक – कृषि उपज मंडी में पिछले दो-तीन महीने से मक्का की बंपर आवक बनी हुई है। 1 जनवरी से 29 जनवरी तक कृषि उपज मंडी बडोरा में 5 लाख 10 हजार 468 क्विंटल मक्का की आवक हो चुकी है। जबकि पिछले साल जनवरी के पूरे माह में केवल 3 लाख 38 हजार 936 क्विंटल आवक आई थी। पिछले माह दिसंबर में मक्का की 7 लाख 87 हजार 927 क्विंटल आवक हुई। 2024 में 6 लाख 41 हजार 987 क्विंटल आवक आई। इस बार अधिक आवक आने से मंडी में अव्यवस्था हो गई है। किसानों को उपज डालने के लिए जगह तक नहीं मिल रही है। हालांकि मंडी प्रबंधन किसानों को असुविधा न हो, इसका पूरा ध्यान रखा जा रहा है, लेकिन मंडी में मक्का की अनुमान से अधिक आवक के कारण बार-बार व्यवस्थाएं बिगड़ रही है।

ए ग्रेड की मंडी में आवक ज्यादा, 15 एकड़ में जगह – बडोरा की ए ग्रेड की मंडी में आवक अधिक आने से मंडी प्रागंण छोटा पड़ गया है। इसके कारण किसानों को जहां जगह मिली, वहीं ढेर लगाना पड़ता है। 15 एकड़ की मंडी में आधे में सब्जी मंडी संचालित की जा रही है। आधे में मक्का, गेहूं, सोयाबीन सहित अन्य उपज रखी जाती है। वहीं आने और जाने के लिए केवल एक गेट है। इसके कारण यहां पर बार-बार जाम के हालात बनते हैं। प्रशासन द्वारा मंडी के लिए दूसरी सडक़ बनाने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन अभी तक सडक़ का काम शुरु नहीं हुआ। ऐसे में एक ही गेट से किसानों के वाहन और व्यापारियों द्वारा अनाज ले जाने के लिए ट्रकों की आवाजाही हो रही है। इस वजह से मंडी के सामने बार-बार जाम की स्थिति बन रही है।

2000 से ऊपर पहुंचे मक्का के दाम– जिले में इस बार किसानों ने सोयाबीन का रकबा कम कर मक्का का रकबा बढ़ाया था। हालांकि शुरू-शुरू में मक्का की आवक अधिक होने से दाम भी कम मिल रहे थे, लेकिन नये साल की शुरूआत के साथ ही मक्के के दामों ने भी बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। अभी मंडी में मक्का के दाम 2200 से लेकर 2500 रूपये प्रति क्विंटल तक पहुंच गये है। हालांकि निम्न क्वालिटी की मक्का के दाम कम ही है, लेकिन अच्छी क्वालिटी की मक्का के दाम 2500 रूपये प्रति क्विंटल तक पहुंच गये है। ऐसे में दाम बढऩे से मक्का की आवक बढऩे लगी है। जनवरी माह की शुरूवात में मक्का की औसत आवक 15 से 18 हजार क्विंटल से ऊपर रही है। हालाकि लगातार दाम बढऩे से अब किसान मक्का बेचने मंडी पहुंचने लगे है।

इनका कहना है – मंडी में लगातार मक्का की आवक बढ़ रही है। सिर्फ जनवरी माह में ही 5 लाख 10 हजार क्विंटल से अधिक मक्का मंडी में आ चुकी है। मक्का की अधिक आवक से व्यवस्थाएं थोड़ी बहुत बिगड़ती है, लेकिन हमारा प्रयास रहता है कि किसानों को किसी प्रकार की परेशानी न हो।

– सुरेश परते, मंडी सचिव, कृषि उपज मंडी बडोरा

15 दिवसीय ब्यूटी पार्लर एवं ललित कला प्रशिक्षण का समापन

बैतूल। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस जयवन्ती हॉक्सर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैतूल के स्वामी विवेकानंद करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित 15 दिवसीय ब्यूटी पार्लर एवं ललित कला प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन 30 जनवरी को किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के पूजन एवं अतिथियों के स्वागत के साथ किया गया। इसके पश्चात टीपीओ, संयोजक प्रो. ऋषिकान्तन पंथी ने उच्च शिक्षा मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित करियर मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत आयोजित विभिन्न गतिविधियों तथा महाविद्यालय के करियर सेल द्वारा संचालित कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान की। इसके उपरांत महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. मीनाक्षी चौबे ने अपने उद्बोधन में मानव जीवन में कला की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को किसी न किसी कला को विकसित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कला व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व के समग्र विकास में भी सहायक होती है। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए। प्रशिक्षणार्थी दिशा राठौर ने बताया कि ललित कला प्रशिक्षण के माध्यम से किस प्रकार रोजगार के अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं। प्रशिक्षणार्थी आकाश इवने ने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें अपने भीतर छिपी हुई कला को पहचानने का अवसर मिला। वहीं प्रशिक्षणार्थी राखी परते ने बताया कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है तथा कला का समुचित विकास होता है। इसके पश्चात सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम के अंत में प्रशिक्षण प्रदान करने वाले प्रशिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रो. संतोष पवार एवं सुश्री गायत्री यादव द्वारा किया गया।

जिला चिकित्सालय में स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान का किया शुभारंभ

बैतूल। महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि के अवसर पर शुक्रवार को जिला चिकित्सालय परिसर में स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान का शुभारंभ कुष्ठ पखवाड़े के रूप में किया गया। सर्वप्रथम गांधी जी के छायाचित्र पर जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य सुधाकर पंवार, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, गब्बर सिंह चंदेल, विकास मिश्रा एवं पर्वत रावत कोसे ने माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी द्वारा हस्ताक्षरित संकल्प और अपील का वाचन जनप्रतिनिधियों, चिकित्सकगण एवं अधिकारी, कर्मचारियों द्वारा किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान 11 बजे दो मिनट का मौन धारण किया गया। इसके बाद श्री कृष्ण कुमार वर्मा के पिता श्री मोहन की स्मृति में जनप्रतिनिधियों द्वारा कुष्ठ पीड़ित मरीजों के उपचाररत होने के बाद शाल, श्रीफल और कंबल देकर सम्मानित किया।

किसान कल्याण वर्ष-2026 के प्रचार को लेकर निकली भव्य वाहन रैली

बैतूल। मध्यप्रदेश शासन के द्वारा किसान कल्याण वर्ष – 2026 के रूप में मनाने के निर्णय का जिले में प्रचार प्रसार किए जाने के उद्देश्य से शुक्रवार को बैतूल में मोटर साईकल, फोर व्हीलर वाहन रैली निकाली गई। किसान कल्याण तथा कृषि विकास उपसंचालक आनंद बडोनिया ने बताया कि जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य सुधाकर पवार, भाजपा किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष महेश्वर (गब्बर) सिंह चंदेल, भाजपा किसान मोर्चा महामंत्री पर्वत धोटे ने शिवाजी ओपन आडोटोरियम बैतूल से हरी झंडी दिखाकर वाहन रैली का शुभारंभ किया। वाहन रैली शिवाजी ओपन आडोटोरियम बैतूल से प्रारंभ होकर कोठी बाजार मुख्य बस स्टेण्ड, मुख्य थाना चौक रोड कोठीबाजार, कालेज चौक, रेल्वे स्टेशन रोड, बडोरा चौक, कृषि उपज मंडी बडोरा, गेंदा चौक, डॉ. भीमराव अंबेडकर चौक होते हुए कार्यालय उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग पहुंची, जहां रैली का समापन किया गया।

इस अवसर पर उप संचालक कृषि डॉ. आनंद कुमार बडोनिया एवं सहायक संचालक रामवीर सिंह राजपूत द्वारा जैविक प्रगतिशिल कृषक नरेंद्र पंडोले एवं उत्तम राव चढोकार का स्वागत किया गया। वाहन रैली में प्रगतिशील कृषक, युवा, नवाचारी किसान, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, कृषि आदान विक्रेता, कृषि उपज मंडी, कृषि अभियांत्रिकी, उद्यान, पशु चिकित्सा, जल संसाधन विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं सहयोगी विभाग के अधिकारी, कर्मचारी शामिल थे।

शहीद दिवस पर अमर शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

धार। शहीद दिवस के अवसर पर कलेक्टर प्रियंक मिश्रा , कलेक्टर कार्यालय के शासकीय सेवकों द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीदों की स्मृति में दो मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर कलेक्टर सहित उपस्थित शासकीय सेवकों ने राष्ट्र की स्वतंत्रता और अखंडता के लिए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों को नमन करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में कलेक्टर कार्यालय के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

हिवरखेड़ में पशु चिकित्सा जागरूकता शिविर एवं पशुपालक संगोष्ठी का आयोजन

बैतूल। प्रभात पट्टन विकासखंड के ग्राम वृंदावन हिवरखेड़ में 30 जनवरी को पशु चिकित्सा जागरूकता शिविर एवं पशुपालक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शिविर के दौरान पशु चिकित्सा दल द्वारा 69 पशुओं का उपचार एवं औषधि वितरण किया गया। इसके साथ ही 12 पशुओं का कैस्ट्रेशन, 4 पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान, 19 पशुओं का गर्भ परीक्षण तथा 11 बांझ पशुओं का उपचार किया गया। पशुपालक संगोष्ठी में विभाग द्वारा संचालित पशु केसीसी योजना, डेयरी प्लस योजना, आचार्य विद्यासागर गो संवर्धन योजना एवं डॉ. भीमराव अंबेडकर योजना की विस्तृत जानकारी दी गई। अधिकारियों ने योजनाओं का लाभ लेने की प्रक्रिया समझाते हुए पशुपालकों से सीधा संवाद भी किया। संगोष्ठी में गोमूत्र से बनने वाले गोनल तथा गोबर से तैयार होने वाले वर्मी कम्पोस्ट एवं को-कास्ट के बारे में भी विस्तार से बताया गया। इस अवसर पर सरपंच विश्वनाथ सहित 56 पशुपालक उपस्थित रहे।

श्रीराम कथा एवं संत समागम को लेकर बैठक आज

बैतूल। श्री हनुमान मंदिर मोती वार्ड की स्थापना के स्वर्ण जयंती में प्रवेश के अवसर पर 26 मार्च से 3 अप्रैल तक महामंडलेश्वर 1008 श्री राघवदास जी महाराज अयोध्या जी धाम के मुखारबिंद एवं वैदिक मंत्रोच्चार से किया जाएगा। साथ ही सनातन सभा के अंतर्गत श्री राम कथा का भव्य आयोजन एवं सियाराम जी की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी। आयोजन को लेकर श्री अर्जी वाले हनुमान मंदिर समिति मोती वार्ड के तत्वावधान में बैठक आज शनिवार शाम 7 बजे श्री हनुमान मंदिर में न्यू बैतूल ग्राउंड के सामने मोती वार्ड में बैठक आयोजित की गई है। आयोजकों ने सभी से बैठक में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

सत्य, अहिंसा, प्रेम और मानवता के प्रतीक थे गांधी जी: निलय डागा

कांग्रेसजनों ने गांधी चौक पर 2 मिनट का मौन धारण कर महात्मा गांधी को दी श्रद्धांजलि

बैतूल। जिला कांग्रेस कमेटी बैतूल द्वारा महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के अवसर पर शुक्रवार 30 जनवरी को कोठी बाजार गांधी चौक स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। जहां कांग्रेस पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने दो मिनट का मौन धारण कर राष्ट्रपिता को नमन किया। इस अवसर पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष निलय विनोद डागा ने कहा कि महात्मा गांधी सत्य, अहिंसा, प्रेम और मानवता के प्रतीक थे। उनके विचार और आदर्श आज भी देश और समाज को सही दिशा दिखाने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि गांधी जी का जीवन हमें सत्य के मार्ग पर चलने, अन्याय के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष करने और मानवता के कल्याण के लिए समर्पित रहने की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम में कांग्रेसजनों ने गांधी जी के आदर्शों को आत्मसात करने और सामाजिक सद्भाव, भाईचारे व लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहने का संकल्प भी लिया। कार्यक्रम में कांग्रेस जिलाध्यक्ष निलय डागा, प्रदेश सचिव समीर खान, विधानसभा प्रभारी नारायण राव धोटे, सुभाष देशमुख, लवलेश बब्बा राठौर, पंचायती राज के राष्ट्रीय संयोजन ब्रजभूषण पांडे, महिला कांग्रेस जिलाध्यक्ष पुष्पा पेंद्राम, ब्लॉक कांग्रेस बैतूल शहर अध्यक्ष मनोज कालू आहूजा, पूर्व अध्यक्ष मोनू बडोनिया, प्रशांत राजपूत, विधानसभा यूंका अध्यक्ष प्रीतेश गंगारे, वरिष्ठ कांग्रेस नेता बीआर खंडाग्रे सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

घोड़ाडोंगरी के वैद्य बाबूलाल वरकड़े को पद्मश्री पुरस्कार प्रदान करने की मांग

मध्यप्रदेश अनुसूचित जाति-जनजाति अधिकारी एवं कर्मचारी संघ अजाक्स ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल। मध्यप्रदेश अनुसूचित जाति-जनजाति अधिकारी एवं कर्मचारी संघ अजाक्स ने महामहिम राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजकर बैतूल जिले के विकासखंड घोड़ाडोंगरी की ग्राम पंचायत कान्हावाड़ी में जन्मे वैद्य बाबूलाल वरकड़े (भगत जी) को पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किए जाने की मांग की है। ज्ञापन अपर कलेक्टर के माध्यम से प्रेषित किया गया। अजाक्स संघ ने बताया कि वैद्य बाबूलाल वरकड़े भगत जी का जन्म 01 अक्टूबर 1938 को ग्राम कान्हावाड़ी में हुआ था। वे कई वर्षों से वैद्य के रूप में निरंतर जनसेवा कर रहे हैं और आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के माध्यम से कैंसर सहित अन्य गंभीर बीमारियों से पीड़ित मरीजों का उपचार कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि वे यह सेवा पूर्णतः निःशुल्क रूप से प्रदान कर रहे हैं, जिससे क्षेत्र ही नहीं देशभर के लोगों को लाभ मिल रहा है। संघ का कहना है कि वैद्य बाबूलाल वरकड़े भगत जी का जीवन समाजसेवा, मानवता और स्वास्थ्य सेवा के प्रति समर्पित रहा है, ऐसे में उन्हें पद्मश्री जैसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया जाना उचित होगा। ज्ञापन देने वालों में तहसील अध्यक्ष कल्पना परते, महासचिव कविता धुर्वे, ब्लॉक अध्यक्ष मुकेश उपराले, अजाक्स जिलाध्यक्ष दशरथ धुर्वे एवं संभागीय अध्यक्ष अनिल कापसे और कांशीराम नागले शामिल रहें।

नाबालिक बालिका के साथ दुष्कर्म करने वाला फरार इनामी आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। नाबालिक बालिका के साथ दुष्कर्म करने वाले फरार इनामी आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार 16 अगस्त 25 को फरियादिया द्वारा थाना उपस्थित आकर रिपोर्ट की थी कि नाबालिक बालिका को कोई अज्ञात व्यक्ति बहला-फुसलाकर कही भगा ले गया है। फरियादिया द्वारा अभिषेक निवासी हथनापुर पर संदेह जाहिर करने पर थाना मुलताई में धारा 137(2) भारतीय न्याय संहिता का अपराध पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया। विवेचना दौरान मुखबिर से सूचना एवं सायबर की सहायता से प्रकरण की अपहर्ता को 7 नवंबर 25 को आरोपी अभिषेक पिपरदे के घर ग्राम हथनापुर से दस्तयाब किया गया, वहीं आरोपी पुलिस को चक्मा देकर फरार हो गया। प्रकरण में पीडिता से पूछताछ करने पर अभिषेक पिपरदे द्वारा बहला-फुसलाकर घर से भगाना एवं पीडिता के साथ गलत काम करना बताया। घटना के बाद से आरोपी अभिषेक पिता लखन पिपरदे उम्र 23 साल निवासी ग्राम हथनापुर घटना दिनांक से निरंतर फरार चल रहा था।

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

गांधी: अथक, अटूट उज्जवल जिसका अक्स था

वो तिलमिला रहे कि इक प्रहार है
ना होकर भी दिलों पे सवार है
उसका नाम मिटाना तुम्हारी ही हार है

गांधी कोई शख्स नहीं इक विचार है।

हमारे लिये विश्व के सामने गौरवान्वित होने की कई वजह हैं पर कोई शख्स ऐसा ना हुआ था जिस पर पूरा विश्व एकमत होता है वो है हमारे राष्ट्रपिता गांधी। वेशभूषा उनके लिये सिर्फ तन ढंकने का ज़रिया मात्र थी। इस वेष में उन्होंने विश्व घूमा। सबसे बड़ा ट्रिब्यूट आइंस्टीन ने यह कहकर दिया था ''आने वाली पीढ़ियां शायद ही विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति कभी इस धरती पे चला था।'' उन्होंने गांधीजी को बिना किसी बाहरी सत्ता के, केवल अपने व्यक्तित्व के दम पर लोगों का नेतृत्व करने वाला एक महान निडर व्यक्ति बताया था जो अपने सिद्धांतों के प्रति अडिग रहे। वे कभी आपस में नहीं मिले उनके बीच पत्राचार चला। मैं चिंतित हूं जिस तरह उनका नाम योजनाओं, संस्थाओं, मीनारों से दूसरे नाम में बदला जा रहा है कहीं हमारे बच्चे गांधी को जान पाएंगे क्या? फिर मुझे याद आया, गांधी अब नाम नहीं एक विचार बन गया है और विचार कभी मरते नहीं। और क्या कह रही जिंदगी में शत-शत प्रणाम बापू।

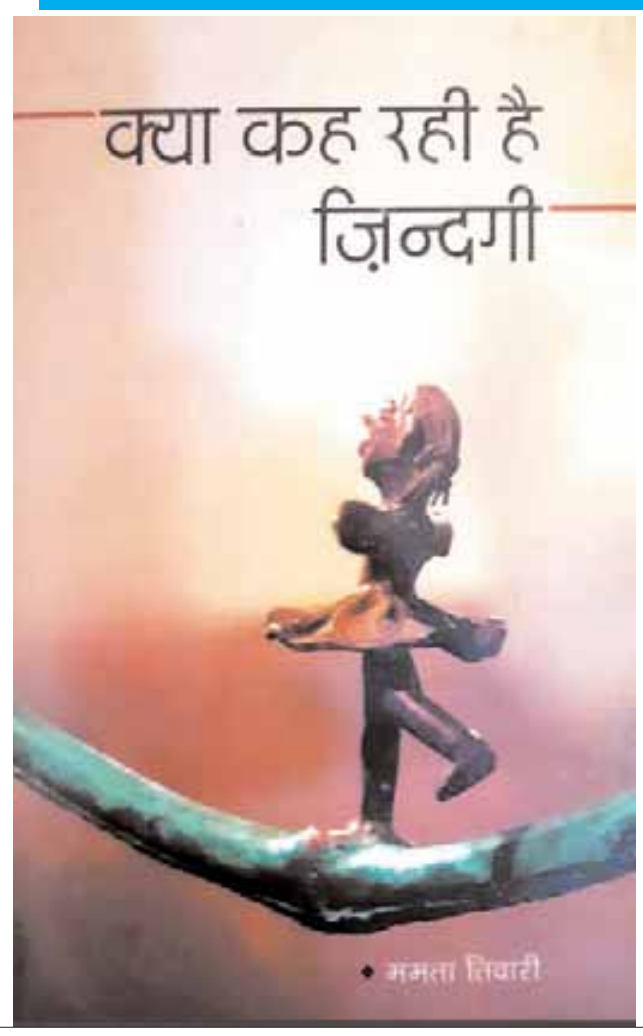

गांधी

भविष्य जानेगा कैसे, कि
क्या था हमारा गुज़रा अतीत
गोल चश्मा, लाठी थामें कृशकाय
दिमाग से बेहद सशक्त था
उस काल का बड़ा देश भक्त था
यारो वो ''गांधी'' नाम का शख्स था
आज़ादी के लिये लड़ा बिना हथियार
जो करता था उपवास से हठ
नमक से सत्याग्रह करता था
चलता था जो मीलों पैदल
अथक, अटूट उज्जवल उसका अक्स था
यारों वो ''महात्मा'' नाम का शख्स था
खुरदरी खादी आज चलन में हैं
जिसे आज हम कहते लिनेन हैं
तब हर घर में चरखा दिखता था
क्या तो वो समर्पित भक्त था
बेढा बड़ा ही जबर्रदस्त था
यारों वो ''बापू'' नाम का शख्स था
लाख हटा दे तुम्हारा नाम
संस्थाओं, योजनाओं, मीनारों से
बसे हो जन-जन के हृदय मे
मिटा नहीं पाओगे हमारे विचारों से
आइंस्टीन तक जिस पर समर्पित था
अपने आप में अनूठा देशभक्त था
यारों वो राष्ट्रपिता नाम का शख्स था
मानता है लोहा उसका पूरा संसार
फिर भारत में क्यों तुम्हारा तिरस्कार
कोई करे ना करे हम तो करेंगे तुझसे प्यार
बापू तुम इसां नही हो इक विचार
इतिहास के सफहो पे जगमगाता उसका ''अक्स'' है
कि यारों वो गांधी नाम का शख्स ''है''।

ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस पर शिविर लगाकर किया गया 1040 बच्चों का टीकाकरण

सीहोर (निप्र)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिलेभर में विभिन्न स्वास्थ्य संस्थाओं एवं अनेक स्थानों पर प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को शिविर लगाकर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के विभिन्न बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसके तहत शिविर लगाकर टीकाकरण के साथ ही बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को अन्य स्वास्थ्य सेवाएं भी उपलब्ध कराई जाती है। इसी क्रम में ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस के तहत जिले में 27 जनवरी को आयोजित शिविरों में शून्य से एक वर्ष की आयु के 800 बच्चों तथा एक वर्ष से अधिक आयु के 240 बच्चों का टीकाकरण किया गया। इसके साथ ही 146 गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

45 दिवसीय माटीकला प्रशिक्षण का हुआ समापन

सीहोर (निप्र)। जिला पंचायत सभाकक्ष में मध्यप्रदेश माटीकला बोर्ड के अंतर्गत सीआरआईएसपी द्वारा आयोजित 45 दिवसीय माटीकला (टेराकोटा) प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 27 महिला हितग्राहियों ने माटीकला शिल्प से संबंधित आधुनिक एवं पारंपरिक तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। समापन के अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्रीमती सर्जना यादव और श्रीमती अरूणा राय द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली महिला हितग्राहियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। उल्लेखनीय है कि प्रशिक्षण का उद्देश्य महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ना और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना था। समापन कार्यक्रम में सहायक संचालक श्री आकाश गोयल, श्रीमती प्रीति सोनी सहित अन्य अधिकारीगण एवं प्रशिक्षणार्थी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने जनसुनवाई में सुनी नागरिकों की समस्याएं

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने मंगलवार को जिला पंचायत के सभाकक्ष में आयोजित 'जनसुनवाई' कार्यक्रम में आए नागरिकों की समस्याएं सुनी और उपस्थित अधिकारियों को नागरिकों की समस्याओं के निराकरण के लिए निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती अंजली जोसेफ जोनाथन, संयुक्त कलेक्टर श्री सतीश राय एवं सुश्री रजनी वर्मा, एसडीएम हरदा श्री अशोक डहेरिया, एसडीएम टिमरनी श्री संजीव नागू, एसडीएम खिरकिया सुश्री शिवांगी बघेल सहित अन्य जिला अधिकारी उपस्थित थे। जनसुनवाई में ग्राम धनगांव निवासी चतरू काजले ने कलेक्टर श्री जैन को आवेदन देकर किसान सम्मान निधि की राशि प्राप्त न होने के संबंध में शिकायत की, जिस पर उन्होने तहसीलदार हंडिया को आवेदक की समस्या का निराकरण कराने के निर्देश दिये। कुलहरदा निवासी अमजद खान ने नाली के ऊपर से अतिक्रमण हटवाने के लिये आवेदन दिया, जिस पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी को मामले की जांच कर अतिक्रमण हटवाने के निर्देश दिये गये। ग्राम जात्राखेड़ी निवासी दिनेश पंवार ने आवेदन देकर पात्रता पर्ची बनवाने की मांग की, जिस पर जिला आपूर्ति अधिकारी को आवेदक की पात्रता अनुसार खाद्यान्न पर्ची बनवाने के निर्देश दिये गये। जनसुनवाई में छीपाबड़ निवासी आयुष मीना ने लेपटॉप की प्रोत्साहन राशि प्राप्त न होने के संबंध में शिकायत की, जिस पर सहायक संचालक पिछड़ा वर्ग एवं अल्प संख्यक कल्याण विभाग को आवेदक की समस्या का निराकरण कराने के निर्देश दिये गये।

गणतंत्र दिवस पर हरदा आबकारी विभाग की बड़ी कार्यवाही

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन द्वारा गणतंत्र दिवस पर घोषित शुष्क दिवस के आदेश के पालन में, आबकारी विभाग हरदा ने सोमवार को अवैध शराब के निर्माण, विक्रय, संग्रहण और परिवहन की रोकथाम हेतु छापेमार कार्यवाही की है। जिला आबकारी अधिकारी श्री सुनील भोजने ने बताया कि आबकारी विभाग के दल ने सहायक जिला आबकारी अधिकारियों ए. एस. बघेल एवं डी.एस. चौहान के नेतृत्व में खेड़ीपुरा, टंकी मोहल्ला, वार्ड क्रमांक 32 छीपानेर रोड, पीलियाखाल, ग्राम करताना के राजपुत ढाबा व शीतल ढाबा, गोंदागॉव कला, जायसवाल ढाबा टिमरनी, चारखेड़ा, प्रिंस ढाबा, पटेल ढाबा, अपना ढाबा, पंचवटी ढाबा और बारंगी में दबिश दी। दबिश के दौरान कुल 31 पाव देशी प्लेन शराब, 38 लीटर हाथ भट्टी कच्ची महुआ शराब, और 910 किलोग्राम महुआ लाहन जब्त कर मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम के तहत कुल 11 प्रकरण दर्ज किये तथा 3 खाली तलाशियां भी दर्ज की।

कल मनाया जाएगा संत रविदास का 649वां प्रकाश पर्व

3 फरवरी को पाथाखेड़ा में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज का 649वां प्रकाश पर्व कल 1 फरवरी रविवार को संत रविदास मंगल भवन मुलताई में पूर्ण श्रद्धा, हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। कार्यक्रम का आयोजन संत शिरोमणि रविदास समाज विकास समिति विकासखंड मुलताई द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठजन, युवा, महिलाएं और बच्चे बड़ी संख्या में शामिल होंगे। आयोजन समिति के मुकेश झारे ने बताया कि जयंती समारोह के तहत 1 फरवरी को सुबह 10 बजे पावन शोभायात्रा का आयोजन किया जाएगा। शोभायात्रा श्री संत शिरोमणि गुरु रविदास जी गुरुघर मुलताई से प्रारंभ होगी। दोपहर 12 बजे से कुन्बी समाज मंगल भवन ताप्ती तट मुलताई में मंचीय कार्यक्रम आयोजित होंगे। कार्यक्रम में भजन मंडली द्वारा झांकी एवं भजन प्रस्तुति, अतिथियों का स्वागत, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सेवानिवृत्त सामाजिक सदस्यों का सम्मान, सामाजिक प्रतिभाओं का सम्मान, अतिथियों का उद्बोधन तथा मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार वितरण किया जाएगा।

जिला चिकित्सालय में रोशनी का हुआ सी-सेक्शन सिजेरियन प्रसव

मां और नवजात दोनों पूरी तरह स्वस्थ

बैतूल (निप्र)। सेहरा विकासखंड के डोकिया पाढ़र खुर्द निवासी श्रीमती रोशनी पति मुकेश उम्र 23 को 24 जनवरी को प्रसव पीड़ा के चलते जिला चिकित्सालय बैतूल में भर्ती कराया गया था। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि महिला की गर्भावस्था अवधि 39 सप्ताह की थी। भर्ती के दौरान दर्द अत्यधिक होने पर स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ.भावना कवड़कर ने तत्काल जांच की। जांच में सामने आया कि महिला को कॉर्ड प्रोलैप्स और फीटल डिस्ट्रेस की गंभीर स्थिति बन गई थी। इस स्थिति में बच्चे से पहले गर्भनाल बाहर आ जाने के कारण उस पर दबाव पड़ सकता था, जिससे बच्चे को ऑक्सीजन की कमी और मां-बच्चे दोनों के जीवन पर खतरा था। हालात को देखते हुए तत्काल इमरजेंसी सी-सेक्शन का निर्णय लिया गया। 26 जनवरी को स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. भावना कवड़कर और एनेस्थेटिस्ट डॉ. चित्रा पाटिल की टीम ने मात्र 15 मिनट में इमरजेंसी सी-सेक्शन कर प्रसव कराया, जिससे मां और बच्चे दोनों की जान बच सकी। महिला ने 2.6 किलोग्राम वजन की स्वस्थ बेटी को जन्म दिया।

मां और नवजात दोनों पूरी तरह स्वस्थ हैं। श्रीमती रोशनी का यह विवाह के पांच वर्ष बाद पहला प्रसव है। वर्तमान में महिला जिला चिकित्सालय में भर्ती है। सुरक्षित प्रसव के बाद श्रीमती रोशनी के पति श्री मुकेश और परिजनों ने जिला चिकित्सालय बैतूल के डॉक्टरों और चिकित्सा स्टाफ का आभार जताया।

छात्राओं का औद्योगिक भ्रमण, और ट्रांसफार्मर निर्माण प्रक्रिया को समझा

विदिशा (निप्र)। राजमाता विजयराजे सिंधिया शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (अग्रणी) महाविद्यालय, विदिशा के मानक क्लब की छात्राओं को भारतीय मानक ब्यूरो भोपाल द्वारा बुधवार को इंडस्ट्रियल एक्सपोजर विजिट के अंतर्गत गोविंदपुरा, भोपाल स्थित अवध ट्रांसफार्मर फैक्ट्री का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। भ्रमण का उद्देश्य छात्राओं को औद्योगिक प्रक्रियाओं एवं तकनीकी मानकों की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना था।

इस विजिट में 22 छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। फैक्ट्री में इंजीनियर्स श्री नितिन यादव एवं श्री मदन गोपाल लोधी ने छात्राओं को ट्रांसफार्मर निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया, कार्य प्रणाली, विनिर्माण तकनीक, गुणवत्ता नियंत्रण तथा सुरक्षा मानकों की विस्तृत जानकारी दी। छात्राओं ने फैक्ट्री के विभिन्न विभागों का अवलोकन कर औद्योगिक कार्यप्रणाली को नजदीक से समझा तथा अपने प्रश्नों के समाधान प्राप्त किए। भ्रमण के दौरान महाविद्यालय के मानक क्लब मेंटर श्री राम आशीष यादव (सहायक प्राध्यापक, भौतिकी), श्रीमती नीतू दांगी (सहायक प्राध्यापक) एवं कु. अभिलाषा साहू ने छात्राओं का मार्गदर्शन किया और उन्हें औद्योगिक मानकों एवं तकनीकी पहलुओं को समझने में सहयोग प्रदान किया। यह भ्रमण छात्राओं के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ, जिससे उन्हें वास्तविक औद्योगिक वातावरण से जुड़ने और भविष्य की तकनीकी संभावनाओं को समझने का अवसर मिला। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. बी.डी. अहिरवार ने छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

मां ताप्ती जन्मोत्सव पर 20 जुलाई को स्थानीय अवकाश घोषित

बैतूल (निप्र)। मां ताप्ती जन्मोत्सव के अवसर पर जिला प्रशासन ने स्थानीय अवकाश की तिथि में आंशिक संशोधन किया है। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी द्वारा जारी आदेश के अनुसार अब मां ताप्ती जन्मोत्सव पर 21 जुलाई 2026 दिन मंगलवार के स्थान पर 20 जुलाई 2026 दिन सोमवार को स्थानीय अवकाश रहेगा।

बारिश व ओलावृष्टि से प्रभावित गांवों का जनप्रतिनिधियों व प्रशासन ने किया निरीक्षण

विदिशा (निप्र)। जिले के विभिन्न ग्रामों में बारिश और ओलावृष्टि की सूचनाएं प्राप्त होते ही प्रशासन सक्रिय हो गया। विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन, अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर तथा एसडीएम श्री क्षितिज शर्मा सहित अन्य अधिकारियों ने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया। अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों की टीम ने ग्राम लश्करपुर, हारुखेड़ी और खेरुआ में पहुंचकर खेतों, फसलों एवं ग्रामीण क्षेत्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान किसानों से चर्चा कर फसलों को हुए नुकसान की जानकारी ली गई तथा मौके पर मौजूद राजस्व अमले को आवश्यक सर्वे कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। भ्रमण के दौरान अधिकारियों ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि शासन द्वारा निर्धारित प्रावधानों के तहत फसल क्षति का आकलन कर पात्र किसानों को राहत उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही संबंधित विभागों को निर्देशित किया गया कि प्रभावित क्षेत्रों में आवश्यक सहायता एवं व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन ने कहा कि प्राकृतिक आपदा की इस घड़ी में प्रशासन पूरी संवेदनशीलता के साथ किसानों के साथ खड़ा है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि नुकसान का सही आकलन कर शीघ्र प्रतिवेदन तैयार किया जाए, ताकि किसानों को समय पर सहायता मिल सके। प्रशासन ने ग्रामीणों से भी अपील की है कि वे फसल क्षति संबंधी जानकारी पटवारी या राजस्व अधिकारियों को उपलब्ध कराएं, जिससे राहत प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण की जा सके।

कोठा बैराज परियोजना के कार्यो की मासिक समीक्षा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से होगी : मंत्री श्री सिलावट

विदिशा (निप्र)। जलसंसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने आज कोठा बैराज परियोजना के निरीक्षण के दौरान अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि अब परियोजना में संपादित किए जा रहे कार्यों की हर माह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नियमित समीक्षा की जाएगी। उन्होंने कहा कि परियोजना की गति, गुणवत्ता और समयसीमा सुनिश्चित करने के लिए निगरानी व्यवस्था को और अधिक सशक्त बनाया जा रहा है। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि कोठा बैराज परियोजना क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण सिंचाई परियोजना है, जिससे हजारों हेक्टेयर कृषि भूमि को लाभ मिलेगा। इसलिए कार्यों में किसी प्रकार की शिथिलता स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारियों से कहा कि निर्माण कार्यों की वास्तविक प्रगति, तकनीकी गुणवत्ता, वित्तीय व्यय तथा शेष कार्यों की स्थिति की अद्यतन जानकारी प्रत्येक माह प्रस्तुत की जाए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि फील्ड स्तर पर आ रही समस्याओं को लंबित न रखा जाए, बल्कि समय रहते समाधान कर कार्यों को गति दी जाए। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग समीक्षा व्यवस्था से उच्च स्तर पर लगातार मॉनिटरिंग संभव होगी और कार्यों में पारदर्शिता भी बनी रहेगी। मंत्री श्री सिलावट ने दोहराया कि राज्य सरकार सिंचाई परियोजनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। कोठा बैराज परियोजना के पूर्ण होने से क्षेत्र में सिंचित रकबा बढ़ेगा, किसानों को बहु-फसली खेती का लाभ मिलेगा तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्राप्त होगी।

बैंक मित्र संगठन की जिला इकाई नर्मदापुरम का वार्षिक मिलन समारोह संपन्न

नर्मदापुरम (निप्र)। मध्यप्रदेश बैंक मित्र संगठन की जिला इकाई नर्मदापुरम का वार्षिक मिलन समारोह संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक डॉ. सीता शरण शर्मा, सांसद दर्शन सिंह चौधरी, अग्रणी बैंक प्रबंधक आर. डी. बघेला, इटारसी नगरपालिका अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित जिले के सभी बैंक मित्र शामिल हुए। सांसद ने बैंक मित्रों को संगठन मजबूत करने की सलाह दी और समस्याओं को लोकसभा में उठाने का आश्वासन दिया। डॉ. सीता सरन शर्मा ने भी समर्थन का आश्वासन दिया। एलडीएम ने बैंक मित्रों के योगदान की सराहना की। प्रदेश कोषाध्यक्ष शंकर खरवार और वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष प्रमोद दुबे ने बैंक मित्रों की समस्याओं से अतिथियों को अवगत कराया।

कागजों पर रैंकिंग न बढ़ाकर वास्तव में आमजन को सेवाएं दें राजस्व अधिकारी : कलेक्टर

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने आमजन को राजस्व से संबंधित सेवाएं समय सीमा में पूरी जिम्मेदारी के साथ उपलब्ध कराने के जिले के राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिये हैं। उन्होने कहा है कि कागजों में रैंकिंग बढ़ाने के बजाय वास्तव में आम आदमी को राजस्व की सेवाएं दी जाएं। हितग्राहियों के कार्य सुगमता से हों, उन्हें नियमों की पेचिदगियों में न उलझाया जाए। मंगलवार को आयोजित समयावधि अंकित पत्रों की समीक्षा बैठक में कलेक्टर द्वारा सीमांकन से संबंधित प्रस्तुत रिपोर्ट्स में लापरवाही पाये जाने पर नाराजगी व्यक्त की गई। और कहा गया कि समय सीमा में राजस्व से संबंधित सेवाएं नहीं देने वाले तहसीलदारों पर प्रतिदिन के हिसाब से शास्ति अधिरोपित की जाए। उन्होने सीमांकन के मामलों में अनुविभागीय राजस्व अधिकारियों की निगरानी में कमी पर भी आपत्ति जताई। बैठक में कलेक्टर ने नगरीय निकायों द्वारा किराये पर दी गई दुकानों का किराया वसूल नहीं होने की स्थिति पाये जाने पर संबंधित नगर पालिका अधिकारियों को इस तरह की दुकानों का आवंटन निरस्त करने के निर्देश दिये। उन्होने कहा कि आवंटन निरस्त न होने की स्थिति में संबंधित मुख्य नगर पालिका अधिकारी के वेतन से दुकानों के किराये की वसूली की जाए। कलेक्टर ने शिक्षा उपकर की राशि से स्कूल भवनों की मरम्मत कराने के भी निर्देश दिये। उन्होने कहा कि सभी स्कूलों में टॉयलेट की नियमित सफाई भी सुनिश्चित की जाए। टिमरनी के वार्ड नम्बर 8 में स्थित बावड़ी का अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिये गये। साथ ही कहा गया कि जिले में स्थित समस्त बावड़ियों का संरक्षण एवं जीर्णोद्धार किया जाए।

राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन एवं मानव स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

सीहोर (निप्र)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन एवं मानव स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत हेल्थ वर्कस का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में सभी को लू, शीतलहर एवं वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियों एवं इनसे बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस दौरान जलवायु परिवर्तन से होने वाले नकारात्मक प्रभावों के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण के दौरान सीएमएचओ डॉ सुधीर डेहरिया द्वारा वर्कस को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए। प्रशिक्षण में कार्यकर्ताओ को बताया गया जलवायु परिवर्तन के खतरों से प्रतिरक्षा के लिए घर-घर जाकर किस प्रकार नागरिकों को जागरूक किया जा सकता है। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. रूचिरा उईके उपस्थित थीं।

जेल रोड ऑटोमोबाइल शॉप में एक साथ 7 कारों में आग लगी

मालिक बोले-साजिश की आशंका

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जेल रोड स्थित महाकाल ऑटोमोबाइल शॉप में शुक्रवार सुबह आग लग गई। आग इतनी भीषण थी कि वहां खड़ी 7 कारें कुछ ही मिनटों में धुं-धुंकर जल गईं। ये सभी सुधार के लिए आई थी। शॉप मालिक के मुताबिक, करीब 35 लाख रुपए का नुकसान हुआ है। निशातपुरा पुलिस जांच में जुटी है।

ऑटोमोबाइल जेल रोड पर ट्रूबा कॉलेज के पास है। शॉप मालिक सिद्धार्थ मिश्रा ने बताया कि शॉप के अंदर 5 और बाहर 2 कारें खड़ी थी। सुबह साढ़े 5 बजे शॉप में आग लगने की जानकारी मिली। तुरंत मौके पर पहुंचे और फायर कंट्रोल रूम पर जानकारी दी। इसके बाद गांधीनगर, छोला और बैरागढ़ फायर स्टेशन से दमकलें मौके पर पहुंची, लेकिन जब तक कारें पूरी तरह से जल गई थी।जानकारी के अनुसार, शॉप में 7 कारों के अलावा गाड़ियों का सामान भी रखा था। वह भी जल गया। इस वजह से नुकसान ज्यादा हुआ है। सभी कारें कस्टमर की थी।

शॉप मालिक बोले-शॉर्ट सर्किट नहीं, जांच हो

शॉप मालिक सिद्धार्थ ने बताया, शॉप में छह महीने पहले ही इलेक्ट्रिक सिस्टम लगाया था। यह पूरी तरह से सुरक्षित है। इसलिए शॉर्ट सर्किट से आग लगने की आशंका नहीं है। आग की वजह से शॉप में लगे सीसीटीवी कैमरे और डीवीआर भी जल गया।

इस वजह से फुटेज नहीं निकलेंगे, लेकिन आसपास की दुकानों पर सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। इसलिए पुलिस से मांग की है कि फुटेज देखकर जांच करें। आशंका है कि किसी ने आग लगाई है।

संविदा कर्मचारियों का महासम्मेलन में सीएम बोले-

सरकार को संविदा कर्मचारियों की जरूरत जैसे श्रीराम को हनुमान की

- संविदाकर्मियों का सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करना राज्य सरकार का दायित्व
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने संविदाकर्मियों के लिए कीं महत्वपूर्ण घोषणाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि संविदाकर्मियों के श्रम और विश्वास पर ही राज्य सरकार जनकल्याणकारी योजनाओं को धरातल पर उतारने में सफल हो रही है। संविदाकर्मियों की भूमिका हनुमान जी के समान है। आपके श्रम और साझेदारी ने ही शासन-प्रशासन की व्यवस्था बनाई रखी है। संविदाकर्मी अनुबंध से अवश्य आते हैं, किन्तु व्यवस्थाओं के प्रबंधन में विराट भूमिका निभाते हैं। स्वास्थ्य सेवाएं हों या शिक्षा, पंचायत, नगरीय निकाय या तकनीकी सेवाएं मैदानी स्तर पर सर्वे, मॉनीटरिंग और क्रियान्वयन में संविदा भाई-बहन हर जगह व्यवस्था के भरोसेमंद स्तंभ बनकर खड़े हैं। संविदाकर्मियों ने जिस निष्ठा से काम किया है, उसने यह सिद्ध कर दिया कि सेवा पद से बड़ी है। संविदाकर्मी राज्य सरकार का कार्यबल ही नहीं, हमारा आत्मबल भी हैं। भारतीय मजदूर संघ के 'देश के हित में करेंगे काम' के वाक्य को हमारे साथी चरितार्थ कर रहे हैं।

फोटो: प्रवीण वाजपेई

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शुक्रवार को टीटी नगर दशहरा मैदान में भारतीय मजदूर संघ द्वारा आयोजित मध्यप्रदेश संविदा संयुक्त संघर्ष मंच के 'संविदा कर्मचारी-अधिकारी सम्मेलन' को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर तथा भारत माता और श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के कार्यक्रम स्थल आगमन पर पुष्प वर्षा कर और बड़ी माला पहनाकर स्वागत किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि हमारी सरकार संविदा कर्मियों के अधिकारों के लिए सदैव सकारात्मक भाव के साथ खड़ी है। राज्य सरकार द्वारा संविदा कर्मियों के सेवा सुधार, पारिश्रमिक सुधार, कार्य परिस्थिति और भविष्य के सुधारों पर पहले भी सकारात्मक निर्णय लिए गए हैं, भविष्य में भी उनका पूरा ध्यान रखा जाएगा। हमारी सरकार संविदा कर्मियों की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए सभी मुद्दों का समाधान निकालेगी।

संविदा कर्मचारियों के लिए जो भी निर्णय हो सकते हैं, उससे अधिक करने का प्रयास करेंगे। नियम, न्याय और वित्तीय संतुलन के दायरे में रहते हुए संविदाकर्मियों की कठिनाइयों का हल निकाला जाएगा।

संविदाकर्मियों की मांगों पर रखा जायेगा पूरा ध्यान: मुख्यमंत्री

10 वर्ष से अधिक अनुभवी संविदाकर्मियों को नियमित पदों पर संविलियन की अभी तक 50 प्रतिशत पदों के लिए प्रक्रिया जारी है, इस दिशा में आगे और काम किया जाएगा। सामान्य प्रशासन विभाग संविदा नीति-2023 के अंतर्गत सभी कंडिकाओं का केंद्र और राज्य पोषित परियोजनाओं में अक्षरशः क्रियान्वयन किया जाएगा। राज्य शासन के निगम मंडल इसे लागू करेंगे। संविदा नीति-2023 के अंतर्गत सभी विभागों में संविदा कर्मियों के लिए एनपीएस, ग्रेज्युटी, स्वास्थ्य बीमा लाभ, अनुकंपा नियुक्ति के लिए केंद्र पोषित-राज्य पोषित समस्त योजनाओं-परियोजनाओं में एक साथ क्रियान्वयन तथा संविदा कर्मियों के लिए दंड के प्रावधान सीसीए रूल 1965, 1966 को पूर्णतः लागू करने के संबंध में नीतिगत निर्णय कराया जाएगा। विभिन्न विभागों, योजना, परियोजना में पदस्थ संविदा कर्मचारियों की विसंगतिपूर्ण समकक्षता के निर्धारण के लिए अभ्यावेदनों का निराकरण, संविदा के प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए अपर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा समय-सीमा में किया जाएगा। कृषि विभाग की आत्मा योजना, जिला ई-गवर्नेंस सोसायटी, जिला विकलांग पुनर्वास केन्द्रों में संविदा नीति-2023 के तहत समकक्षता का निर्धारण किया जाएगा। सम्मेलन में मुख्यमंत्री डॉ. यादव का श्री कुलदीप सिंह गुर्जर, श्री दिनेश सिंह तोमर, श्री गोविंद श्रीवास्तव, श्री दुर्गेश तिवारी तथा संयुक्त संघर्ष मंच के प्रतिनिधियों ने स्वागत किया। श्री दिनेश तोमर ने कहा कि मध्यप्रदेश संविदा संयुक्त संघर्ष मंच में प्रदेश के 34 विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार कर्मचारी हित में निरंतर कार्य कर रही है। भारतीय मजदूर संघ ने प्रदेश के संविदा कर्मचारियों की मांगों को समझा है।

गणतंत्र दिवस पर बच्चों को कागज पर मिड डे मील परोसने वाले प्रचार्य सस्पेंड, कमिश्नर ने लिया एक्शन

मैहर (नप्र)। मध्यप्रदेश में मैहर जिले के शासकीय हाई स्कूल भटिगवां में गणतंत्र दिवस 26 जनवरी पर बच्चों को थाली की जगह रद्दी कागज पर मिड-डे मील परोसने के शर्मनाक मामले में प्रशासन ने एक्शन लिया है। मामले में घोर लापरवाही बरतने पर रीवा संभाग के कमिश्नर बी.एस. जामोद ने स्कूल के प्रभारी प्राचार्य सुनील कुमार त्रिपाठी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। हैरानी की बात यह है कि प्रशासन ने प्राचार्य को सफाई देने का मौका दिया था, लेकिन उन्होंने नोटिस का जवाब देना भी मुनासिब नहीं समझा है।

नोटिस मिला, पर नहीं दिया जवाब- दरअसल, गणतंत्र दिवस के दिन जिले के हाई स्कूल भटिगवां में मिड डे मील में बच्चों को कागज के पन्नों पर हलुआ पूड़ी परोसा गया था। इसका वीडियो सोशल मीडिया में जमकर वायरल हुआ। घटना के बाद सरकार की किरकिरी हुई। इसके बाद मैहर कलेक्टर ने प्राचार्य के निलंबन का प्रस्ताव कमिश्नर को भेजा था। कमिश्नर कार्यालय ने सुनील त्रिपाठी को 'कारण बताओ नोटिस' जारी किया। दो दिन के भीतर जवाब मांगा। लेकिन निर्धारित समय सीमा बीत जाने के बाद भी प्रभारी प्राचार्य ने कोई जवाब प्रस्तुत नहीं किया। उनकी इस चुप्पी और लापरवाही को देखते हुए कमिश्नर ने निलंबन की कार्रवाई की है।

कमिश्नर ने घटना को बताया निंदनीय

कमिश्नर बी.एस. जामोद ने अपने आदेश में स्पष्ट लिखा है कि एक संस्था प्रमुख के रहते हुए राष्ट्रीय पर्व पर छात्रों के लिए भोजन की उचित व्यवस्था न करना और कागज पर खाना परोसना अत्यंत निंदनीय है। आदेश में कहा गया है कि प्रभारी प्राचार्य सुनील कुमार त्रिपाठी की लापरवाही से विद्यालय में अव्यवस्था निर्मित हुई और शासन-प्रशासन की छवि धूमिल हुई। यह कृत्य पदीय दायित्वों के निर्वहन में घोर लापरवाही और स्वेच्छाचारिता का द्योतक है जो मप्र सिविल सेवा (आचरण) नियम 1965 के नियम 3 के प्रतिकूल होकर गंभीर कदाचरण की श्रेणी में आता है। निलंबन अवधि के दौरान सुनील कुमार त्रिपाठी का मुख्यालय जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, सतना नियत किया गया है। उन्हें निलंबन काल में नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ता देय होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने परम श्रद्धेय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर सादर श्रद्धांजलि दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा एवं एकता के संदेश से मानवता की सेवा का मार्ग दिखाया।

सीएम ने पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की पुण्यतिथि पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की पुण्यतिथि पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की माटी के लाल, स्वतंत्रता सेनानी, कवि, लेखक और पत्रकार श्रद्धेय माखनलाल चतुर्वेदी की कृतियां राष्ट्रसेवा, समाज के नवनिर्माण और लोक कल्याण की प्रेरणा स्रोत हैं। श्रद्धेय चतुर्वेदी ने साहित्य व पत्रकारिता को नई दिशा दी। अपने प्रखर विचारों लिए वे अविस्मरणीय रहेंगे।

● श्रीमद भागवत कथा महोत्सव में छठवें दिन की कथा

माता पिता की सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं - आचार्य शास्त्री

भोपाल। संसार में माता पिता की सेवा बड़ी कोई सेवा नहीं होती है। जिनने भी पूरे मनोयोग से माता पिता का वंदन किया उनकी सेवा की आज्ञा का पालन किया वे सभी अपने जीवन में सुखी जीवन जीते हैं। माता पिता की सेवा करने वाले से काल भी डरता है। शिवाजी नगर स्थित माँ सिद्धेश्वरी दुर्गा मंदिर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के छठवें दिन कथा व्यास आचार्य पंडित अशोक कुमार शास्त्री ने कंस के दुराचार अपने पिता उग्रसेन और बहन देवकी पर अत्याचार के मार्मिक प्रसंग सुनते हुए कहा कि माता पिता भाई बहनों पर अत्याचार करने वाले अंत कंस की तरह ही होता है। भले दुराचारी व्यक्ति कितना ही बुरा सोच ले लेकिन भगवान की भक्ति में रमने वाला ही अंत में सफल होता है।

कथावाचक आचार्य पंडित अशोक शास्त्री ने श्री रुक्मिणी जी और भगवान श्रीकृष्ण के विवाह को विस्तार से समझाते हुए श्री कृष्ण पर मणि का दोष लगने की कथा भी श्रोताओं को बताई। व्यास पीठ से आचार्य श्री शास्त्री ने जीवन में सत्कर्म कर इस लोक और परलोक दोनों को सुधारने का आवाह्न करते हुए कहा कि जितना भी समय मिले भगवत पूजा करने चाहिए। आज की कथा संसद आलोक शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती डोली शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार श्री उमेश त्रिवेदी, श्री अजय बोकिल , भारतीय जनता पार्टी की भोपाल जिला मंत्री नीता शर्मा, मदद फाउंडेशन की संस्थापक सुनंदा पहाड़े, अनुनय संस्था की श्रीमती माही भजनी, एच आर विशेषज्ञ श्रीमती अंजू दीक्षित सुश्री मेघा जी एवं जिझौतिया समाज मध्य प्रदेश के अध्यक्ष दिनेश तिवारी सहित बड़ी संख्या में भक्तों की उपस्थिति ने आयोजन को भक्ति-रस से सराबोर कर दिया। मुख्य आयोजक विनोद तिवारी एवं श्रीमती नीतू तिवारी ने बताया कि भागवत कथा 25 जनवरी से लगातार दोपहर 2 से 5 बजे तक आयोजित की जा रही है। 1 फरवरी को निशुल्क यज्ञोपवीत संस्कार और महाप्रसादी वितरण के साथ श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ महोत्सव का समापन होगा। रविवार एक फरवरी को पूर्णाहुति के साथ ब्राह्मण बटुकों का यज्ञोपवीत संस्कार भी होगा। इस अवसर पर सर्व ब्राह्मण समाज के कई बटुकों का यज्ञोपवीत संस्कार किए जाएंगे।

नगर निगम कमिश्नर की अफसरों दो टूक

राजस्व वसूली में पिछड़े तो जेडओ से आरओ तक का होगा निलंबन

भोपाल (नप्र)। नगर निगम कमिश्नर संस्कृति जैन ने कहा है कि राजस्व वसूली के लिए वार्ड प्रभारी से लेकर जोन अधिकारियों तक जवाबदेही तय की जाएगी। लापरवाही मिलने पर आरओ तक को सस्पेंड किया जाएगा। सभी बड़े बकायदारों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का लक्ष्य तय किया गया है।

निगम के आंकड़ों के अनुसार इस वर्ष जनवरी तक 420 करोड़ की वसूली हुई है, जबकि 10 प्रतिशत वृद्धि के बावजूद पिछले वर्ष इसी अवधि में 450 करोड़ वसूले गए थे। इस वर्ष पहली बार प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में आरओ की नियुक्ति की गई है। कमिश्नर ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन की कोई भी शिकायत बिना स्थल निरीक्षण के बंद नहीं करें। मौके पर जाना अनिवार्य है।

ई-केवाईसी में लापरवाही की तो काटा जाएगा वेतन- ई-केवाईसी कार्य में सुस्ती पर कमिश्नर ने एक जोन अधिकारी और एक वार्ड प्रभारी का 10-10 दिन का वेतन काटने के निर्देश दिए हैं। दोनों को जल्द ही नोटिस जारी किए जाएंगे। बार-बार निर्देशों के बावजूद ई-केवाईसी का काम धीमा है।

शहर के सभी नलकूपों के पानी की होगी जांच

पानी की शिकायतों को ध्यान में रखते हुए नगर निगम ने शहरभर के निजी और सरकारी नलकूपों के पानी की गुणवत्ता जांचने का निर्णय लिया है। कमिश्नर ने सभी वार्ड प्रभारियों को अपने-अपने क्षेत्र में मौजूद नलकूपों की विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिए हैं।

सरकारी हॉस्टल के नाबालिगों की शराब पार्टी का वीडियो

छात्र बोला- वॉर्डन नहीं रहते, हम एंजॉय करते हैं

मऊगंज (नप्र)। मऊगंज में एक सरकारी हॉस्टल के नाबालिग छात्रों का ढाबे पर शराब पीते वीडियो आया है। ये वीडियो 26 जनवरी का बताया जा रहा है। इसके बाद वे हॉस्टल लौटे और परिसर में ही तेज आवाज में डीजे लगाकर लड़कियों के साथ घंटों तक नाचते रहे। वीडियो में एक व्यक्ति और शराब पार्टी करते एक लड़के के बीच बघेली बोली में बातचीत है। इसमें वह लड़का खुद को पिपराही के आदिवासी सीनियर बालक छात्रावास में रहने वाला कक्षा 11वीं का स्टूडेंट बता रहा है। कह रहा है कि वॉर्डन अक्सर छात्रावास में मौजूद नहीं रहते, जिसके कारण वे बाहर जाकर एंजॉय करते हैं। वीडियो में दिख रहा ढाबा, छात्रावास के पास का ही है। उधर, छात्रावास अधीक्षक ने इन आरोपों को एक साजिश बताया है।

शहर छोड़ने पर नहीं बच सकेंगे बकायादार

बिजली के बकायादारों के बैंक खातों पर हो रही डिजिटल निगरानी, 57 हजार है रडार पर

भोपाल (नप्र)। अब बिजली बिल बकाया छोड़कर शहर या राज्य बदल लेने वालों को बचने का कोई रास्ता नहीं बचा है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने पुराने और बड़े बकायादारों पर शिकंजा कसते हुए डिजिटल निगरानी, मुखबिर तंत्र और बैंकिंग समन्वय के जरिए सख्त अभियान शुरू कर दिया है। इस हाईटेक कार्रवाई में अब तक लगभग 57 हजार ऐसे उपभोक्ताओं की पहचान की जा चुकी है, जिन्होंने भोपाल छोड़ दिया है, लेकिन लाखों रुपए का बकाया छोड़ गए हैं। सबसे ज्यादा बकायादार उत्तर और पूर्व संभाग के इलाकों में हैं।

कंपनी ने पहली बार आईटी प्रोफेशनल्स की टीम बनाई

कंपनी ने पहली बार आईटी प्रोफेशनल्स की विशेष टीम नियुक्त की है, जो पुराने कनेक्शन, आधार-पैन लिंक, मोबाइल नंबर, बैंक खातों और भुगतान इतिहास का विश्लेषण कर रही है। डिजिटल रिकॉर्ड से यह पता लगाया जा रहा है कि उपभोक्ता वर्तमान में किस शहर, राज्य और बैंक खाते से जुड़े हैं। मुखबिर तंत्र से यह भी जानकारी जुटाई जा रही है कि कहीं बकायादार किसी अन्य पते पर नया कनेक्शन तो नहीं चला रहे।

बैंक खाता फ्रीज और कानूनी कार्रवाई की तैयारी- अभियान के तहत जिन उपभोक्ताओं पर लंबे समय से भारी बकाया है, उनके खिलाफ खाते फ्रीज कराना, वेतन अटैचमेंट और कानूनी नोटिस जैसे कदम उठाए जा रहे हैं। अधिकारियों के अनुसार, कई मामलों में बकाया राशि ब्याज और पेनल्टी जोड़ने के बाद लाखों रुपये तक पहुंच चुकी है।भोपाल सिटी सर्किल के उत्तर और पूर्व संभाग में बकायादारों की संख्या सबसे अधिक है।

मुंबई शिफ्ट हुई एक बकायादार का खाता सीज- सिटी सर्किल के जनरल मैनेजर प्रदीप सिंह चौहान ने कहा कि अब बिजली बिल की वसूली सिर्फ मीटर तक सीमित नहीं है। डिजिटल ट्रैकिंग और बैंकिंग समन्वय से उपभोक्ता चाहे देश के किसी भी कोने में हों, बकाया वसूला जाएगा। शहर छोड़ देने से जिम्मेदारी खत्म नहीं होती।

बकायादार स्वयं आगे आकर भुगतान करें, अन्यथा सख्त कानूनी कदम उठाए जाएंगे। शहर छोड़कर मुंबई शिफ्ट हुई एक महिला उपभोक्ता का मुंबई बैंक का खाता सीज कर दिया है।